Manuscript 2

<u>Title – Svasti Mantra-Graha Shanti Vidhana-Purusha Suktam-Lakshmi Suktam-Rudra Mantras-Devi Suktam</u>

Manuscript 2 includes,

Number	Title	Page number (Written on top right corner)
1	Svasti Mantras	1
2	Richakam	75
3	Ekachakram	148
4	Graha Ashtaka Brahmanam	166
5	Graha Shanti Vidhanam	174
6	Pashopahara Vidhanam	242
7	Gayathri Brahmanam	256
8	Suktani (including Navagraha, Ratri ,Vayu) and Tarpanam	285
9	Purnahuti Brahmanam	533
10	Purusha Suktam, Lakshmi Suktam, Tarpanam	549
11	Rudra Mantras, Shatadhyaya Mantra, Chamakam	645
12	Dikshaya Mantra Rudra Brahmanam	772
13	Asyavamasya Mantra	788
14	Devi Suktam (Yajurveda), Tarpanam	816
15	Rakshoghna Mantra	858
16	Kushmanda Brahmanam	866







ंमण्यनभः जनभः भाश च यलगाम उडले अप्रांच भी पंजीय उयश्री इं मितः भरू हि

श्र

कलं इशिउडयदरं भारतिस्य कः श्रुण भिरग्रभन्गन्यः भष्ट लगला विते विश्वमण किंग दिविनभ दिशीरुमाण्यू उभे चेक्क्षनभन्नवामुग्रियमप्रेषः भ मभइनाः भवामाधिभगदेवि

एगउमीराकलाइभः अलागग इउठडकलाभित्रिउइउठः शः इ क्शराभगपर राउद्गित्र एभा वंने में क्यू मिक नभयी गीभ दिहक्रुपं विययन: धिर्डसभरड प्रमयवर्षिरंडम छिभुक्त विद्रभद्रभ

9

श्र.

भि.

नीलग्रलस्य ग्राम्थीमा इ जाभित्र निरहर इभू ने रहा है। वर्लाइकाभी गायशैवामकग द्भाकरं मुद्रेक्शलंगुलं मि मह अष्टा नि स पूर्ग ल द से च द डी बल् । चया उवामामिवी हकार

इक्रमिनी गण्यत्री सुराभागा न्द्रयिनिन्भभुद्र।।।।।व्यानिभीद्र गण्यद्रीभक्ट प्रकार भण्डभा। क्रों भिभंदे भिनल अभिक्रं ए भि प्रवाना रामाभाभि विद्याभि विमुप्यभावभिभवाय रिक्रुः

3

취.

हें हैं के इंदे! के मु: क्राय : क्रिक : हे क क्षेत्रपः क्षेत्रहें के इहतः थः उद्दित उबरण्ट हत्ते म्यम् ग्रेभिद्धिये नः भूमेमयाडी॥आर्थे भुशुष्ट्यः भारत मिर्गिय द्वाम अधिमा गरह च तु बिद्र सिर्म एग छ छ त्र भू भू द

डीम लाउं असिर्निभभीउर अश्वितर हगः अभित्रहिति उत्तवणः अ मित्रमा असे उपकार व:सामिक्ट रापिरीभूमें उन भुभूय रायुभ भर्वाभर्भेभभ्भे इवनश्रयम् ि: ग्रेट्सिंभवग^{णे} भुभुयभुभु

म.

8

यन्त्रीतर्भववन्तः विम्द्रीयन नरुभुभुग्रेनुगर्गरम्माग्रेभुभ त एवनबङ्ग्यः मेरात्रीसन् नइ: भारंदभः अधिभश्चन ण भीभेग हुँ ग्वा अभिगड हु^{*} मुग्रिस अभिनेमणिउद्यक्ति।

मिनये भग्याम महामार्थ विव भरतवराधराप्रमञ्जाश्रम भित्र मध्यम् अस्त्र मिन्नि भड्ड उरायभज्ञ उरानाभा चर् रथभित्रश्राणेभभिद्द् बहुमन वभिवास्ट्रेभ चंद्रभूगभिद्राभन्न

श्र.

यम्रिश्चार्यभागम् माम्सुभा ५ वउभागमग्रेभष्ट अभिभभु श्रम्बर्गात्र सक्छ न अस् ।।॥। क्रिक्न इसे भूमिक लड़गउँ भएउ मजद्भिचेउग्रा मिन वित राष्ट्रभानं मज्जं उधार ज

भिक्सेंची मिनिस्प्रें पर में अपसेंग उम्रहण्य गामीय एए गाविने विज्ञाभिष्टमाइ यभाष्ट्रमाथम् । विक्रित्र मध्यमभू बर्ण्य प्रश्विमाभ निउंबन वभा अभन्न समज्ज ह

म

क्षिभाग्रक्षिमितिहर्गित्रा यय भरज्ञान्यक्षया भर्म विमित्रमात्रीगत्रभ विष्ट्रभत्रभ क्रिमङ्गित्रमङ्ग अप्तान कर्यामीय मीठ वर्रमधीयाग्येन भक्त रहरामीमङ्ग्रभण्यभुन्यम

उभाषमंभे ब दश्यभिक्य वश्यीगः नियमिकिक्तिक मिलानिक में वेद येवपत्रक्षमञ्जयः उठकामा वम्डिभाभगाध्रगायञ्च इ क्षानार्भित । उत्तर्वसम् में में भागा ग्रित्र इस्ट्रिक्स व ने सुने भी भी

म.

ग्रियुक्तिम् भाग्रीराभीरा भन्दे नःमज्ञ ठज्ञारमित्रं उनमज् न अक्षान्य ठड्रयम्भ उठ्यग्राउरम ठर्भाभाव वम्बर्भम्य भिक्तल बर्वम भइ हर्षमण्ड्सम हरूभभा

क्रम ठड्डे च्रु येयम ठड्रथम अन्वग्रह्यभाग्रम्बिय हुई ठठ्र प्रवित्र ठठ्र अध्यक्ष प मगर्मामा विकास मार्थ वि चहराभउउंपञ्च इङ्गउरेडे गाउँ चेरनभिक्षणभिक्षियु

स्.

धारीवड्डिड: मज्डकभूमिल मउभूका हिंचेबम चुबर्म भूम जुन्हरू भारमञ्ज्ञीभाभीन्भुभिडाञ्चिकि नः यत्रहरत्याभकक्रिद्धार्थं गयवीरामधीबर्डेड्समे दिव

17

ग्रन्वउभुइडीयः भर्मक्रम्यभिड म अधुरंबी दरीम । असू स्था स्था उन्ननःभञ्जभनमञ् ठठ्ठनः विनःभग देशमाह्य भिन्छ व्हयद्वाराम्यमङ्गिकाः विच्रत्याभाष्ट्रगाउम्प्रेयुक्त

9

वभा उमभुद्धियोगउउीक्रवम गुभाष्यं मुनंदेर्घभड्गः एउँभि नउक्भा उर्छ्याभन्त् एकाम:तिमारितः विशेषास उण्डबभा चिश्वउभनगीउभनिव उसभाभुजी चभूमभुष्टवभूभि

भूमभिभभ्र उस्ति इविद्याभगभ्र उिष्रिण्येभिष्ट्रभ सुनेदेहस्र इप्रकृतिकितिक्व : एभावक भगभुडिद्धभभुक्षार्थः नीविड या उभम्ग्रम्भमण्डाक्षियाच विमाद्धी मेड्डाइस्माम्

利·利

युक्त भाष्ट्राची व्यापित विश्व प्रकार न भा ज्यानः एविबीएमंभिज्ञमङ्कि विभागा यक्षत्रवेषयञ्च गान्य भ्रमस्भद्र देश देशभी महण्यियः इ इन्जिभभीउय " उरी हु इन भी " चनगमनमग्र निहिष्ठ ने भर्गित

गद्भा " रेड्नेक्फ्र्ड्डर्वय इ विञ् उपज्ञांभ चपरीउण्भेजिह्यः प्रकानेय धभगभित्रण वभनभूग्येर्गिकार्ग किरिक में कर के करा भारत हैं ये ये ज्यारंगिडरिनिवर्गामा ज्यारं भाष्ट्रभूपमिक्षणवयभा स्वान्त्रयुर

2

22

विग्रज्ञ स्मिवग्रज्ञ चयानिविग्रज्ञ भयेवयं हमिश्रमितियम्भि गभा नद्भालकालंभभभित्र भानेया अध्यामाय सारा रहे बीउद्दिउष्टिः उत्तरणांभाभभंउभ

चंड्रभूमित्रका एउ विश्वयुग्य उभीमानक्रगउस्थ्यभूषम् डिय भित्रभवभाग्ययभा अधनेय व्यवस्थान अञ्चल विकास मान्य वि इ: अभय " " अभिन्य हैं ब इस्राः अभिनः अभिव स्रवेशः अ

A.

lo

भिनभुक्त चित्र मुनिभः स्थिन ग्रह्मार्थित त्राचित्र उ: धिमण्डाः चंडष्टुकानि मचर्रालयाः चित्रिकाभन वश्चामम्भविम्ने ग्रेक प्रवास भवित ठर्ड हिर्द्धियागा

25

गठइंभम्भाकिद्रस्यः भि रेगर्भ भू कं भभ उठि हु से भरिक दिउंग्रमण्यः मरभित्रमग्रम विज्ञग्यम् उम्माभागाना प्रश्मेयर पिउरेठव विभानेभ एगीरिभज्ञ युनं देः चिरित्रेष्ट्रे

利·

60

रिमिडिर इरिम्भमिडि इर उरभि उभभूरः विच्चित्रमितिःभक्त रूग निर्देश स्टिन्स किल्ला के स्टिन्स के स्ट भा । उडी दुठतूभा । प्राचेच। वस्त्र परमाध्या अवस्त्र स्थ गर्धायात्रैव मधि हेर्नियीय उ

कि मुग्रयभागभहा विहे भभन्भ इषाचिए विद्यासन्भ में बेश है हरू: भन्डयभानभा वण्यव भभवभगविकायभभवभ हुक रापुरविक्तिन समन सम्बंभंडिह रू:भन्उयभानभान भर्यभभ

श्र.

OF

नभित्रमभनभ मुष्येर्पिक भभनभ प्रवंभहें हरू: भन उ य भ अभाव वर्षायाम्भरम्यः भ भनभ ह्याबरले इस्भनभर् वंगहरुष्ट्रःभत्रयस्त्रभाग्रा भाग्रभभनभन्। मेभभनभन्ध

भाभज्ञाभानभद्यवंशहरुकः भ वरवस्रवभ र ।। इक्रलभगरभ मन्त्रिक के के इंग्यभभन्भकृष बक्र की इल्सभानभ विवेश है ठ इर भाव उर्यभावभाव।। गण्य भाग भ विमेभभनभड्ड ष्राग्य विद्याभ

श्र.

ou

भनभग्रवंभद्रेष्ठ्रः भनउपभनभ जगराज्यभभनभग महः भभनभ ह्यावेष्ठे अभनभम् वेभड़े हरू: भवउयस्वभाव गणायुविवर् ठठनेच्याग्य इस्तः॥लगावेठठ नेविशिद्वविक्वम्हरूष्ट्र भ

मक्रउ: ध्रम्भु उ: ठठ: भ्रद: ध्रम क्राउन्ड्रयाठन्यु अभः अभिविष् मगितिः हरु: ध्रम् चल्पनः यमु रुपडिडर्भभः भग्नभन्देशभाद ि: हर्भेष्ठिमग्रीमध्ये १ निणगरितश्चित्रभूगः ठत्रभुण

म.

राभुभूलभुग्यनभद्धनिभः थाउनग्याण्यना ठक्रमग्रमेउ तिञ्चभीयम्द्रि वनगयश्चम् इस्थनः उन्नेभिड्यन्भिन्द्र ह्याण्डें दिन्द्र इन्स्थान उ ठईने का से खाउर सभी वड़ा ठई:

मञ्भूभाउविमद्यालः हर्षेड विश्वक्रमें वस्पित्र हैं कि प्रभूप नेत्रक्रलभा दि: हर्भा पर वर लिभन्द्राण्डं द्वेनेकाँ दे विकार हमानी ।।।।।।। इन्या राज्य भठक्रिक्र एक्ट्र भनें हेन्द्र ग

भु.

विगल्डि ठक्सार्भे । उन्ध उभुजी कड़े बमी कड़ एड़: भुजुर वः हंइनेः अधाभविउग्यभेहंगे कर्णाक्राण्यद्रभभनः वर् विश्वनगण्ये राधानिक है वि वर्षेणम्हिक इसम्मः वर्षा

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यरीक्ज्र बांध्रुक्तिग्द्र मुख् द्रजीभार्यमः हरूनभिष्ठक गडीभूमाभूयाकक्षां अञ्चलक्षा विक्रमी ठक्तमकानभितः ज नीयुरा कर्च्याचार्याक्षेभयभू

यः भिः

उद्धनमान् अनयायनभूम ठेइन: मालक्षानः भक्षाभद्रद्वभनः भडनेभड़ाइना ठड्मक्रड्राभञ्च ठ इस्योनिठ र उपराग्रामा भिइन्दरणस्यान्त्रम् रक्षित्रम्

हरा उरे प्रभार इस्ट क्या विकी वि म्मक्षरा ठरू वर कुरवरणिया मभारकान्य कुरुवास्थ द्वि रु क्रिक्षभवनेष्येण गण्डक्रिक्र भयगिमभुद्रतभा कर्णाविष्ठ विषयभुभगणरा करूरियो सुर्व

利·利·

66

38

धरुशिवभाडी हरूरे चारीवरणभ ग्रउभारक्षीचभारवगत्रक्रभा ठ इ.सद्गर्भभक्षित् । ठर्मभ ठर्डा अधला : ठड्ड र्रा प्रथा अभाभादिक इभ्य यो निल्डा गर क्रया ठक्रन्य जनभनेन अप्र रुठक्र

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नक्षाइडकभागागठक्षाचिष्ठः भूभभभूनी उँच हकु राष्ट्रिय अर्ग उरिवर भिनः ॥०॥०॥ ठरू न ज भः भे दर्भ म उचिचिवच्याभनवस्य लिएउरे।। हरू: भएए विहरूक: भगम्भह इण्नभव्हर्वाङ्गण्डभः हरूःभव

म् भ

कार्लिन काराभाउय ठक्र उभयः पि उरेगठस्यः ठकुरुउदेशियस् क्रन्बेठक्रगाज्ञचःभ्राभभुक्रभभः हरू चथः समये विसर् उभारत् श्चिमयक्तविर्यम्याः हरूगाः

डी प्रविधइयः ठरू लिभाभानिश क्र विश्व में करूर मुस्य में किर्या संधिनः ठरूनेम् इनिभिनिका निविग्रहरू इमा इहुए: भड़ नहाम भवद्रानण्डम्भयङ्ग यराज्यराश्वाराष्ट्रं उत्तराः।।

भ्र

90

अङ्ग्राक्षः भूरिमितिमञ्जभम् ठ इस्म इडिथर्ममम उद्यम ॥॥॥इ इंथनिभभूमाभिक्ठं ठ इंडमभम्य याभाइमा उत्रेभिद्वेरम्भाभाष उपिति भिर्मः थिवी उउटः॥ उरिमीउठरूभी ।।।।। चयक्नमी

- (उठरूओं " किंद्रुहरू सम्भूभ रा गणलेस्डइड इडडमीस्राया अगेविज्यविधामुडः ॥०॥ वनी रामकेमू ली बनण रामाची राष्ट्र बण्धिष्टिभागित्रे भन्ने भ्रे हैं उसका प्रवीक गला चिठिने सी वीरवभाभ

ee

多。

y.

दब्बराणचेभद्रीः मुख्रनभर्भम जुआ । इट्रमुपीभ्यक्रच्यन् नी भुभूग चग्रमभभी उग्र । भड़ी र्छः थिवीमन्डभंगश्चेभिभिक्त उल्पिथाउँ विगिष्ठः ल उपरक्त उवस्येविभूगीठित्रेगीउितःगर

वश्यक्षयम । भूताथ बीवठवार कारिवें मनी यञ्च नमुद्रभप्षः ~ मंडे में या चर्य इं ने यंडे विश्व निमंद्र मधिष्ट आभुण भिरुः ल ए में वि भ्रविमद्भ इंग्लिम्ग्रियम्भा अश क्रभुभेष्युरे ल ही लिपमार्थिय

\$.

ee

अविश्वनेभाष्ट्राम्यः ग्यानां ल विश्वक्रम्लिथमुउय "डेइउपनिभक्ति उर्देश्य प्रमाण " उडिले: भारतभारतभागम् विभाग यः विशेषमञ्जारत्या । उतिभा भविभाग्रें रागारं भभाभागा जिल

स्ट्रमंभममा ॥ । । । । १९ उत्र ह इशा व्यवक्तमात्रत्रभा गलाके गण्यहँ तभः ग्वेड्ड्र अध्यक्षि चरिएंठने ग्रेंच्युगीभिद्यियेचः

多主

भूमेमयाडा । ।। धारानाभाष्यभे।। केंद्रमुनभः जिथ्द मुन्भे न द्रभून

भेक्त्रभूतभः खड्नभः जयमार् नंभ नज्ञाष्ट्रमः स्वाउत्थः उ भम्य व्यउत्भः भड्डमभग्रद्रभ रुउण्यन्भेरूनिष्ठभण्यन्भे॥ कुउण्यन्भेकविश्च उनभन्न सुच नभः में इण्यन्भे भन्भन्भे राम

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नभ तुरुलन्भः माज्यनभः उ प्रमाः । एंड्रेड्ड्डिविश्र मद्भर उभरकाभग्रभ वस्त्र द नंभगण ही रिष्ठ्याग डी विषद्धि नभः थविष्ठ उति में छच द्व दिण नभेनद्विचा श्रिचधद्वर नभः

94

विज्ञभारः भेर्देवभयुद्धः नभर्षे लडान्यान्त्रभद्गान्यक्ष भ्रमद्भवन्यः : भ्रम्पित्रम्म ज्ञनउविमुं उभाषि विमुं उत्स्र उउ विश्वउभाग भभुक्षण्यभाग लंडे इ राथ विवील नय में विवेश

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

51

लब्रह्म स्थार यउभ पिलिश्चेग्रहेशः भगित्र रेर्यरं विकामिक मन्मेन हैं

K. 4.

बह्य इलन जी उन्न गयः भग्र उन्य गः क्रिथनः कल्पउपभी ।। ।।। ५ धर ज्ञितिक्रमः भववग्रद्यमः ॥॥ छेड चंड्र जो उपयय प्रेप एवन स्थित राह्यार सम्भ क्रमण च्याययभाभागवरा

वडीरनभीवा चयकाः भवस्तुनंत्रम उभाषमंभः परिवेदनुभुद्धिव लज्यमधाने भज्ञ भुग्र नहीद लभार में अस राष्ट्रियलभार मध्य भ प्रमुस्भविष्ट्रभविष्ट्रि नेग्रहं प्रभुद्रभृष्टा भग्रहीध

99

42°

यश्रिम्द्रम्यः भ्रम्पातः भ्रम भगितिभाग्नित्रमण्यादिगम्भाग्निभ गगिविष्ठ । जननित्रं मी दिनु ध थरिश्र उभि भर्गिभेथरिभ्रभुग्ठ इए भभाक्रें उडिभागियडो यस्तरि इउवलेकिंग्ड भडभूबल्ला विवाध

महभ चरिष्ठा अभी मुख्य भव ह नंधभाउग्रिय्या । भाउभाश्रा इभूम गइष्ट भ्रष्ट स्था देश भक्ताभा प्रदेशभाभाभाउम्ह मित्रवयः भाभा ग्रेंबेई अध्री भाग विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास समाज्ञ व

₹·

93

इभ्रें भिरुम्भभद्युण्यभ चयक्तवः भूरण्यां भरम्भिगय स्विलग्रहमाठवर्तीः लगालगल किंभग्भ का उविद्वभागा भी बाली क्षिमभक्तम भग्जानित्रम् मिट्टाभिष्ठिं भिविष्ठणयः

पर्ने मार्थिक उसिमक्र भाषित्र यः भारतम्हमः भारतम्याकः उ: भेक इंडेइ भेग्य बहुउनकः यश्रुष्टाराणिबीराभां " भ भाग्यभागवरीक्रिक्रभवभागः ५क्राग्नभुभाउयः ५क्र्युक्रकार।

99

\$.

भेगनण्डनभूमभूभभि विभ्रविव ब्रेडवंगमभूग्येरग्रंभित्री। जेश्रवसङ्गाभ्यस्यः गा गरंबर लश्चारित्रभाभागारा नण्यभ्रगलभ्रमित्परणमंभः यभाष्ट्राभाषातिः प्रत्येमभ

CC-0_Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रुपर्रिडिहसुरुराभुभा भेभानभुगा एः येरेवाष्ट्री प्रभीव प्रवश्वविद्विष्वव नःभनःभिष्ठिष्ठाःभन्मभेष्रक

4.

भेभाष्ट्रभूते यात्रवः भेभाष्ट्रः भूग्लेश भुवः भेषावः ध्रिषाभुवभाषिष्ट्रम व्निवः अर्वे मुस्मिध्य सिध्य अनेभभ न मृश्वाधुविभाउध्वाभन श्चयुर्व भेरभा मुभ्या मुय्तीकी 'र्डितेम्म् माउत्मार्थित देवज्ञतेम्

मंग्राचित्र (ग्राज्ञालका भाभाग । यस्मिभा भाम हैवः भा दा भरग्रभासम्बद्धा उग्रथंभूग्लस्ट्रिय्युक्तं विश्व भारताराभाभाग्रे उभाभाग्रे । ग्रमंभूलम्हरः भुरुष

季。

20

उपरमार्थेतः मान्यात्रभाषा म्बार्यः भूग्मभ्रष्ट्यं भुद्धा यमभद्भद्गि । इत्यान्य भेभन वनीउभवने यमित्यम भुक्ताउभ थ्वः लाउम्यागमग्रम्भ भिर्तु लगरे भियरं भनित्र सु

भ्राज्यम् उद्देश्यदेश्यद्ये भारभ स्भिनगण्य इत्याद्ये भेष बीर्लेश्चर्थभा ग्रेड्राश्य जालाइम्हाराष्ट्रभार ल्हारश्रभ वग्रभाश्य गरुवररायसभावित्रवर्षे

ee

राउवेलीरान्धाण्यम्भे प्रवाच युष्त्र सुरा सुरा सुरा भाग यु धायधानधुमा इक्षयधार् क्तरप्रमायभाष्यभाष्यभाग्य भे चित्रायभागवनभाविता यक्र भश्यभायक्षा उस्भा

यक्षचयभाग्रामाणिक विषय भुभुग्यभाय्यायभावभूभा भेभ जयभाग्नामणी हिरायुक्र सञ्च यभाग्रभाग्रभाग्रभंगे कथण्य चयुम् डी उण्चिक्ति गयुम् डी शुरभाभ यक्षायुषान्युक्षे उभभग

4,

33

चयुम्बन्नम्डिविस्मान्यम् भंभिमार्गि भाउताभा मुक्षेत्रमञ् यञ्चित्रकार्ग्यमित्र वाभ जी। विविद्वः भामभेड भामग्राज्य लीव भिड्म्बरलये: प्राचित्रप्र लग्राजनमीव ग्रह्मा ।

67

उभागाम हिम्बर्डिशास्त्र स्थानार्थे प्रकार्यसम्भागित्र इत्याद ला सेतः था। इत्राह्म इत्राह्म व्यवस्य किलाइम्यभन्द्राम्बलाभनः भागमा किस्डिश वस्तान मुष्मग्रमन्याम् दलस्यः भाषा

₹.

3E

उन्बन्द्राहः भाषा ग्राम्य "त्रीभज्ञावमणन्यांमित्रसंग्री । इउनेक इउट: भेरत चेरक उप विधमभूभन्द्राम्बभूमन्ग्रम् मनःभाजानेश जिल्ला देश भदरमेरिभमदन्येभगद्भम्

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri .

ग्रां रेक्य प्रथम प्रमान रेक्य था द यभागमार्काण्डमार्के अश्वा महःभन्नाइड्रामेक्टः भ्राक्षि र बन्ध हो भाग इंड ग्री दा हो भा द भेभागपातिभग्रतभुगाउँ । की ज्ञान रमः भक्तकानीयित्रणणा

4.

34

70

जिथितिन्यये उत्भाग उत्सम्य उन भद्ररणयमज्ञ चर्चन स्वरंभ रभ उञ्चल एउड्ड : उपडी वि बभाउरः उभागरहभाभवेयश्र

भारकाकारमञ्जूष " अध्यवत्रीः ध्रभर्गः दिलनीगढला पर नशु एकभिल्डिरी बीनय:भग्यिश्वव:" गर्का देश हैं प्रतिकार के प्रत रंग्रीभचड्र उपराज्य भिद्ध येमियभा ० कडाल्या वस्त्र वस्त्र

\$ 20

भभिभ्र हे मेरकः भ्रह्मुग्गाः भ्र यभागामिनं गढिः रसभवराज उत्भागमानि प्रमानिक्षी। दियाभयवयवं यभाववंडि॥ उड़चयं वयड़च अभुं मण्चे मका नाभिविद्यांभित्रभंभी उभेपित्र

भंदासुउभं तरहाभं विश्वः इभिशुः इउभभिद्रविग्न गंद्रभुभक्ति इश्र रागक्षाप्रक्राज्य वभवभूष्ण्या जगाय जगाय जगा क्षित्रम् इरुभुग्यभय उर्मुहन्स् यभारतम् यार्ष्यानुष्य । इस्

3.

गउनखरभारित्य विच्रहार्य वैयानगण्यय । जनमुहनम्रक्रम क्षित्रभ कित्रभाग्रथाय उत्तम्भर्भ उभभरति दियम् वितरमा म्बर्धिय स्थर्भगम् छि । इम्डम

75

भी "उँदेशभाग्रहभिष्ट्रिशिया भाभ भियम्बाराम्भनायम् म्राव्य क्षां विवाहभाष्ट्र विवाहित। द्वारित क्रम्याक्षेत्रण स्थाना वरमक्भागला जन्मद्रवयान भूम्याम्धरीहः भम्हेम्युन्ये॥

0.

N.

33

भागम्भू प्रवेष उत्तरिया मन्डी उड्डिड्यु श्रिष्ट्र यक्ष भगग य । उभिष्ठे प्रणीयरह दिश्यद्धिः उस्माम्या वित्रवर

इस्तान : श्रीमण्य द्वारा क्णिधिबीस्बाभयच्यात्रम् स्व विम्थिरं एग इंदेग र दिमा अ। भि । भदी हैं : थे विवीय वर्भ युक्षिभिम्य उभी विषयुंचेह मिभाठे: " ठिकुराधवरानाणि

ए में

99

इश्विर्धार्थिश्विश्व अया द्वाप्त्र भ्र वर्राउभक्ताकानिभादिनियाला के निधभी मगा ल्या उगल्म इरभा कविभूउभक्षवीराभा नण्डें (रूयउँ विष्ठ नग्रेभद्रभस्भ लब्रिड्र अत्र । ज्ञानाग

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

युविक भाग स्टूडिन कि विकास विभिन्न चरीकभिन्नभिन्न भूत भग्रःभम् विनिद्यभग्रे । व मुभवंगयभएं दिश्चग्रम्भित नीभा मीयज्ञवीभभक्षयमीयाय बीद्भारमा । कंभ्राभारंदिर

क्रंप्र

एं भूकरं भार्य ज्ञान जी इभाउद्यं जी भा भन्नित्रंभन्नवरुग्नित्भन्नव म्यभा । विश्वक्र पविश्वम् विश्व। लित्रियमग्रः उद्याध्यायाः मुप्रायभभभग " इक्षानांभम रीइरीन कि विभूग करिये भग

लभा भ्रेगाञ्च श्रीगिरिव गरंभभः भविष्ठभडिउँ हना । भडिविश्वस्व उ वीदलकांगन्ठीभः जुर्मनेशित्रप्तः य भुगम् । भूषित्र भर्णम् विकिय । न्भितिष्ठ । येन ई चर्ये च भ्रया धर्मार्थयवनभरित्र येम्ब्रेश्वर्ग्डवन

क्रंच

10

विवेग उभे न रूप ने भे न भू ते रा: "निव भीकृष्रेरितंष्ठस्थात्रभादिणमाह अर्गेगङ्गाउभभा ल एधंड ज्ञारायाच भू भागवस्तु देवेवस्विउभुग्वयं उन्ने उभागकम् । चग्रचगादिनीउग्ग लंनेडहराउचिनिंदेउग्भिद्देनिहम त

मंत्रेयिशिव चंभेठव उपीउयमे द्याहम्बन्तः " बद्धारी मित्र इन्विद्देश अप्रविद्देश अप्रविद्धे गहिमग्रयभुग्यभुग्धु हल्डिभिर् भुग्राभिष्ठाः " वधर्विष्ठु चभव डाने भिउम्र इपश्चिमिथिविष्ठ हुआ

ए भे

वन उराभमुउँचिभिनेभ ययभाष्य भिविधामण्यः ललगाउउःक्लमभू कभीरिध व व द उ भे वी र : वी उंद इ ह यांच्रियां वच मारी हिरिक्यांभग जा भ नियाधिक स्थार ग्राम्य

85

नीरंम् विद्वारिष्ट्रमा चर्यीरेकभी वि मगड्डभक्त जिल्ला जिल्ला जिल्ला विभा । यभग्रणायधिवीयभेडा भुउभद्भा यभ्यभचभिउस् यह णक्याकिउभा " यज्ञें बीति चिडि गरात्रामस्त्रीराभुविभिद्यभा उत्र

E7

छं भे

विश्वभुग्यंभंत्रभष्ट्याविभि उः भि उभ विभग्न : ५ वश्वरभवन्य भग्मभभ प्रवर्णभविभय्भेम्बाय नम्बर्गभा पिडब्र उउव रगमे चिर्व ये सुभाग वायवाया दिमन उससे भाग प्राप्तु उः उधार्यादम्गीद्यमा भेभग्रज्ञभेभ

चचउभ मंभेभी गेरु इण्टे इण डि भागतंतिउद्येभह्यंभिद्रभम्त्रयम ग्रमउसे । रास्पिरास्यभूभदि। भागने नंभवयं वस्व एय ज्ञा इतिभाभ क्रभाइभक्रभायभेह्यभास्र वेस् विकारण उज्जीरायवस्य एयभड़ा

±±

चुम्भावयं गनानं गनभर गोभम्ये च च्यक्रीयश्चे दिरश्चमच्यक्रि भहुआ इडाइट्टियाधिरीभंगेरणग रभुगमञ्जिष्ठ विभव्य उभूरुपितर् रभाधीलाई भन्दा । येन्द्र प

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

89

न्यम्भ याग्भणीम् यवनभाडिम् चन्द्रिक्षण्डवन् विवस उस्ति र यनभन्धर्मः । मुक्लक्षन्युष भभ्राश्राक्षश्रीउश्रुतेमवन्त्रवः भ वयुर्गभन्धि विश्व अस्य विश्व भउम्रविष्: । वधरुविभ्रवाशवा

क्र

FU

ठाँभी अस द्वासभी मिथि विभुद्र भा बन्दरभ्रमुउमेगिरेम प्रयथ उभिष्ठिभमातः ॥ नभेत्रभुभर् हियंकमधिष्ठाभि येपनिक यितिविउद्यार्टनभः " येथ्वा या द्रणनाय का वनभा जी न न य व ए भे

मरउँउद्दर्भः । येवार्चरम निर्विचिका अद्यासिष्ठ चित्रभू में भिमित्रिउँ हिभग्रहेरुभः गर्ना गण्यवनिष्क्रयभणवनगडीक्रभ भएकत्रम यतस्थानक्रमहाका ि गर्ना भाग भारती सम्बंध ।।।।।।

DE RICH

विचित्रिक्ष वसुमं उरिव्यालस् उभभी चड्डं मृख्य हिं पुरुष्ठा कि क्षा । बठ्यं नरस्भावत्रभाने। विवसयनभाउमार्म दिरश्येन अविउग्यवन्य वियाधिक वनानि प्रम ना ल प्रकार मध्य मा भार में नाम भार

गीरंभभाउभ्गिभाभा भनम्म हिन्दु वंवियंभर उत्रहामा विवीजिय स्त । याउँ गाभानि मिवियाध विद्य ग्रंथवउष्ट्रं पणीष्ट्रं उठित्रशिक्ष भगगडिङाज्याभैभभुदिष्ट्रगारु य । उपुरस्य विम्न जुभारेभाष

र में

to

94

इंड्रमा मीय्यमंड ४३ र भर्ग प्रकारिक कज्ञहारिक विष्टा प्रयम चथराउरिभिल्चिउ । वसर्विध बाभावकाशिव में द्वारा मिश्रिक इंडर्भ वन उर्भेष्ठ्येगी चर्चभाग्राम् । भागमा

संभाषवायमभाग गुरुविभिष्ठे चार उभूमिश्रमा उभारक्रभयभागि ध्य न राजाभित्र अविज्ञाभित्रेड बद्वभद्वस्याभस्भा क्रयाभस् इन्द्राक्रजभित्रभाष्ट्रगारि मुः । राजभाविष्यम् वृत्ति

S'A

अविकारित अधारित विकार यहाँ वभन्रभूराउउमभाभन्तिणज्ञित किर्भा नभाभू जीः प्रवर्णे उद्योग रभुरीभग्राज्यभन् भरभुरीभुठ्य चक्रयच भरभुजी ग्राचिम का दक्ष जा । ।।। वज्दित मुंद्रिय देश वक्ष एक भित्र है।

भा उउनभद्यभिद्व यंश्विभानं सन्भ ज्ञ उम् स्रित्य थिय स्पर्ये स्र उम्म व ल भूरभू उन्देशका उपनि स्थान भारतम्ब यहाभसुक्षकभस्त वस वयंशुम्भप्रययेगीणभा भूमंब्रे प्रवीर िस्य चंपेठव उभीउयमंच राठभूक

क्रिक

64

उनः । गणनाम्गाभपिद्वामद क्विद्वीराभ्राभम्बस्यभां हु सूरा ध्नम्भक्तम् । स्वतः मार्थे वर्षः मार्थे वर्षः दिभीमभागनेभा । क्यनिष्ठ पत व ५ श्रीभवार या भाषाक्या मित्रिष्ट याखाउ । संवाग्यनभग्रभुगर् द

उन्धर्यांनेत्रम् : चिम्द्रण्डन विद्राभिज दिर एउ भगवभवभव प्र भा । केउद्वाराजकउठ्यम्भदाच्य मभभभषित्रस्यषः । इन्ह्य ज्ञिशीयण्ड अभिभिवंड हर्गभेने इ इण्या अभिष्ठहुँभभंयहुउष

40

C.

à.

धार्ष्य भागम्भीवभा । प्रका ज्ञिक्याधिवीय्याभाः भवउ म स्वेतिष्वभिग्नं गार्थिंगर्गिष्ठ अभि गानगानिति है सि है गणभाभाभ स्थित के स्थापन के स भविबद्धि दरभाभादिशंश्री में

यभरुपदिमीयभागः । नगभः णनभागति । भूरभगडेनल भिम्रभारः उठेरक्रेंगियः भंगमभर प्रमुश्रामें स्वारमा ।।।।। पभीवदाराष्ट्रचा विद्यारा भ क्षित्रमन् भाषाभूमकारियनः "

40

गंभेषाउभाउर गीरुभा भारति। चनभीवेहरानः यहभादभूदिउ निधार्म में इविकास मार्थित स र । राष्ट्रपड्रभुउरालनारिगय भूगेनेगिडिरच्चिडिशिकी चार्याभूम एशम भित्रम् इर्डिनेक्षम् ।

राभुषाउमग्यामभूमाउभाषीभा दिगचयागाउभग्र धरिक्रभाग्र यग्रात्रेययभाउभ्रिक्षियात्रः किंगका भड़े भड़का भन्न जी हर का लि अन्यानगरेग प्रद्वा भी हरू भन्न मुश्चिरभारणपण उवीरंगउणय

ev

20

भृद्येभा । याभ्राक्थभउयः भूपम भेयाहिम्याभ्यमुम्बर्भाने उपि उ नहभगनं अपगण्यभदभूभेषे अ ठग्राण । भिनीबर्णनथावष्ट्रक यग्रियानभाभभुभाष्यभुद्रह्भा करं भ्रम्क्रीमिक्रीकृतः । याभ्र

105

गद्भगद्भारतः भ्रमभग्नक भ्रम्भाउद्ये विमभ्रेद्रिं भिनी गले इंदेउन ल यगुरुद्धि जीवानी यागक्यभ गर्येश देशील भारत हे ये प्रमण्डी अस्य । एकं जीभास मार्थिस स्रा वीभडभम्बओं चन्ह्रभुष्यभगष्ट्रवः॥

यं भे

थ3

106 क्लाभाभाग्रेपिति विस्थानित्र उउर : " इत्भद्भ छ उ विक्र र प्रभाषि ह द्धभड्यां इंडियीभ यां रेम माउ म्य लेशिक्ष छेड्डिइमिविष्विम्परियम " यथ्या अस्ति । दिवस्रालेष्ड सभाववाराभदय्ड

107

गर्मधिकि इध्याण उ ० जाउ यण उत्रावभीभाषिकणगउभाषिभ रः अहरवारा । भूर्भडीरभय उप्रयदणग्रमण उभ्रभन्थभा तः भवद्गराजिञ्चात्वभाषिभ विमित्रभागार ।।।। प्रमान

YE

न्भागामंड्रम्बर्धिक उभवंडेगराहरभगभास्यमित रः एड्रेलयूर्डभभग्भिते वं बद्भडेंनियपंभेले मुरुवभा " बादभाउचित्रयमदेचदारुभित क्रिक्रिम्भू उम्म यमीमयस

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वभर्भस्भरमाभाभर्विल इंडिमिइभा लग्डस्डस्भ **स्यामिमहास्त्रभं** अपव एभः चपश्चिषाभक्त्रभुजीउव दभउदर्शिष्ट्रभद्धेः । यभ मणग्रथिवीयभञ्च भुड्

यं.

थथ

भा यभायभवभउभ यद्गणङ्ग युरिका उभाग यस्य प्रयम् त्रमभाष्ट्रयमस्यः यभेष्ठे विद्य इक्यान्यक्षित्रनं ।। कर्कितः भउउपन्नीरक श्रुवा गण्यमित्र प्रसंभा

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भवभागभविद्यः । भाक्त्रे नंत्रे उने भयश्री क्या विक्या विकास भंगियोभडे यञ्च प्रयञ्च भन्गय रूभिउ उग्राभाव महाभू भी रिष् " नशुभर्ते ग्रेथिए गमयनीरभुउवमन्भीकः श्र

E A

भ्रायति विभिन्नभाकभागरि भ्रवी गण्डकाभउँदवि: "उधावयेर इयुक्षभाग्नभगुद्धविभवमिनिक गाभड़े वर्षकार् बंदर मध्य शुभित्र यभभुष्यानीभड । इ बउड्केबम्भन्मिहरवयद्धिती

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भददिक्तिः मयनभाष्ट्रभभगभ मंडरप्यच्चेंग्भिमिमुम्बरुउ वि उद्यान मध्यामभभाग वर्णभित्र भष्टभम्षाय महावयभागिष्ठ हुउ उक्रनगममित्रयश्चम ल एभ अवरणम्यीद्वभञ्गमभञ्ग्यर

49

भावभूगम् " उज्ञायाभित्रक्षण बद्यभान्भ्यामाभुयमभानेद्रविहिः बहुकुभावेबन लड्ड एन संभभा नचपः भूभेषीः भदाशहउपभू रुभर्रः छेड्रःलेक्ष्यनभः छेड्रवः लिक्यनभः भिभुः लिक्यनभः

एक इवः भूते रूपनभः ० चित्र जामियद्व इद्धिः थिष्टा वयभा। न्यांग्रांभिक्षित्रित ल उठाकाशि मुगी बहर का प्रकार मध्य ययह प्रकारागायायाय रुक्णभुभाउयक्रवरां । चयभि

ひ、分・

43

द्रभूषभ गारिण इहिंद्र उपारि म्रे नग्रीमीतः यभभवाने हर्पर विननगुवन्ध्री इविङ्गितिम् । मय उपित्र शियो ये उर्देशीय षः उठ्ठनन्य चरेद उउँ ने वचया रियमा समग्रहण्या । उपभ

यं उच्चां भइंद मभग्ये चरच्या भारत्य । बज्जार्थ भारत्य । इहे बह्यः भयभाइभूमाभा भि भा । यम् :क्याग्रम्भीगिश्र नम्भाममाम्य जिप्पान्य भाषा इयदवडमनम्बर्धामुड नथा

रुं में

इन्छेर्म मभाग्रम । विम्रः यनग्राभग्रमः लग्नेहलं गिरि नभारि भारि भिरंप्रि इन्ध्ययाभिमम सिमाने च्रि बुरिडिम्मिन्स निर्मिन भनि। धःभग्रन्जभा । भुड्यद्रायभ

दामा लिदिवचुउःभुद्रिया गनभामभननेवीम्यानीदभा ल गडउड्ड मभड्ड उन्ने हण्डु विभाष्य छुगिश्च उन् उन् इडि विविधिविधीमित्रित । यम्ब तिरुक्रामस् अविद्यास्कृ

2.

यमभ नभू भूम भारत ने क्रमभ उ म्बाभयक्षिभस्य मयुभी।। ।।। । क्र रूपाउन्ग्वयंदिउन्वल्या अभिगाभर्मभिषयर भरिभार रीम्म न महभूपाउभयभाउभित इज्ञीक्रयम्भाभव्या भव्य

उद्य उभिवभुभउभाउभु उपे उपे भाक्तिवा । अवभागिता चंधभग्भा ने ठबर जिस्मा इस्राउभयभाव मुस्राधित वर् उद्गाभ " इउइउषगाउभ्रिव चुभाइउन्मार्गपाउउड्डव उस्

5(A)

ओड्सरिकार्थभगरगष्ट्र भत्रभद्ध अभिम्भो । उर्वीरमभी विवः इल्ले । के इस्पर्शिय मउनः उपम्याधिवी गिष उछिन्वीभिज्ञेभूषुउभेन्भः भ चिट्रविष्यामण्डिम भिष्ट्रभा

द्रिभावनिकः द्वाभाष्ट इङ्मे भित्रभभे भित्रभाष्ट्रिए यारवेरमाभेड्डम ल येविसम क्र नडिसंडे भेगि विसंडे हु अपड एउँ उर्गणिविवीस्न्य ग्रव

छ मे

50

कः । यभूज्ञ भूगाउभ्र उन्पर्य 124 अवउपमंक्यितिभन् यभूवर्भ च्याउविषेष्यं भग्य उभव मह द्वीभि निर्मिश्च भागभिन्त निउन हरू भगी दिभगी भग में उ भ्या चन्नुभयो नवभयो नकु इभी

भद्रशुक्तराधरमञ्ज्ञा । विद्रं अपरंग्यभेग्रह उभयंगार्ग म अद्यं भाभ उभवमा एवं विभिन भगभुजीयस्य इत्य इभगभुजीभ यग्रायभार्त्रभगभुडीभुक्रेड चक

र्छ्न.

यन्भरभुडीमास्य पराद्याः इ भाश्वरिक्तिनिविधिभागवृतिः ग्रमभन्नग्रम द्रमभन्भाष्ट वस्यागर्श्वराष्ट्राच्या भावकानः भगभुजीबार्लिहिचार त्रीवडीयक्षेत्रम्थियम्बन्ध । ममय

डीअरा उन्में गड़ जी अभड़ न भाय द्धाराभाभा । भंदेवरूभाभ डी भूमउयिक उन्गियं विद्या विगण्डि । एउवसम्भन्नाभ भभभगाउयंडे निम जाउँ निमः भनःभ्रमगडिन्न गिविमु नर्वे

म्द्र

9±

विभव्ने इशिउएडिशि: " हथुक्य रुभड्रभगित्रं येथभाभा उचा नक्शिवनज्ञां हाई मणीयभाभ उभा ल चक्रमस्भिदिते चित्रभ यामिकलियाचगाभगस् उप भाइतिम्योतिम्भयः मभ्यभ

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विवश्चित्रः । भूष्ट्राधिराज विभार्मी विज्ञायक भारत यका ज उगम्बद्धाः अपितम् ग्राह्य किर्यस्त्र विष्टु एक स्थाप्त भाग भन्भा " महमहानेभे नेभेर ड भविभागविभागक्षेत्र मार्थित

ग्रम

अभिमंदिर कि कि मिग्र में नभः छेड्डबः भः उद्वि । नर्छे ठते प्रमुगीभिद्र गिर्ये ये तः भूमेम याज ३ उडिम्रेथरभंभमंभमाथश्च विभागः क्रिवीवमकाग्उउभा । उद्यिभंभिवभध्वरणारंभभा।

भित्र उविष्ठ दहरभेभमभा । क सुर्यं बद्ध के ले यह ग्रें विस् प्रकार क विविद्यतिकाः उत्रभाषां उत्रभा चंडे भड़म्यूष्ट्रां अथग्र भारीयः । चंडडः इवें शभावि र्गालभाविष्य स्वश्रुक्तभविष्

म् भी

प्रेमविभिनाक छं भन्ने दश्हं च मण भद्रगलभउम्बन्भगग मि च भाश्रह नकु विश्वकम् र रहेर्डा भूर्थर एक ल कलमम्बर्ग्ड:इक्रिक्सिंड्स उत्रवाहः महच्चेत्राय भारम

गयरउपउपरागयणय इन ये इभक्य वनण्य यक्षभन भाग मित्रभागामिहः भिरूप लम्बउन्हः राभ्रम्याय भद्ध लय भ्रम्य चित्रज्ञ्य भ राय अनमाय चमुउन्य भगवा

97

य गिविद्याय भदभुराम् विश्ववः लक्तीभिद्र उपरायण्या ह वायम्बाय मचायम्बाय नज्ञ यस्याय भन्नभडस्याय उग्रय च्चाय वीभायच्चाय अदाचित य रंमाजयद्भाय रंमुरायद्भा

मिक्य भग्निक्य ध्रममिक य पाचडीभिंदरयदाय विन यक्य एकमज्य उन्नधिनंद्र नाय गरुवक्य नभूमराय वा नगरुष दरश्य चाराम्य। विकल्ननाय विश्वमाय विश्व

छ्म

नमन्य वन्नरभिद्रयभद गलमाय । इंदीभः भुद्रयभ भुम्या एक मृथ्य चत्रमुख्य री लामुख भूडक्षमबाय भाभाज भाग्य उत्भेत्रपाय भदाश्वरभ दिउण्यभाभागिराय " प्रभा

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व काभाव माचड़ एड्रागिले विक्राहण्ड सीमारमाहण्डें भद्रान्द्री ह गुबह च गवर्ड भद्वाहर विउभागग

क्रिंस.

बर्ट गङ्गठगवडे क्षभगठगवर इब्बेब्र दे दर्क में भक्क में म किलके विश्व के चत्रमक्ते भननके भगभगदे भद्रभगभेरगडे क्रयउनम्बर्ग्डः चठयद्वदे ॥॥॥

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उनु यश्चराविभउचिव दूष्ट्रभुख ममीभिन्द्राय चय्येडले विभड यमित्रित्रभ्यभूत्रभित्रभ्य य भग्यभूउण्यिभउयमण्डस्थ्यय भीभिष्ठउप उर्रेडिंग्स् विभेडिंग ापनुद्रभुग्यमित्रिभिद्रज्ञाय वन

म्रंद

7.

जबलना विध उर्यभाम दशु य बन्नभीभिद्रज्य व्यवस्था विभउ ये व्यक्त अग्य मिन भित्र य जुरुगययम् विभड्यंगमः दभुषयकि लीभिड्राय रंमः नायभवागिभउयि इसु नदश

य उभाभित उग्य इक् लब्स विध उयेभक्ष्य गण्डीभिद्रिज्य विश्वहर्ने हारिपडयम इन्ध्राय नकीभिद्रिण्य " गमनकथान हः चडाय पद्माय उन्नक्षय क इत्य पद्मय या उगराय इ

10

निकय महाभानाय त्रष्टाः ज ननगृहः मृगुप्रहः रम्भा महंभेष्टं जभग्यं भण्डं विश्वन कहं उनुबद्ध रीहं भाभुद्रि मुहारं भूर्धात्रमने मुगरं गल भित्रक्षे नक्षे प्रकार

कड़ बरवाश्रद्ध एक प्रमय हरः इक्रल कुराय स्वाय व नज्ञय दग्य लकु कभलाय। भिष्टित्र । प्रमङ्गिनक्ष्य विः त्राष्ट्रः इक्षाप्ट्रभाइहः गेरपिंडभाइड: लिंगपिंड

99

T.

144

भाइहः इताम् इगल्यग्राप्तर डः गक्रमेव उष्टः (इक्रमेव उ हः भित्रीयानी प्रवण्टः जुङ्ग बउट: याभी में बउट: रेजी में वराष्ट्रः कन्द्रभाउँ वराष्ट्रः व कु: ज्वाकः केववः ज्वाकः।

तिशहर द्वाप : उपर हिंदी वराहः यहः उपयहः अङ्गा यिः शिविः भरभुविः अव दशक्य चमिरिधगडक्य। मिकिल्बरालय निरादिष्य क्षिड्य भन्निभकरानाय वाय

33

200

विकारित जिल्ला कि जिल्ला क मान्ठीभर्भाय उत्रेगाकाष्ट य " भाउन्नेदारक्षुगय भष्ट गलगलमाय अभभन्तर्थ नगवज्ञ इः देनका विदः वङ्का किहः गूडमारिक महमारि

प्रवाह: उप्रभाई प्रविभव्नभई क्रिमेमें बेड्डिनिवस्य क्रिन्सः " केंदिरएगरः यःभूलाउँ या एक युन्छे युप्तम् युभ विश्व चंपेठयम चनःभूराष्ट्रन पत्र उपुष्टराभड़ पत्र उप्त अर्थ

OF

भारे वज्वनजउगुउच बनउभू तर श्रियमणभाषतर पत्रविध इक्अंड भनिए गिम्र न ।।। क्रिभुभुगालम्यन्भः॥ चर्ष क्राइशः शिक्षाणा ॥ १६३१ च्यांदेरएंभेभेदरए।भेडर

नगरीय: दिनल भग "भाग्यान्य स्थापित । भागिति वर्षः P. क्रिमाड्स : अभिन्न : अभिन्न । TOTOGE MANUARTUSE

OPERATION OF THE STATE OF

उड़ी सभभउद्गभवस्त्रभा दा । एडा होने ॥ एक महाभ हत्रा यमिक्सिंगिंगभनश्चार्भिंगद्व द्वित भ किएकमस्थ्रमयाञ्चार भारतिस्थेभम्य मध्यम्भा" द्यान्य के विश्वमाण्ड्रमा उभा नम

यः धरिग्रअद्ग्यभुन्दा ० एकवि मंभक्षित्रं उसरे भिर्देश्वर मेडउपम । शिम्बहयडेड्ब नेश्र निर्धियक्ष भद्रमुक्त प्रामुख द १ मुद्रः सुद्र बाधव मुद्रास्ताना भवा १३ अरु । भाउरित्र हैं

93

यः

भंतरियंसगाहम्मग्रमंत्र वीरेव नजें है उभानभाषा । नगर्ह विग्रम्भूभगगन्भेच उम्रहेड नुभन्नि भन्गग्राग्य नि के बर् अम्मीयभगविष्यं म इक्लीकः भूषंभर्उवमार्थंड

भारिकारे के विकास भी मान्या है। स्विदिधिमसभाने दिरध्यामी विभाग्यसभुद्धान्त । समित्रवा गभामहः मूर्गभा इवभाग भारम् उत्तर । निस्तरक्षित्र (धंभग्रमंत्र दिर एउँ उ च क यह

99

154

न्धित्रमण्ड व वर्णस्य सम्मान्द्रव बुर्भाउद्ययानाभायप्रैराभा च भिरुष्ट्रभेभमिसदुरात्र में ने ठर। भवभाक्तिमारः मेरे । रेगः भेमभणवर्गमभेग रेणभूमिव वर्डेल्पिड्डी: वेणभेमभाडित

मुख्येि : चिण्येस इक् ए भी मिमा वि उ मश्चिम्माधिकक्र मुद्दियो विष्टु चयं चथाभू उपभिक्ष च उ मिंडे दर्शे दिम मुप्रेस्न भिन्न द्विधाभागा । अने मही । हय भाउ विषद्भागमण्डहेर:

13

मनेश्वराम्यगिरस्वीरामानेगाद रवित्रभारः भिक्तम्बार्गः किष्ठ नु ०० मंत्रेठवर उठिश्वं मभाभे :म भन्नभाभे: मभधाभंदेिः मनः काञ्चार्चितिमित्रमञ्ज्ञम्यद्भयः।

छेडी धिमंग ०९ अङ्गण उपभाउति मुखमिरिम्र हे मधा इन उर यभा रः उपप्रस्थाभेडं भेक्युइंभ्रम तुभाभित्रहमीयभाय ०३ इयेर उद्यक्ति सम्बन्धि । अर्थे हयभेडिकि: धर्यगर्हे मैं बडणी

158 वभावसूर्वभाउंभहयहाँ । ज गवराग्णव राशिक्षणभगवराजी राभागराण्यम एउम्हरपक्ष -ठूल डिग्र राभा वापूरिये म्योभाव्य उग्रंभविम्र अंभक्तं भुक्तं न क्ष्रमहभू । भहरूपाउभभाग्र

भागात्रिभूष्ट्रक्रम्हरूहरूहरू क्उड्ड इंचक्उर्यमभद्ग चिमम भभम् दिरस्य उ ०१ यक्ष भक्ष प्रमापरिड भवित्र भिष्णभ भभीकिर उद्गलग्रह्मार वेभवहि भिभीयविंदेशयण्यायभूत्रः

3.

160

भुद्ध १ वर्षक ममान्त्री भूव १००० नयलभानेभागमध्भाषंग्रम र विविदेष्ठि वगर्थः उपका ।।। उमिरसिलभीइ परिभाष्ट्रिति। डिक्की एक किया है कि किया है कि

स्यारभाजमण (उभाक् ॰ सह इल्भीइल्मिन्भाउल्यालम नगणामुन्द्र १ बादक्षिय क्रिक्मेम्भिर्द्धयान्भान मण्डियाङ ३ वर्षवित्र भारत क्रिभारास्य यूप्य भारत गण्ड

30

भुदा म चंद्रियमभीयमेम्भा इल्लंबलभार्मगणा भुष्ठ ५ भेग्यभारिस्यारिभास्य हरूय स्भानेयण प्रभाषा । सम्भा चयभागयाभाग्रस्थालभो नमण उभादा १ राह्र रहयभ

163 हयभाभा इस्टियस्था निया अन्दर उ क्षान्यर्गेष्टनभरेष अरुष्य यू भारत गर्भा प्रवीद्रमभा जीद्रभाभा उद्धायण

EE

किरिधान यह तर में वेपेगण: भेर्वे मुन्तरः सेक्रांड भच्चितीउउभागित्रश् विः भूग्निमानिकाना भेकाउषिः

165

भुकाष्ट्राड भडह्याह्य मध्य इंगगिरिश्रफ्त भ यू उर्जिग्ल्ब वन्ण यव त्रवे व दश्दे व : यव व उर्मार्गम् मार्गम् ज्ञान्य ग्रह्मभ् स्ववृत्ते लडियं डियं भभभोधा भभि चंधेउए इइवली विमेन

H.

23

लिह्य अर्थ । चर्य श्रेष्ट्र नभान बिके: प्रभागितंत्रनिष्यभा नः उठेचक्रां शिवन्यः भूभिभ राम्ब्रामिन स्गाभ नग्र

क्रम्य स्वास्त्र स्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र %ज्य यम्बरम्बर यज्ञ च उउम भुगच अच उउँ ये का प्रजिन्द ह दबीष्ठ भक्तभेतिक्रमयान्यभ मभुगभग्रथम् उउमेराम्ठरद गभगभन्थमु अउप्रकाष्ठ्रक

文文

1 1

गभगम्बहरहारं विका निमित्र गुडडंबी भियल डिस्इड धार्म वरायायहर्टा रूपार्थ इइंड ठबर्गिर यथा उसम् विचय इल्लान्यान्त्रीलिंड मेन्स्यनं

भरउयवैष्णंथयभिमनं वाच्य नभित्रीणिड रणयन्वकथानं मित्र उपित्री एउ के भाषेक क्भानयमभुन्धित्री छिडि भेगे गयपल्लाभमं अडमनं श्वरित

すっ

JU

प्रमक्शलंभरयुभुत्रभित्रीलाउ गड्बमनभठय जनभार दी छोड क्उव्यवभव्यवेषव्यवेश्व ि । अण्डिक्सवार्गिक विश्व यार्थ विज्ञान्डयायहाँ उष्टां उष्टानेप देभं चुहुन्धदेशक्षदेशि मिधु Spigitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भावनञ्चा एउयायस्थउ यद्वा रामिश्र भिट्रकमर् वित्र भंग्रेथयात्रीयिकार्थ

火式

39

172

दिनष्टाभिष्टाष्ट्रकांगे भूत्रे वयुरंभे चग्रा के मार्थ है अप है उन्नेउद्युष्टिभारे कामायाउभायम् नडभः भभानानाभवदा विद्युल श्रीइभंदिभार्स्डिडि भच्छाप्रेभच अवम् यार्वविद्यां ने उपाया

उ । उउम्राज्याजी उन । चगभ उड्रज्ञ इयम् की यं उश्रुभंभि विज्ञी वध्वस्या अया श्वास्य स्था उभगभे वभन हैं: मउभक्ता वर्ण उपनिस्यान हड उभन ड: इक वस्भवक्षात्रक्षा

37

ग्रः

K.

भभमु उत्रानंसभय क्रिय अप अ उसाई एडडिग्ड स्कार भा ।। ना न्ययू दमानि विण ने नि एउ । उरुक्ते चुक्स मुह्त नगुरुभ कुललिएउँ उउःभूभिहरूभण कि करकठंट ठडंपराभ कल

175

मात्र वधरुविद्यु उपरा रहिक् लमभू काराने नभीवदाः म श फलगभः जग्रयस्य मि गणग इ रिष्धः भेणिडिविगण्यही " केउइविए: ३ विश्वः केउदिश्वेः वभूमवाय उ इउन्सम्भ इंग्र

亚

176

रंक्य्यम्हारम् जीहमूपा गेत्रः येनत्र इश्वरं ठक्यम्य यनभः उ राल्न भुक्षेत्र यभु भ द्यालधरः गणराङ्ग विराय क्यामः उ क्ष्यभन्नारम् दः किइम्बरं के इंग्हीभः अद

गरभः इ चर्चस्पाञ्चा स्डब्स म नमग्रीभः०... हमस्बद डीउड्ड: यड.इड्डिय भड़े वह युद्धदेनभः एडिइक्क्लम उ उउरुणवर्डि ग्रहभाष्ट्रनि भर त्रा मैड्सपडि ते कू ये उप

डो भश्रभं साविस्ता उन्हान भाई दिरक्षगर चमच्या उउँ यलभानभाषत्रीक् अरंके राय रा छेनुरुक्त छोड डीज्यय व भेभविडं उमीवाम यमानयं भ रभाइने भूभकामे बनम्पति न

भेगम यहां भ्रिमंत्रान चहुनेना गयण्य चुणामक्षेः प्रधारिक भद्रन्य, चर्डा बालभाउयि र्याष्ट्रः ब्रह्णन्यः १० विनग यक्ष्य कश्चमक्षिष्टः भक्त्रय उन्पेराष्ट्रः महद्वर्गहग्रहे ए

ग्रः

9.

द्यारहः ग्रमनक्थान्छः यशु इ:इल रणहः समिष्टादिहः हक्रमग्रह : अष्ट्रमङ्शिमङ् सम्बद्धः इक्षिष्ठः भ इहित भवं अवदिक्कित ०० द मक्तिहः वद्गक्तिहः चर्तिः

गुडमानि का चर्चमानिया उं गुडभीज्यिकागण्डा गुडमा शिविभित्रं बार्भभूत्रम्बङ्गभूजेष ण्डा उपमीपभद्रन्याभा हुरश ग्रांचभः ग्रीपंचभः चप्रसहत्व भस्पिइहः युपः भुग्मीभेश्रुग

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गः

भहेन इइ:थोक्टं इत्डा क्रेगाय ड्रेनभः के ब्रह्मः अस्ति। । अ भूमकायिक्षं ३ उद्ग्रभायि ३ भद्रम्यग्री ३ उद्गम्यवि बर्गाः । क्रम्यावि । ३ भूक गण्यवि । च्राज्या गम्पर्डः

जभाग्नितिभवंथं जर्भविह हाः रूपल चर्नः किटाउरिक क्षेथर्वित्रगण्डे गुडमानि रा पर्यामिति भेर कलम्प्रल नं मनाभडंकिति । जित्र यया विकीद एक्सवध्वीविठ्यः च

ग्रः

डभरंग्डार मार्गिवरहाः गल भउचिए के अलग्निकिया विडीयण्यविठ्याः ग्लाभिंडेएडि भवं चरारियुंभिष्टे चर्हर वानिकीद ॥ उउँ चवा प्रमा।।।।। विचुबाड्या श्रुडं प्रवेग लेम भूर भ

रिष्डभा भर्मसिध्यद्यग्रंभचक्ष दलभूमभा रङ्गलंगैररङ्गलीभ एउभचमवराः रजवक्रभन्डर रजभग्रभक्षित्रभी निनंभध्यम जैवर्णेयं प्रिडण्ड उप्त विश्वभी एगामगर जुना जुनाथापुष

103

त्रमा भवगभनभागक्रमान्भ ठयभूमभा उज्ञवरुं ग्रानं ज्ञानं चरा वियंलकी भाभुडी उसाम विमुक्ताण्यभूराम् जाग्यकाः न उभा निर्मेश्व वस्त्रभने विवस

बी कं अधि उं विस्कृष एडिइन उपानिष । स्वत्रक्रकलम नुद्याः १८१ में अल्युम्प्रेम्प्रेम् इस्ट्राम्प्रेम क्रिक्स क्रिक्स क्रिक्स अनुस्र १४० व्याप्ति इस्ट्रिक्स माउक्त क्रिक्स अक्षा उत्तर व्याप्ति व्यापति व्य ग् किन्द्रां ग्रहार्यकां चरा विभेव

महागद्रगमणग्रभी प्रगम्भ नाउक्भमाक्भलयायुउभी प उसीध्धभद्दमंभीउत्गंभभग्र उभा चन्मश्री जेगिव यं न उभा बिरुडिठयभा भीउवहं नि भ उश्चिश्च चवा रं मरंभावंगीभ

उमा बाधकभन्भनुभा कुनागाकर लक्षित्रभा । भी यं उपलभावर्थ विष्ठयाध्याद्व सन्तक्त्रीन येनचे - चरादयाभगाय हो भ वभागभू शमित्रीभा जगञ्जू व प्रवस्यक्षमभित्रणेठव केष्ठुड

34

बः भ्रः चक्र वणभ्रद्भागम् याभीगानिउभी हिन्द्रलाउभेव रमंग्रेडेडेमगर्डभिजीभा प हजनवंगम् हरू भूपा अंगमम चुक्रम्थु भंग्रहा हु भंग हु भ नम् । विमन्द्रियुन्न विधिवा गभभित्र यावरं भर्णियश्रीभ उच्चित्र दादा स्वत्र स्वत्र मान इः चमनक्भानः चुका व म्द्रभंममीथित्रभ विग्रवल्य क्रिक्षेत्रभा धीउवरुं निनं असूरभवडर, इ

小

कः रज्ञें वस्त्ररंउसः मजिद्धंउउ श्चिमच्यां किमियलचंड राज वरुं विनं चित्रभिष्ठं चवर गर्मार रंभेड्डानं भिर्माभनभार्षः। मन्द्रसंहरान्सभा इप्रशंह न लि यंभेमणग चरा-चेरीछंग्छ

अस्पिडभी त्यञ्चभारिकंभड्ग्रंगभव म्प्रितं भे एप्रमे ठवं डो चीलवरुं बलि। यजीविंगी ज्वाः रामांग्रेगार्भाः। भित्रमा भामदभुउउद्याचिक्रिक् भक्राभारं गीलवरुं रिले डिइड भ ज्या वण्यक्ष्यानिकारिकारी H

97

द्यालभागम्य विषय स्थान ठतं रहत् वर्लं वायवायादि। ड्या ज्योगगणिय यात्रभ नभभाग दंड इराभंभें मिठिउं ड ध्रकं रिल भेभेग्रें नुकारीमा नेमद्भानिका नर्ठ्यं भागानिक

नीनक्छेभद्युग्भा स्नुबहं निनं रंमान्य प्रमंत्र मुग्राप्त ज्ञान्य प्रमानिक विकास कर्ति । बुक्ताले मार्ग उम्राणमा दंभाभे ने भेगा भूति विवे उद्गेर इस्थे भूमें रिडभी रहता विन बुद्धान्य चरा विश्व इणिलं गाउन इंग उन इंग क्षार **चक्वज्ञभक्ष्य**

गमणगभा चडभीभधभद्रमंभीड वाभभभित्रभा निलं वधरुविष्ठ भइः " घवनगः चनादयभुद प्रवेशक्षामा नाग्यकान भागम वन्गंग्रवाश्रविंडक्रवंडचा भन्नेग् वभक्षभन्नेक्रवेटमह्मभानकभा॥

एउनगाः भूभक्ष इरुष्ट्रेग्येग्य्रकी दिउ: निलं गर्नागः भरः प्रश वनभवन्यन्य एक सम्बन्धः चरारिउ गूडि भेने चित्रिष्ट मुउन्द " चराहण्य हम्बरा भवरणातुनभा चनणःभागविद

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

I.

和。

अभभाग्रावरावरावतः भीयराय रूभरत्र । इस हाया द्वार स्थार हुए। जुरुक रिलं चुडुम्रुन चरा गर् नमञ्जायकं मस्त्रित्रभाष्ट्राप्र डक्र नक्र उपक्रभ सक्र रह निं यण्डणभारि चेराः निर्देउ

इंभडीभुउभ भंडेगुउल्भंगेवम इ. जंगहयद्वाभ गज्ञवंक नित् चार्यः अचार् अवनित्रविवन नभा मीथक्रिभवंसभ्यायान्त्रि मरीरक्भा भीउवरुं निलं ने गर्भे म चरा- इक्प्रंचे दश्दिभा॥

ज्ञानं सगुरं भी वे भूगणं मध्ये दि उभा भीउवरुं निलं चेडभर्डे: च बारहर भिरम्भारहमान्य युरंग्रयभाग्नाभाग्ना च न्नवरूं वितं चनाद्दी चरा भर भूडमज्ञां भगक्भाउवरुष्ठ हुउ

भेदारकारक्श्री उध्रुवरं रिले संदेश वीः च्रवः मैदिक्यंभदानमा च गम्मा उरिक्ष भेभव प्रवाहण्डक भा दिश्वरं नितं क्यानित्र च बा कि उभचगुडा उक्भा जीन स्पी अउसङ्गंभड्ड नुभग उभा उ

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ग्रः

He.

भूबरू विने इउड्ड थ चरा प्रव गर्भभडानमा यथीछभूबाचे ब्रेन है का मसाभित्रभी गुड़म है भि उनिरुधमीमुं मिमियले ये उ उज्ञवरु ग्रामं युग्छ उव गश्चम्बर्भविडभा नेत्र अयरात्र

दंभगुरुभगरंउक मिलांब्रू भारंगस्मारिवज्ञाहरः गृह मर्भि उनिरं मिला स्थाने भूपाल चेडा भीडवरुं विले चगश्रः है चुराः मङ्गालभदाभुङं इभि कीरणउद्गेष्ठभवंभवमिदिवभ

T.

5.0

गुडका इवनका इयका कुउ थिमाम चैः गलग इच में गुलक्भाना म भग्नष्टाभा रारायक राति के अभर्ड भ हगरय अगक्त इस गडनभ ॥०॥ उर्गयन प्रकार ल थाङ्क्रगाइभ्रथभभहत्रमान

ए इंग्रवडो एग्रज्वडाः अक्षः भ धंत्रयं उउनैब्हुभा उउःभरिक मभीन्ड्रधंग्सन्त्रें वंद्रित्याय रा थवरावकनुरुः जैवेर्डभूभ येडो यद्या भारत इंग्लि ग्लाथ उर्य विद्यारहः वाभूगवारिष्ठः थक्त

ग्र

0.3

यउन्य र उन्हः चरुयद्भी ये इ मनक्रान्छः प्रभुक्तनगण्छः विनंभे जिस्सार का सिंह के य जितिहग्रभभुग्याज्ञवरूभ न)मण्याज्ञभुरमीरवाभभं उपभ ग्रह्मपगरंग किंद्रान्य मह

गरंभगिक लेखरा गुडमफ्लंभ विम् उठम् उगत्रभूष उपमी भभुक्रामिडं निनित्रियमणि भगलः भरियाउः भीउभण्यभे हुः एउंडेरभः॥ च ॥ केरभभीभागच श्चित्राय वर्धाउकलमग्रहभभूउ

亚

OOF

य जिल्ला सम्मान सम्मान रक्षभमें उपभेगुदरुभगरं एक कि लंड्स ग्रहमण्डनंभूविस देस्क उगर्वभूष्ण उपमीप भूवरुगमें उनिनिवम्याभि भूगलः भीर

चेडः भीउभार्त्सकुठउँउन्भः,मे एनंभ नहारकाय नहभूराय नह ल्गाहशभुरायाज्ञवरुशम् म् यगजाभगमीग्राभभ उपभे के छत्रभवणय मनुभूक्षय रहिली गहभभुउण्यभीउबलेभक्त मण्य

गुः

0.4

210 भीउभागमा उपभे वर के इसे ये इस्प्रस्य भा नभीगहभभुउग्य पीउवलंभर्। मायभी उप्रमीरवाशम उपमे क्षेणिक स्वाप्त क्षेत्र म्या क्रथणीगर्भश्रुउण्य मुज्ञ वर्ह्भ

ग्रमण मुनाभगमा उप भे । सः चेत्रभञ्जत्रमण गविषर य कायागहभभुउग्य वधुब्हभ न माय इष्ट्राभुग्मी रक्षा इप भे म छेन्भः मिद्रक्याय भूर पाउभुउण्य भिदिक्ण गरुभभुउण

000

I.

HI.

य दिन्द्र सम्भाग्य दिन्द्रभुग्। यीनकाशमें उपभे ग छन्भःक उन् नियंश्रय भद्यारभक्षेत्र य अभूबरुभन्। माय अभूभागी रवाभमं के विन्भेय्राय छाड त्रथाराभुउण्य नीउग्रमभुउण्य।।

गडावरूभन माय य छ छ जंभेग्राभु य अंटे हवाय भी उबक् भम्। मण्यः न रक्षाक्रमाय ४ स्था मना युरं ने ने मेरे वे इं एक् यय द्वार उउँचित्रकम भाई दिला निम्यूं

000

I.

चियरिशमुह ७ चर्मभद्र भेरेः चय्यभग्रमम्ध्रारम्भाग्रा । उरा गूडमारी क महयागाँव उन्हः इन्निचपाभ एवं भ्रम भि चर्षात्र चर्राणां इस्रे

यनम्यः द्वाडिं ज्ञानम्य येना किष्टावभवयनमञ्: यनुद्राभ भित्रानभात्रमः उत्रैं इयारभान यभुभि माउभिक्षणद चर्नम भट्टः भज्यसम्भयभूजंभ मिविनियेगः उद्देश्य चिम्रिन्द्र

0.3

T.

H

हमार्थेशहरून। इस मुद्राम 215 भेभिरिन हैं। इस्टिम्म न्उम्म किल्भारम्य एकगर्भरभ्र ममाज्ञ विश्वभीमगणभाउँ वध र्उउवडा चभीवदा म इक्रल ग रुण उडिम्रे: राभुग्रेराये उ येन इ हवायम्बाय र गनाण्या वि

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इंडे चिरि ०० प्राय कि स्थानि हिंद चर्चाड चगभः। पनभनित्रग्याह लेख नेंडो भ्रेंचेण्डाहाडी प्रह्में या ग उन नगभुभुउद्ग यम्उम्

ब्रामांडे दहार्ह्य अ: उउम्रह्म भा गामभादः श्रम्भागः अद्रभवभा विठ्डाभवेभव्ज सहनः गुडमा विया परमावितिभित्रं भभिम्बा इत्मनम्बरः भीयनं भीउन्बन एडिउएलभा उँउययिक देभ:

चरांगे उपंदितः गाउभिकणद्।। एड वृत्र कि निक्ष का का मार्च नेलयल्भान्डसुन्धन्यायेज।। चर्रेट्डाडिभं स्क्रलंग मुग्रे भारत हेत्र अहिर वे उद्गिष्ट । चिराणभाष्यमा उच्चमः यगक्रम

नकल्प उं प्रयम्भवा गायश्री स्टूर्फ्णा यम्बिस्यः यस्प्रा चहुनः भड़ागा ही भगवही भरभुद्रः भद्यहरुउयः। भीयउंभी उमन नगरें ये वध रुउच्छा एक्सईडिभयविङ्गिन्स्थ उद्येष्ट्रं प्रदेश प्रमुख उन्में बड़

ग्रः

222

भारा यउ ५ इ वर्ग इ देश द य मार्थभारिकं चंड्यगाँ देभनंभुडा उम यहेरहरेडा उडेलथंहर उ एल भामातंत्रका उउँ ४ का भवडा उग्रनगण्डह उउम्मिस्र वि युष्धजानियल्य स्स्रेग्डइइ

ठमें इस भारिभारिभक्त रियल डा नइकेंडे: अज्ञानिहरू भेभा मर्ड मभेषद्व मीक्षाया यदि निच यह अनंदमका ने सुवाहर उद्यम्बद्धा गलभाउत्रभगः भ

200

1.

वर्ष्य भ्रः ए । यश्चे ज्ञान रागम्बरः उमयभुएडि भचगुरु में कं भण्डा व भन्मिडिउप्बर्ग नुग्रामिटिएडिन इनेः यग्डिल इन्द्रभन्तियाः भीडांभाउ उउँ उद्यान विश्वपान लक्षी भक्त कर उदा राभुगर

कि भीयतं उउनम्भन्नं मङ्ग्यं मियु उएले भष्टभी के उंडे उड़ रंग्वीपष्ठक्ष्रस् उद्देश भाषान क्लिरी चभा भीयज्ञेभीउभिवर उभा उउयग्यथयः भनेष्यय व उपनेकर उद्देश विष्टु उपने

गुः

र्हेभभूविक्य एउं भंदिभाग गणः गर्मे भागः भीय नंभी उठ व उउँगाउदिः ॥ ५५ गाउद वि चन्रक्रभूम् स्थान चूड्डेग्रेंबङ्येननिंद्रेड भावश ने अचवनभेने वें ने बेंग्या भी

उभः एकभग्र स्वेचग्रिकाविंमा कडी एक या जा चित्र विश्व राक्ष लयलनं इत्रा उउथकं मरा चम्विडिभिडि ज्याग्डिएडज्ञिलिः भभुज्यातिभवेष्टःकामित्रका भा रुयुचे डिक्सलें भः चित्रिश

OOF

धूलक भारतक्त्र ने वर भारत धवनयद्रज्ञ इश्चिज्ञ के इंधी विषयण मिस्रमा इउप मा अपनी भाषिक्त भीराम्बाभागना । ठननिविधिन भाष्यम् इविद्यः विद्यालीकभनेन प्रक्रियोगः।

ग

pool

भन्देस्रीनीनया केभारीविध मध्नुप्रमनकरीम इप्युगर्वे प्रवी करा की असे असे असे मिल द्वीमवरूपण माभुद्धगाण गय भित्रभिद्रज्यक्षात्रभगउगः " उउँगेगूरभागि के इमरानः च

पभट्टेन चयुप्र भट्टेन प्रचरह म्भभग्त् बहुने: नामुह् यव गक्तभः राक्यप्रभात्रभः वेप नेसि समानेत्रा (भ नवगुरु जेमा भूभा राज्य रायान्त्र उग्युम निर्दे

गुः

232

मनियभभुभमाभानग्राहर क्षेत्र वार्ष का क्षेत्र कर जाया निमनः किरणक्यमयज्ञभभभ युक्कादनः गठभिभानीठगरं मिन्धर्पाण्यलः क्रीम्भार मर्भियुद्धभितं क्रियु । जनम्

ज्ञानिक के जिन्द्रमाभीक्राञ्चा वा भवद्भन्जु उप्लयः चभ्दिस्य ग्रं वरंमण्यात्र उद्दरः भीषम्मणीत्री उत्थारमन्भभादिउः गुड्योइपर विह्य इंगेडिक एंग्रेभभ ली च नाभुगगरेयवः संनाभानाता ज्ञां अंग्वेद दवः

:क्याभग्रंगवलीधिलङ्गिष्ठः मनुम्रामिवंठंडी ग्रुट्थी मा । बीला रितरः मीभाग्ने दिक्यभदानाः मिवधर्पराकः गुड्भी रा म पीउप्राथः क्राञ्चाभीकाभ

अउगमाभाग्रे द्वेत ठः भिराजनगउद्धि गुरुभो के कुउ: धनियंतियुरं र्येदा न भीरभागी में देंद्र न

उद्यान कुड: अभूक्ता न्याभी ग्र द्यीरंग्रंभड्य प्राप्त म्याप्त मुद्राभड्य इन्नेभड्मान्नउद्गः मानिज्ञचित्र महारूभवक्लिंडियुर्नेः यवाना लभ्रहाराज्यस्यांकरलेख्या । वर्ष हैंवेपगाउग्रामानिहर । बन्माना

CC 0 Dinising disk

T.

His.

238

उष्टाभभिति इंध्यें भवं मं इ भ्रम्थु इ गुड:गर्वनामुम्रग्रज्ञणमविमधः अल्जि: अल्बेह्रविक्रहरुकान वः यञ्चयभ्रमण्यः भुः भरयङ्ग्र रूचेडा इक्रलेंधरीय इ: अरिएउप

र्णायम् वर्भागगुरुःभवभव माधिग्रद्धाः गठकलगुद्धः यम न न रिगोगु इस य च इति के मभूत्रगण्डं उभाः उल्भाउभुग वसमावित्व वसमा अमग्राज्ञ भारतिं इर्डे बहुग्म

03.

I.

240

लभभ्यंत्रस्थित्वयम् अर्थभा अर्थ गुंडराभिः क्रथश्चे कुउण्तियाचीहरू भ उड़ उन रिनं ग डी इपिगिरद्य जुआ भन्नियभाग्ना जुला असे की भन्ने बुउर्ड इस्सुउट्ट: बुक्त पर्ट्ट नभेराक्रल । यक्लमं भवेषंभ

ज्ञसिकंग्रण्डा विभूयह नड्डाड मिल्यनिक्ड वर्मनवर्भानं उर्गद्धितरहरूमा हिल्ला बु लंभवडी । । प्रमापत्रनाच वाड्मवाक्रभाग्यः वन् वगराष्ट्रमाध्रमप्रवः इज्ञाध्रत्र

उड्ड उपिन्नानाची उम्भम एडिए किस्तानिभन्त्रभां ० ५ डिग्रुड्स कि लगामा किसीगामायत्रभः विन्वउभापका भिर्धितार्थन नाल राजी अइंड्रम्ड चंक र अने म मिक्रिल उउ:भेष्ट्रियमगर्जाभुष

नग्रभकारयंडा चक्राचार्य इस्वरमद्भारमा वर्गमध्य १४ भानीय पार्मिमाधिकंकादं उडि गलभानेदसुनगाडीर भूडिया 4. मयेडो एडभिङ्गमेक्डवि थाञ्चन 5. भूतिभूष्ट्राभ चर्चने:क्यूनक्य

新型型型を対34221·

धानित्रभाभनिकारणज्ञीभभभने कर्म भमारअस्ड द्रा रेक्यभमरेभा ज्या जगभनीयं मिक्रणये गतुप धाकि: उडेमुग्नेमयं भाविशाल भवंत्रेव हुउभा थण्डा चर्त्र ने भ

क्रवराधीहर भिभंभवंभभव्या भिन्भः भन्गायही नक्डेभिय भनभरिष्ठाभ चेडमिध्रमंनिक्थ वििश्चमिकः उडेनक् एउडिश्ड मुख्येडा यन्डे नक्षाप्रेडिभक्रेल येभसभ्यउँ इं भभस्भनभाष

विउग्रंभेमक्थ्यु यहरूभ्य चेंगु उच्च सुरुव राजभा उर्दि भाग्नस्नीय'इविडंभृतिभन्न देः या वज्ञक्यचित्रंदं उत्वचित्रमां उच्च क्भिउँउमरीरें अभुगुउँ भमुग्र रा डो मिरझालेभडाभिक्रिकेपेझाड

तिभूम छ उ चर्म म छ यन नर्भ य निउंक्ट्रभिद्यिमा निभंहमहयं विश्वक्रियरम् विद्वरूग विमन्ध्राहम्बन्ध्रभूवः व वभवपरेक्ष र सापक्रभ्यनलका भा उद्यास्य में बडा प्रेचे हा ग्रेचे व

भः

FED

भक्षनभा मिक्र न्थाउभाभितिया यम्बारनंहवड। केरीद्राम्य विद्यमाद्याद्वनभग्रभभ रेग्ड इडिभेरेलंबर में जिस्ता जिस दिल्ला यहाँ अमर साम्य यह जे भ स्था उनमा चर्सुंग्णंडियञ्चाभियञ्च

इदिवंगवगः मिक्यउभिमेथिए चउभ्रामचउंगउः उङ्गयभ्रभम इंदिनिमवभूमिविभिद्ध एडिश मेष्ट एड्सम्स्यभाः चुपुण्यहरू वेल्यडा चडःग्रमयेष्ठ्र

PEO

विविकल्प एक न भू ठाउँ मा कि इं जो भविक्त्यः भादभुत्र उउँम् केंद्रका भाषाग्राप्राभा जिद्युजियामिक भाष्यमा ज भाष्यमाः द्राष्ट्रीय क्रिया विष्ट्रिय

भया उउभाभम्म मान्या मंत्र प्रवी क्रिम्डल अंग्अमग्रन्भिरङ्भा ल उनिदंउराभद सर्म हुन नभाभा रून जैवार राभ मुद्र मित्र भार उत्तरहर वर्गादेस्त्र : वहा िडाडिहिः सर्वायं निम्ययस्त्रे

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भगाईभगः उडुउईदिन्गिंड है। इत्राक्षिय में है। इत्राक्षित द्ध में मुहेबाल भिष्णभिष्ण नवाड़ रेण्यक्ष मानिक नम् उत्ता युगामन्य भड़कान्य इदि नीआ मिरभुभवप्रवर्गभागिहैर

बउदालभी चुड्रा लिशवरागरंग्यिक लभाम्माहिल राभभाम् उउठा इग्रेभाइ विवययंड कालभाषा मर्छ विधिवद्दिकल्पेये विश्वि द्रमिमागाराभग्नेभक्षण्युमाध्य डा स्पिरहरूभयंभुरतभगाउँ इ

यः

097

गमुडि । चष्मिल्लाकगवडीनभा श्रूत्रभग्रे । पद्माभंक्ष्मभंग भम अवः धव्यास्य वयः भावे विध्येति तराभविध्यम् आर्

मंमिकानीडमङ्गिकाभूनमाल भागप्राएडिपंमपद् 093

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क्रिणं सर्ग्य है भगभगगं रूक विद्यम् इंग्रंडिंग्डर्गभभन क्लिनियां भीउवरुप्रभने हजु है ज्ञभगीउभुगभित्रमालभवर हें भ हीं इक्र रूर्यमें रिडरननीम उंद्याकं उत्तराश्वा । । मुस्याय

इड्यम्: भारा गुड्: भारा गुड्डः मुन्त निम्:भुन्त निभद्र:भुन्द नि ल्यः भेट क्रेडमः भेट्य क चंत्रहरः भः उद्दक्षिति । १ ग्रः

रं वयसभा देशक सचा मेंबर से ए "नित्र वंभेग्यावि: भीणित वेड्साइ डिड्रिभंदी उच्चित्र उद्योजित्र भील क्रिक्सफ्डिकिन राम्प्रविष्ठ इउंच्चित्र ही लिए हिंद एभंनेक्रण्य। उउन्भेभणः भीलि ह

बुद्धः अभ्राष्ट्रश्रीः भद्द्धि विभ्रवेक 'नेडियलभानेबाइड विद्यादिडिड् भिवेडियम्ब्रेडम्बर्गेड्ड क क्रभाद्र इतिमंद्र यग्न वर्भन्य ययः भीलिक विश्वयुद्धियां में भू

03.

भद्रभादि।उभद्रभनभाभदं विकात मिहणवे रीकिहरहरें हुन डिल्मनरंग्मन्थडेन्ड र भिभंतिकंड नभीलिंड केंडभ्रान्दिंडिंडभ्रान्य भाजातिह ज्ञामभाभभं वद्दरस्त्रभी ए डि र्रेभर्टभुण्डिडिभर्टाभेडियम्

गर्भभागक इम्लिभभुग्रहर्भे उभी ७६ वं उर्भेभव ग्रेंब उर्भे वश्री ए डि उन्भेष्ट्रकरिंड यल्भानिबाइउभाइ हैभूर्वष्ट्ठवित चित्रवंभूगीयर् यार्वेवेम " " चंग्रजीइंभरविश्वि उत्भाषभरिष्टि। उम्राज्या भक्तभ

गः

030

अक्जापनाक्षताया गरम्मा क्लि: राज्य विश्व मण भद्र भाजराज भुगलयनं कंभगीभभएगिर्डिं क्रिममङ्ग्यम्भवंभित्री ॥ ।। ।। केउइ विजिनिनि : ३ विज्ञतिजिनिन मलाराः अविराध्याविरा ध्रम्याथस

म्राडिडिम्डि वर्णिभिडिग्रिक्विरिव इलिडि हमेडिरम्यः मडेभहभूभा युउंगभुउनिडित्वश्रृहिउन भरभेक भभ्रं गीभंदिरि गीभणी सुभ्यंभेरि वियंचेन एडि चक्र गरिभक्त भूष्य । दि भूगेम पारिडि भूष्य दिवा भूष

गः

660

भगभीकारिष्टिक राज्यस्थित उ भानायशीर्यङ्गिस्कारक्वाडिभ वशुरुभवशुरुवम्हुनं इक्रमानिलं मउंभद्रभूभग्युंगभूरुक्द्मभाद् विभानापुष्र इंकरिष्ठ उभानापरी ज्यपिकपरभंकाभंगायहारिप्राउ

यगरंबंग " इच्चनभएडि " इच्चन भराडियागानिभूरूपर्डियागाभा दभा ।। इङ्ग्रेग उपद्वर्ष वर्षेत्र भद्र श्रिके इस इस्त्राचित्र व प्रवर्षा उद्दार वस्त्र स्था छाड् नभागपण्डनभाजनाभ्रनभाउरि

033

भवद्गरेबेखाडा किराज्याखाडा मन् भाषताष्ट्राउ उद्यापताभर्भेरोड मा याउन्भारम्भायाउन्भ प्रक्रित्या बिबीहाभेवनभर्त्रोडि भडेन्सभडें नभ अडिभमभकु भवनभक्षेत्रेड रू उचनभर्णनिष्ठभाणयन्भे एडिय

ख्यवस्कि एचँगनभर्भराउ कुउ यनभेठविभु उत्तभ ए उटका भरा भवनभभ्रेगेड मक्ष्मनभञ्ज्ञ स्य नभ एडियम यद् निक्षिमडिन्स नभभुगडे भङ्गडनेक्यमभाभाभु यदमलिका चभा चित्र एक विंस

03E

ग्यश्रेन श्रुन श्रुन क्ष्रभभष्ट्र भवारा PSE उशिज्ञ उमें भड़ी भागित चन्द्रिश्चेडीर्श्यभवाम्बङ चभा चित्रिं विद्रति इत्रेश्वार्गित्र भूभ डिब्रुडि भवाकिरवेन्रयेवडाविभ भचयित्रस्कां येउँभन्नाभि

उत्तर्भग्रिक उत्तर महिल्ले । ने मह भवि दिश्च गिरिय मार्थे मिल मद्रिमंब भूतश्रेलेकश्रभष्टे व भग्रयेणियीम् इ ४ हिप्रियेण न्धितिमारी भान्वेन्त्रेनं लेक न

PEO

गाः

श्.

यंभभज्ञ एं इलेड लेक्सु उं भुंड चउभन्यक्षिउउन्देशनिकः भं बिश्वेडभा जनन्द्रनिक्रीएउ ए नयुरंमण्डेभराभापरं भाषां भे मुक्वादनंदरिदर इक्षितिध क्षिडभा ॥ ।।। भेगण्य ही हि स्भग

वुरंगमङ्कीयुरदारावितं व के:भक्तिक्रिधंडणेंड नयनंभन युगै:भंयुउभा दंभभुरिध्धवादन ापगभंग्राचाराभिक्रम इक्र विश्वभद्रमुगमितिः च्उंच ग्रिड इभाविष्णा ॥०॥०॥ मंत्रियमुक

T.

चथुराज्ञभयराज्ञभा भारतेयह्डरा किल्बिवीद्भश्चंभिराष्ट्र भं वर्षे वर्षे नम् नगाउम्म उतिमाउ गण्य हम्मकारिक माउदिमंडिकेर इर्आक्रमभामीवरदरग्राम् सभूभावङ्गी उद्रमश्रविभूजीति।

27-3 उद्यक्त या कि स्थानिय क्रिक्स विक्रिय भाग्य उत्राहित । उप्रमाउद्याग्य विल्लिभई भिननभिद्रारिभ चैवाराराभ नभाभिविद्यभभ्यविद्याय भ्रजभ भिभवण्यरिक्तिक भग्मिकन्य

037

बरु उँडे विष्युहरू परभूगण्यहरू इण्ययभञ्च क्यानिवय द्वाइत्र बाज्यस्वभाजवाउभभाक्त भेद्र किरिक्य मंग्रें नेवीदं भवद्गरा क्षणवर्गदंश्इडभुग्रेज्भनिर्वादः धरण्डवाउ भेषागायकी उपभिष्ठांष

उक्रमेर्थंबन एडि ग्रेगा चेंच्या रिनिद्ध राष्ट्रिय सम्बाद्ध निनगर इथ्डिंधनमरिक्यमम ममनिवासमारीय उच्च राभारीय नभए उदक्ए भदि उभे विभवेग दे मु उम्रष्टिंभज्यंभक्लमलपुउह

033

ग्रः

नड्यंत्रम्भि॥लाक्येविस्माक्ति डिटमा । उँचे विचमक्त र उ थे डिव चुमक्षचैम्बानं हबडि विम्डभाप एडिविम्भाषाग्रमयि विमंडेदभ अविम्हभुवउभाठवाउ प्राविम् उभ्यामिडि विश्व उभ्यामाणा भंगार

277 र्दाभित भवराष्ट्रवेत्रभउत्रभभूदाज्ञ वर्डे भंग्रल्ड्रिएडिमवभुल्डिहाराथ वियी एडिडाक्राथिडिक्रायडेल्न यग्रवाकपडि स्विधिक्यान्य नभउना ना इत्या सम्बन्धि । वविष्ठ भग्रवग्रवेष्ट्राक्षाभवविष्ठविष्ठ

CEO

वंद्या लालाच्यभुकःभगम्ब भाउउच्पतिषंग्रमभूनलेक नरिभ हुभड़ाह्म उर्राभगरः क्षणम उभन्न भट्छन्न्याण्डर्गा हिउपनिश्चलभभुजुभ भग्निरीवि श्रुभाविडेर (इविडववैराधनाथराष्ट्रां भा

निष्ठाइङ्ग्लाइङ्ग्लास्य भि एदंग्रह लाव ब्रह्म समार्थे उथा इगर्जान्यज्ञ अभिज्ञ मुग्लग्रम्गंमछि छज्भद्रगंषर्य उपितिस्ण इग्वसं देशदिभावतास दि उभादगगल्यः स्रोमष्टि श

OF.

उभक्रविराष्ट्र नगीजनिति जन्म वर्भयमणाडे उभार्गणा इग्रेस वैज्ञान निरु विज्ञान किया है। उभाइगर्वार्वज्ञार्यः चेत्रभाधित वि मुन्वित्तम् सम्बि उभाद्राम रचेरयउभरित्यमिडिं हो दिरवर्भ

ग्रमाडिउभाग्यानी हिडि:भ्रियाका वकल्पिश्रवद्यापडि गल्डावर्ले इंभिद्रभाउरमारिड उभाइगगाएँड रिष्ठला भर्यक्ष उर्ध अर्घ भ भूषभवयभि उभाष्ट्रपभवयभि भू लेश्चिरंवेक मध्यसभाग्ध वीर्गे 武。

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्युज्ञिति यलभान्भेनभूस्याबीद इणिं उभाइगगरुउभुवीरिंग विकाभिविकामेत्रः भल्डिवर्धाः क्रभित्रक्रभवेडइथल इंबर्ध येड उनयक्षेत्रयक्षेत्र देलवडीन्यग्यः भमुज्यभाउ कलवंडवेडङ्ग्छभग्यः

भश्र यहेउ नयह नयल च यग में भन्क न्द्रजाभीत येगक्रीयेवडहक्त्व व यह उन् प्रश्नुया उभा इ इ उ उ यह ने यह उत्प्रस्तरं यगक्षे इंदर्ध या वंद्र माला। हे अद्भाग्य है किशाब है किशाभेड़ व न्यभद्रित ल एडिगण्यही इप्कालभाष्

To.

640

नयनंभाग्रद्यभाष्ट्रगं भेजामभविक्वि उच्च बुउरंभद्दिक्तगंद्रक्तरभी स्वीस्वध अल्डिंगवर्गां भेरङ्गव्याः वद्यां भे उभागारहाउड्डा हिरहेश्हेकाभागा। शिक्षामामा अस्ट्रिश्च

क्रिमःभाश्चर कंसीगुरुदेशियायन्भः॥ विन्धित ल इड्ह्रेन ल क्रेड्रेक्:भ अक्राभक्तल्यक्रम्भेडास्याका स निभागद्वत्र वात्रक्षद्वामात्रद्वभाव न्दः भागित्रभाष्ट्रिका दिवत्र स्वाप्ट अनुमंदान्यां मीधाभुद्यम्यः भठवाङ

) 引。

उड्याचक्राभूग्रेभे ल च्यु:अच्थाप भारियलभीनेयनेम्मिल्यादेशेकं क मण्डमभनु इलभ उलचलं भन्नि में मु नदेश वज्ञ ज्ञ्जनभन्ने विज्ञानि विणं डहरूराउनुभि विचास्यविज्ञाभिकेउ

अमुविनिनं इत्रवह भिद्राभक्षभुरु हु नारितिमिडार्र्रिभतिमयं काराल्यं, गर **५३ मञ्चाकारभन्य रङ्गिलभङ्गान** भद्वतं रङ्गितित्रयतिन्द्रियशिनाञ्च मयतंभारता लालाचित्रवित्वभश्य ग्रा विद्याभिक्र वर्ष्य स्थान । इत्या अक्र

3.

30

OFF

बरणभाग चित्रकाम । भेत्रे म बैस्रमें भाभाभाभाषें हैं। भूगमें बड़ा भवभूक्षित्रम् । । विच्छिभीकृ भी दिउं युल्लभू मैं राम दिउन रङ्गाउभभा भ नियम्बिनिकिर्गिक्ति चैत्र निवास के स्वास्त्र के स्य

इप्रयम्बद्धभागवित्वित्व यम्भ वीरक्रमभा " चर्चेयुष्ट्रभग्नां विच उमेरिक्रभिभाउन्चित्रमाञ्चित " व विदेशकवित्र उभारतिहत्त्वभूभः क्रिकेविकिंग्गभभा " यमद्गमण्डम सभग्रहद्वाश्चिभउन्डइह्माद्वाः

3.

3.

PZO

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उभरंगिकिकिकिमम्ब भावियावय भा नभेठरन्मभि । गणन्ममण् जिभाग्धेउभूमिकिबिभा बन्नभण्तं सुम भ ० भन्भिज्यभन्वयं भ्रथयंने वर भगभागभुभये :: द वायकपारिम बडिमें भग चरहा उसंग्यादिम्

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मीद्रमा । स्याज्ज विकार विकार । स्योग वध्याद्वरी गैना लिगा दिया सुचे उउमी भेभभीउचे । उन्हरायुप्रभेश उभाभे चिकिरागउभा उद्येक्थमिति । क यविद्रम्म उपभु उपने का लिपी बर्भ उप

त्र. ज्ञ.

OF

बायाउभ्रमहर्गा न बाबिक सुभू मुग्न मुग्न उभभित्रष्ठुउभी भिक्त १ इरियण्नरः भि इंडियुउगम् इन्लगिनम्मभा विच इ। उन्में भागगुर भ एउनिभइन्द्रनण बाउम्बायम्बाउभा माच । क्वीनिभेडावं नण प्रविरुडा

293 उनम्यासम्बर्ण उन्यभभा "निवृत्र यस्मीरिषेत्रवहाली चुक्रवडी भूनकर मन्भाउरभा " मिन्न सम्भागना मंबीरयाथियाथिद्धाः वन्तरितः लस् भूपुराक्षः भूगनंभराव इतिह थः चयाउँ नद्र विजी । । अनुया

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

写.

o主o

2-94

कितिइक्नियुग्धम्यवः न्यादिश्रम अउग्भः । अञ्चलितिय्यिष्ठितिभूड उभाउरदा: उभग्रक्तभी वाष्याः । एक यादि इ उरा ने अम्बद्धानिक स्थान विश्वन्त्रनः । प्रभागन्य स्मिणं उतित्र्ते

व्याभाष्ट्रभागा । इत्रवः विभाष अभगिक विचेत्रवंभचिभ्रिय पिका याभेषद्दः भग्रहभत्रक्यः । भारक उभाग्रेडीकलिं विचालिं नीवडी यहंदि मुियारथः लगमियरीअचीउरगंमडेडी भूभडीनाभा यहारा रामभुडी, भंदेन का

त. इ.

भाभुतीभूगडयाउक एक विचेविद्या वि गणित ह द द द दिहर मुम्बिम ज्ञान विवयः वस्त्र वा भगविषयः स किंक् विभिद्य हिर्भ गर्ग वर्षे वर्षे यहभा ।। छे ने भाभ ज से वह भा नुभव भूज जान हुउभा दुनिश्मित्र एकता

भवित्रभ में निश्च मान श्री मान श्री से क् महभू मिक्रिया भारति वा महिति इउभित्रेजिक्त विक्रमान्य विक्रमान्य ग्नेन्द्र दुश्मानिकं हिन्दे निया कल्यम उठलभिगिक्षण भूतमंत्रिकारवणन्य हिराण्डेरक्रभारित दिविष्णभी लगालाल

070

श्चित्र हेरावण्या हेर्म स्थान हेर्म अ भेष्टिस्माउं मेठा हुं रामापिने दउभभर बरेशियुउंभुग्रवंडभा चर्रांकरभभगवंड वज्यभवनिम्हित्रभाष्टे उपनानद्वर वृत्रे विश्वकरिशं देशक निरुष्टि ।।। क्रिंक चीर्यियभित्र जित्र यहाँ स्थापन

भामश्रीराजीव उपराजभा । चर्मिक भडे वयंग्रमज्यभ्याल्यः विद्यमिभ्रम् भ " अवगरम्मार्ट्याक्रिक्ताक्र उ: मधिदाः भुद्र हुन्ए। । उभन्ध्य अर्ग । नर्मभ्रभग्य किर्म नयम्

oy.

क्षत्रभा वश्चनिवन्ति । भारायश्च (मूंचन)मरिवतीरवें उपया न्यय १३ में ३३: ५ रामस्यायभग्रमभ्यम् भूउ मृग्भभी द्वारिताः । उथ्राप शिवध्यालगाममाउवयभा चर्चित एभक्तमः ल च्याभक्रभदे चिभक्ष

यरंभग्रवपुर्भन्भा उपवनिद्राभम भा । भभावधीय उर्विश्व प्रश्वीरभ र : इरिव्हमण्डवरा भ ग्रन्बर्गवह विभाभवाउरमाइक चिमाभक्षाभ भभा । जभवभिवि उद्यारगाश्चिक क्षित्रव मधिभभत्रवाभभभा । प्रव

A.

040

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

याउधारह विभागां ने उधरार भंगे में में भिमडीदविष्टुउ: गंधरतीक्षाभुर ना । यश्रिणस्याभित्भभाष भित्रमा चभित्रविष्णभगभा । च विमुक्त माजस्यम्यस्यम्

इरेरडे उर्देश्री अत्तयः । रंभिष्वरद अदिगर्श्यय्या देश भेर भेर भेर भेर द्धालः । इभग्रभनीधिलभुरिइ विविधिकः इंग्यन इनिगः भ म्य ग्रभुग्रहे उ उ उ उ उ उ उ अ म च प्रम छंगानीभड़ । प्रशिव्यमिवउउभव्यम

स.

EYO

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विभाष्मिक्षिः समीरेगउपक्रउः उद्ययाक्षेत्रमा । नवसद्रभ क्री कर के मार्थ के मार्थ के क्रिक्ट मार्थ है कि ज नगर्भे है करें ने निषद्भे उथानिषडा च्या इदेश एं भउउभ भड़ र येशिन ए रगष्टे, र ने र रे किन मेथित वानिका

रुश्चित्रमभुज्दशी भभुष्मभभुरद्धिकिक क्षानिक विषयिक विषयिक विषयिक दसुभक्लठयदरंमेक्रक्र ग्रहेमभा ल विषयुष्ट्रप्रचेमभेमेंबेबद्राव्हें उदः न मिरिवायभ्रद्भा । म्याह्यायेवययात्र न्यायहक्तिः भगयविष्यक्षम् भव

3.

ल्या व

न्ययेयमा । उरिलिस्ममन्द्रेष्ट भिभद्विष्ठभाराभिरेमन्भा । भूडेद्रब धभानभान भ्रहान्स भरी विकिञ्च विद्व शिंगम्भ भराश्राम्भ

क्रिल्ड सभाई विवेह लई भिड़े हम्बू ल विकल्ए उन्त्र क्रिक्स्यभावं भिद्रम्ड नीटए वहंग्ड्राइनिएईडिन्यनंब्रिज इभएभउभा गगानुधानुधिउभिउ भाषंत्रज्ञभूरंगिक्यं अदंग्जभंत्रभूक्ति

5.

4.

OYF

उक्रजंग्रवरंग्यम्भाग ३०८ मिनियामी विद्यासान्त्र मुक् इविद्यालम् । भन्न द्वार । वित्वभद्मितिष्ठमेश्विमका ॥ भय यभन्म हैं इ.स्.म्यम् ने स्ट्रा विश्वपित्रिकः । जन्यत्रभभभविष्ट

उष्ट्र उउरभा स्वत्रेष्ट्रभद्भग मङ्गितिमउभभी ल उठ्ज्य शिक्ष चंत्रज्ञाराधिका हुईगभभभद्द विभागाङ्गरमय ल जुक्चमद्रविभा लंग्रेमणका सुरुष्ट्रीय चंबेक्पी इब चमदिभाग्भिक्स्य भ लग्नाग्स्य

3.

No.

244

भाषिक्षित्र विश्व उभक्षा कि विश्व अर्थ रत्यं अच्छा द्रचं द्रचं द्रचं विश्व दभ समिद्रेतभद्यभा सद्युम

भद्र चरेद उचिम्म भक्त भम्म मम्म इं ल्पेर्भगगम् मुउभा । । ५ इर्गिर्भुष विम् अन्दर्भाश्च उदिन्यनं बस्य विग्रं मन्ध्रेलयगाठयानिमण्डं युःभ्रानभ्रम् क्यार्यक्ष

ovo

雪。

लगरंकरूलमङ्गु न निक्द्रिविज्ञम भाननक्रें अदंगुळितिकलं ल ।।।।।विभ जाभावःभन्नक्राःभन्नग्रहभभेष्ट्राः भ अज्ञःभभ्रश्चम् इंडिंग् । भारति विजर्शभिर भूत्र सभारित श्रुष्ट ने ये ब्रक्तभः॥भगाजं उत्रह् इव्यम्भग्रवंद

3 13 दिकउर:ममिबन्यभद्भा । विद्रम र उपमागम रीक प्रमु मिर् भ्रवन लक्ष ग्रे: चप्रद्यार्थिश नजिले अद्व इत्याउन्नेत्रे । वतः । श्वाञ्च नम्राभवर्भण्याग्रयभावय भूषेव विश्वमा विख्या विद्या विश्व १३३

写.

A.

oyg

3/4

म्ब्राणकार भेभयुर उत्रिक्ध भवान यउश्राम् भूउमञ्जयिक व्यक्तलभ य प्रमाभ्य हभ इभ हभ इभ भिष्ठ हिं क्रभ्र भक्तमन्त्रिन एक्रवी कु म कु क्रीभोमार् मह भक्रायगाउ अदोए इ

अभेश ग्राग्यामाग्राम्य मान्यभाग य:गम्भीइमयभ् भयभाग्याधना द्राउम्हरिउंडन्डभेन्स्सि।।।।।।।।। विश्वास्य प्रमानिस्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य रमज्ञानम्हभा भग्भाजुभगिनंपित्र षभीत्रवृक्काविलभाष्ट्रवृह्भा ला।

o42 70. क्रिवर्यने चार्यश्रवर्यभग्भेर एउथ्राठग्राची मयमहाज्ञय उल्हा

अभगम् ,यः । नभाम् उपभव्या मिव रगास्त्रपाउर भाविभाग्रहण्याभा इविमिक्त सवयान्त्रभाषायम् उत्तेक भीयउने भेश्रुउभा । । १३३३ भूरभागमध्य लेकभिन्न हानभास ल्गाउभिण्डंस्थ भन्न वण्डे यह

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CYO

गग्रग्रंबग्रं मालिहां भेगीलभमण्ड निमंदिन्द्रभा ॥ ।। । इस्म न न भी रिभ निर्भाष्ट्रभाष्य एवडेमन्द्रस्थान्ड । उभयभग दीउँभुग्रेस्ट्रहभुग् । क्रम्मनभ्यम् इहिन्भग्रिस्थान्त्र । इरीयग्रिस्थन

उउए कियभाउद्याम्भाउद्यादि लेख भक्तभगी डीउभाम हह्या । यह म बाराभ्यू है डिश्वासामिस से से हे बराभ्य क यउः चरेनामीभभित्रचर्यस्ति इःवरिविविद्याभाग । जथयाभग ही उभागिरहास । विवस्तिर मंडे

े. ज

अभभीवसभाग्य यादिश्यनि भणरामीणभे नमार्वे दिस्पि दिउसे युिं के विविध्यारिभाषित्रेगयभ दिन ए रिए इस्मि विज्ञास उड्डम नका भा किक् चगमेभरेमउ । उथराभगीकी उ शिम्बयर भविर उथयाभग निर्देश

1000

भ गमड्येतिविश्वहभूग्रेवहः ॥ ॥ वित्रभ डिकिडाय भिरमदेशस्य भन्त्र किरणय क्थलनात्र्य गुरुप्रभाग य यम्भानवाभ्रम्यभाषा ॥ उमयं भदग्रा मुर्भागम्बद्धाः भदभूर

ज.

मियी अस्टारिट: श्रीय उभम । पर उभाइत्मेन का भावन छड्ने चार्म हे गुद्रागिभडी भारमंगे भीयउंभी जे अश्वराभागाणायर्द्धिक्रम् भक्ति ।। ।।। गर्मिया वर्षे ए याउँ गाभा कि । क्रमहाभुड्यालिश्रयंगमन्द्रभीम

उभेगनिस्डमीह्यभा उभीभाउभभ **अयुग्दर्भेष्टाये हुम्ह्य मित्रंग्रहम्भा**ल केमीभद्रकाश्चणमुनि हिउशापे नागाप्त इन्मानीदेशिक अडउर डिरभार्ण या क्राराष्ट्रहरु यम्ब प्रभाषाञ्चरे दुउर डे मीराडिहरूइम सीमप्राम्ब

659

डिज्ञलभिंड: भायामभायाः छंत्रांमें: भंद्रेन भूगां व भोशेडिह डिभीक्षगडी ल क्रेश्नग्रेशकिवयर हेर्वाविवास, विश्वयम्वरेग्र भारते अवस्व मिरिस्ट्र रित ए मज्ञ भूगाप्त्रिकिंद्वभू वयाज्यान्य

उद्यावसूर्यभएक्ष्यणम् मुख्यवकाभ नगण्याः । नभाभभभभभभ उपन भागम् । उरियाभम्बा । किन्न अभार लग्ना दिस्य दिस्य दिस्य र्थ लमनेठवहम जभीउएके थिडे बंभेभभन्वभूषेवः भाषवभाष्ट्र उनम

म्.

भर् रकंप्रक्षमगभाष्ट्रभक्त ल प्रिष बगयः भेभगल्याल चुर्वाभेउ री रहा विस्टिव सर्गे के ल भेभरा म्मान्यान्याने अवस्थित उभिन्नि मलियम उउभइनिम

मः भः

अन्तेमदे मत्रकाभभगमाः । देशित श्रुक्तें भंगेभाग्डग्ड विध्या रेग काः यहवयंभूभिन्भव्यानिभन्भ क्रिमाप्त्रम् । भ रहेर्ग्याम् ए भग्ययभागिक इदम्भी उ: व वयुर्भेभरणयुर्भे उभा उद्येश्वरम्

वारित्रभाग्रीमीग्रेचः चंभभम भा मनदेशिक्या मगमय३५। ३२३ चयः " येर एइ भिडेरे इझ भीडे भड़िम गुंचिरम उभेभभगयद्विभाषि भभाजीक्चश्रभगंडिश्य । इसिम CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भिइ िमंबियां ने ने हावाधी खरी च उउउ उथेउए इंडिक्म विम्म विम्म विम् भभडें ये र यी एभा ल इन्डारे में बर्चा विग्रानिभानित्रांमडेभेडलियः इ व्यंभभभ् विद्युष्टियाभभ्वीव

चिया भेभविया रिम्न च मनाः इत्र क्र विशिष्टिया भाषा दिश्र मुख्य प्रवास उंयर्भगर्णः अभुउं भाममणुक्रं व प्रणात्रभभनं प्रदेश जमा

मः

भामम् अभिक्रम मेभाग्न देखान भंग गर्गे भूम मित्र विडमह यम दिमह लंडभम । विम्नारंम्नवर्थभा अवित्रभिउंडभयत्रेश्वरभा भानेक इंडिक्स भिउयभभिभग्ग ग्राय इंडर हाभा कांचेमच्यांडवाःभाउगान्धं

ममाञ्चायुरं वादंमभुक्ते भियदुरं दिभक्रं दें में हल्दें भरा ॥०॥ केन इ ठभद्धसभित्रभक्षां भग्मण्युमं ही डि वरंगणन्भा भन्तिक्षणाद्वेडभवगा एयड्भन्दमलं विद्वह ॥ ॥ ॥ ॥। भूरममें अवस्था वस्त्र वस्त

म.

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्चिमभाभक्तिक विभिन्न । अस्य भ द्रभ ल ज्ञेभू वेय स्वयं वे द्रायवी व यम्बाधकाय्येष्ठ वंडेह्यभहयः चेच अवस्थाने यो ए दिस्ति । भ भिग्णिइवश्रुडण्डिउन एउम्प्रेडव

उद्यागमनीयग्रे च्राह्म विभागाहरू गाव गाउभक्तपाद्रभभभा उग्मीद्रवेद दउ चग्रदश्राभभागः । भ्रम्चग्र राभयमाम्भागविभात गद्वाराभा मिडियाज्ञाभस्थि उभवे । भेड्स रुभिहमयंभेश्रीमुभाउम् अवः भेश्री

शुभ्वभाव : मंभाश्रापुर विभू या अब सा भिया। वः बहरव समाध्यम् धियाभव भभ " येच बज्ज अभीगे ह च रे ठ र छ भि उर्हेण्डिंभयक्षये इंडि भविग्रहाभुडभन्न चिन्यस्बे

भद्रज्ञसद्भिष्णः । अविभूक्ष्यवि भवित्रणभिभव्तभमउदिभाभवीगः इस । उपमाद्रियोग्य डीभड्रवंभ भेचभान्यक्यभागामा बयभड्भ वद्यगरगाभ ललभदीवय्डीभ

मनीरउभा, बामीएउनुमारेगीए वज्ञनील इंग्डरमभेष्ठर जिल्ल यउभ्देशाओं ल उद्देशकुम्भार्क गगाइ शाष्ट्यभू उराज्य र नभीय चभभक्ष ने वयद्वध्य ज्ञान अप्रभइक्ष भ । युष्डगुजभीरोक्सविभूयभा

330 न्धवगुउ। देवेइउधिभद्भदिश वर्गडमामुक्रमिक्षिक्षिभ व्यापे निक्दित्रम् अर्थः ले उत्हें प्रवि भाउँचे विष्ट विम अविमभन् उभाग ्या अवस्थितिकार्यक्षेत्रहरू हेड्बर्झ्गभाभा । यसीमित्रिय

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विवाधिष्ठ भाभुकुवभुक्र ३२२००० यः उपेपीम्भीयउस्उदयाभ्रस्भ भड्डानयत्रिक्ष " मनुभाग्रेष्ट्र रवंदरीइउंदै स्वारमभुधमं भविम भा विगण्ड इरु इविभो दिगच डे इ कित्रकाभड़िक्ष्यत्रयः " यह

विद्यान उभा उस अक्ष वर्ड भमा उस श्चित्रयय्यम्बर्भक्षक्षम्भीयग्रभयभा ल किन्भःसंभाय उभामद्यगयभाज भेर्भक्लारियउय उक्तइरियउ म ज्ञान का या या भाग ने बन्ध

090

श्रभुगभिडिविमेधः छथगीरंग चिरारभंभभःभीयउंभभ । पत्रेत्र भाइदेशेन चर्नेः वर्णमहुभाग भीयउंभी उम्महर्गमा न त ले दि भरेतिर्देशः सर्भा । । १६३ वे के न नियम् न के भूउभगारेय

विठंगू हमं भिद्यभनभुक्भनाभन सुभी भराभरेअलिडभंगभं हों मयाचंडमयस्याभा । । । वेडें "अन्मर्गंश्चरयतं रज्ञाश्चरं क्रि दंश्यीरव्यभागभागं भिंद्यहां भे

279

के.

4.

विउंभन्नमा में द्वाराभिकां भी लिमम गरंकिं अंहमक्रकल्यानामा अधिदेर प्रमगण्य इंग्रियों का प्रिष्ट हों भेभक्भा दम्बार्य सम्बाधिक स्थानिक स्था यागड " छेम्बिंदेउ ने म्यूर्वण्यीभ द्यिणीयडे मेर्बेमेर्ब्ययिद्धयः "भवि

दिविभूगं याञ्चित्रवीतिव चण्वेष्ठ श्रुम्भाजा मण्ड्यानियामुच "च्यं युभाव परिवेद्य हुमा अभ्य हुमा अ भिड्याध्वः " चभुगवीररंबडेंग्रेगीषी उभर् : डिग्मण्यभूभीकृषः । उभवड

600

वभावभिभनधविविद्यम् भक् क्षा कि विश्व कि वि विश्व कि व भारमहा इस्टाइस्टाइस रायल्यन्त्रीज्ञाग्याङ्गान्य भ्य उभाइ सम्योग । प्रमास्या विश्व भगभादम्हः मीयः यम्भभकः "

उंयुक्त का बिना ज्ञान का सम्बद्ध व मीयप्रमहालेउन ॥ ।। एवं भन्न के मी उन्हें भारत्याभें भावजीत्र में दें।। मेर्मानेवडनं ग्रूमधिभन्भाष्ट्य र्भंतभारभा ग्रहम्यभय्यक्त्रम उं मैराउक्शिवियं नाराउइविक्रिश

A.

ONE

क्रिनंदिकलंडलद्धः भरीउगारे।

यक्षभ्ययदिविद्यान् विस्मन्ये। लाजिन चयमनभद्रभेष्ठगण्य उबार्डियाई उमारिम विभाई भयभागड्य भूमक्य य उप कि डिक्क भदंशि । भंभभित्वम् धार्ये

०१५

मुख्य उरुभ्यमभाष्ट्रमभनेव अञ्चर " भाषायभं इस्र भुष्ट्रभ धंसेभद्वायय विश्वयाक्रियीन्थ लेन्स्रेभाभूती " च्याभूवि:स्वस् भ उविद्यालभागमा चार्यस्य यहिउभ्रहेग्रमाडिमान्छ न मधि

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

द्यारिभइडिंभभड्ययुग्राहिः निग्रेर अध्यक्ष उपम्पराद्धि उ भा । मूहे चयुर्भे मूच् । उउने इक नियं उर्जे भूरे बहुउभः मन्ज्ञे सा भन्द्य ग्रेम् अभूग्रभः भ उत्रेग भुभडभूर उक्रद्भिभग्रभ । इभ

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मग्रेभवीदं अधिम्भग्रभिक् उभा स्पित इब्रुवयगर्भगेद्धिम् ब्रेविम् स्मान ठकारे प्रमार्थि उर्गे भारता वयश्च प्रमार वयणः गथामभुभद्दहराधिया भेगनभने नम् यस्ता ल डहराडभार भिक्ष देश में दर्ज अवस्था है।

उम्बन्धित भागित्र अधिति । हर्म लल क्षेत्रीर भेक कुन है अरेब रतियं सम्भन्भहणभा मीक्नंभि दगरं भागमभूषा ने निद्रारं भहन भा एक्रभन्न मण्डमक्लभापक्र कुष ल्डिमिडारी नानाग्रहिक्षिडेशभुडि

077

महल्लंभमा लल उड्डर्भड्स भक्र हैं रेड़े :भग्रमिंड चेड्ड प्र वस्त्रुगत्तभागामुउङ्गीभणभ ज्ञान्त्र प्रचित्र वार्य प्रमिश्रीलभ भूल एक्राइभ्रमिक्रंभ्रमाईदेमह क्लंड्भ्रम्मालाला भिन्नुभग निहेउ का

मीदिविश्वम्यग्राम्थाउराष्ट्रिः भ गत्रभात्रमिक्छिष्ठभूत्रहरू रवस्यः । भभमभागः वस्य क्रियक्र विमययप्य स्वाप्य स्वाप्य इह्म वर्डिमभाय चेयाउउद्गिष्य ल नीलभूमारः । यद्वितिउभम्बर्य

093

विष्ट्रामिडिविञ्च अभक्षिम्गः इ वीष्ट्रभाष्ट्र कि जीन गण हु रंभि म स् विविस्ताय । भन्निमयगर्भम्ही कडा चर्चिया स्थान भाषायभूमभित्रिधाभयञ्चाउँकायउ नयायमञ्चः ॥ ।।। विक्रंभेरज्वान्त्रं

गलवर् अन्त्रस्य क्ष्ममं न्नार्ड विद्वधिउंभन्ति गरेंग्र एउक् भिद्यिभ निरंगभाउपरुद्धभक्नमञ्जाक भानाभुरं विक्र्जेभिक्तरकुषमध् गरामी उन्यंबद चं मक्ति श्रुवन यं

मिविकडन्थुभा क्रम्कभाधनाय वंग्राउरज्ञवरुं वर्धि देनुइभागंभनभा भम्द्रभागामाम्य उपम्पान्य स में विग्रवानभङ्ग नम्भान्यभाग्य र्शिभनुभा । प्रीक्णभिक्राणिक

पभीवणभगज्ञेशभगण चभाभ भक्त इंडिसिंग इंश इभा उभा उस रूड ल यसण्डरङ्गबेगद्धिस्तिषि र अभू हे उत्या दे । । विश्व स्ट से हे उत् द्यभ्उरवेख्यः ॥ इ

व उरिक्रियानभेरयिन विदानपाठ्यय स्थान्यमंग्रेः । थिमुहित्तं कं उमंडेय विश्वविदेश्वज्ञचाउभड्यल्ड व्रेंग्ड्रंड किलमेश्वियवें इंट्रहल्भभग्यालम् : " इस्क रुभिभरूभग स्य स्त क्या स्य वर्धवेद्या विविवयस्य इत्र

चयगद्भण्डान्यपि । विद्वारियाकोद उक्त निम्बिन्न निक्य निम् भूग्रेवीग्रंगभड्डेर्विकाञ्चिमीर्वेग मभिविक्तं "भागीभक्रीवक्रिवेच 5,यद्धभूतिक्रभविमभग्रहाभी सन् युगगङ्गिठचभात्रभडीभक्र धुक्र । उत्रे

नह " निर्वेद उन्हभी यह भी यात्र भन्ने भाउभुरक उनेक युक्कविषेमा राष्ट्र उच्चाउड्डा नम्भउभए ५इ: " च्याड उभागग्रहाराष्ट्रभाज्य ग्रामान यामिक " चार्यहेउ भेगे हिउ प्राथित मद्यानिः भनेग्यक्षभान्धका ।।। भने

नभूत्रक्य जुभगवजिलिक्यान भडराउँलाभ महस्रयद्भगय गणगभुउ य ने इभ्रज्ञय यक्षभानुबनभूरायश्च दा । के चन्त्रिक स्था हो विक्रिय है लमामुडी मङ्बञ्चद्रउचित्रकामन्भद्रज इन भर्भायङ उमेर्डभश्चिक्रयाहराभ

भ वर्त्रभाव वर्त्तः जभगरेनेभे भी यक्रभीक्रिमहर्वक्या । उदिल्थम् ॥।।। क्विषद्विष्ठ । चेणभेमं । केविष्ठम चर्णना वियंभभन एं दर कि क्षानि के दुउभा मह्मात्रभवागित्रयुगलेक्भ

The state of the s

मकी निरूड से बिज्ञ गर्य मुख्य भारत है से बंहल्डिंभसा । विश्वलक्ष्मलवर्थभा बाजिभडं मण्डापण्डमं भण्डा अल मनंदरितरमङ्गिधः श्रीतिहरू भक्त विक्रिधें उपभवरंगिर भुः भग्नि भुक विरूचेगलगण्या जनगडे जैसे हल्ले डे

高。

शिश्वः यभुमम् इम्बिन्म न्या या बेड्र वर्ग विश्व में भूषि भूष स्था । उभन्न विविद्या उम्मायाय येथे व्य मंसी यं भण यु सके विभाभ हि किन इमिडः " यश्रदीभक्षभग्रज्ञा यभाग्यभूगयाभम् वि य ग्रिया मध्यि

बीभ्डक्षकमणगड्यज्ञीतिम् "ड मभूभियभिक्षिणे मभु भेरे यह मैर्य विभगित उन्ह्रभूभाइनक्ति । भर्मभागमभाष्य इ. ए उत्यावश्राहम गभष्टेयङ्गारेङ्गीम्। द्वयाभः च्राद उद्गरायभूगद्धः भरभेभम्भवन्ति इ

वि: " "भभग्द्रां देशगडे विच देमह इर्ग्सभिभागमन्स्रमा मया निर्विद्व लक्षेत्रदेशकार्यात्र निर्मात्र का विकास का का विकास का व व्यवःभायामाया १३ व व व व श % इउभयभा अयभा अध्य रिभमभः भूनभग्नेभवने भट्टः जुर्बर

034

य.

37-0

डः भनभड्रिक्षः राभन्सभप्याः कः ज्ञ :कंभड्ड: भमभगउभितः किन भगविद्धः । । भ्राःभाउभवंभिण्या यउभदेश्वरयविश्वर्यमञ्ज याभाजि भवउरनभग्रह्भद्रभु उरवउरभञ् न । इधामें इभग्ने मभी बंडे विद्

विस्भाउभावाभाव । वाभावाभाव वियभन्ति इसंने र भूर भन् म् षः " उरंग्वनिभह्यांभ्य विभाउर नयाउरेउभुङ्ग मण्डिभुद्रेवरंभरंभि उराभद्दारीयभिग्नेय रेमिरः ल उर्जि मर्गेन्स्य ज्यान्त्र नस्य वर्थ

इ.

A.

-1 25

भीकृषः यः भाक्रिकानिकितिनिक्रगाभ किमक् भिन्न मायायायायायम् । इंडम श्रमान्यमिक्षियभंद्र द्विति श्री इ डीयभभुनिकरमण्याडिक्यम् नभडयः : भड़िकः । महिक्क न्वडिक्र नथ विव्यवचाउँ छँडी स्थित । चे इस्रीर

373 विभभान उन्हे विद्यान भागः भुद्र एवस । क्रिंगभुद्धान्यभूलम् मान्त्रीयं भीउरभूतं अगरं राराउविक्षित्रभागा रष्टाभित्रं क्भगभ ग्रेष्ट्रं भन्न राभडी हमित्रे । पर्क मणन्यहं दंभभं जभम विरंभारां भे खे हम्ब्रेडल गलगड्याभिङ्गित्र आशु

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

30

N.

विविद्वराङ्गावयाच्याच्याच्याः च्याः व विश्वविच्याविविद्युभेयद्वभूगरेष विभाग । यः अञ्च यवयभन्वीयभेशः भक्षत्रयिश्ववैद्यमभाउ येन्डभभूभ दंउभिद्वयद्गे प्रचिद्ध द्विम्हभः डा ल उभंभेडारः अनुगवाधिम ठउभूग

हेल्चभाषभाउन चश्रुर्ने ने नामिडि वज्ञमहर्मेविष्ठभभित्रिंडरभद्र ॥ उ भभागरहरू लश्च भाव गर्देश ग्राव भा म्यम्बरमः राजायम्भयभागद्व भेत्रणक्षित्रभाषरं चभक्र उ । च य्विकायभगवायम् इ उत्र्यविष्ठः भ

भव्उभव्उतः वणचित्राभ्रमणः भाउम्हर्गयलभाउभाहल्डा लेलः जयमारमा जिया विश्वास रिंग विकालगर्धिका । युर्फ्तियेश्वामाश्र विनग्रेषे अडेनेने भगना मार्थिक उन

37+ नभाकंत्रज्ञथाउन्भाष्यके वयत्र राम् रभाग्रहरूभिद्ध । ज्ञा कि मंद्रभग्रमण्डेन मिल्ली गंद्री मिनेदर । श्रमुद्रः दिवन्नेरभणकाविस्भाष्ट्रमः म नचरमार्थमार्थमा ल वन्डान् दुउभिन्न पुरंभयभ्यनः दम्याभ

A. 1

भिज्ञ उभी भ्रायुश्वित्र नीर्मा भेश्रज उँभेगउँ में ववं अमार्क्वा । युवं दग हैलगारी भूग है युवे विमेश्व बन्भ जः ॥ युरंभगिम्रयाभण्यभम् यत्रभागित्र न्यायम्भा । युवंद्रभुविधम्हभू किर्विद्धरशुराष्ट्रिकः च्विद्ध इभाग

379 ण अं उग्रंच वाद्विधा अवभाग्याम ल अधिक के निष्टित होते हैं से स्वार्थित है। निभाव इन इस्थे उक् निभ्ने ग्रंभे हमास भवंसभू अडिभी भ्रवत्रभंडिलभीव विज्ञ भेष्रवंभग्भरलभद्भभ्याः॥भविष मयभद्राचराराभाष्यभो ॥ कायव्राभा

त्र.

0/00

अठवरमीयेजिद्धरुरंग्रेग्य अ शुभवरिष्ठशुरु विगितिनेवरू भ चेनिनज्ञ सम्प्रस्थिदिनिनजः भ भाउँ निविधिनदम् निम् मुर्भे उभका जुनभंचितिरतिमज्ञ प्रेंग्डभराचित नज भूरभित्रभूरभित्रभित्रभित्रभित्र म्पडी विष्य हिने अवह ने वेष स् ज्ञान्त्र विश्वजीविग्रुविभा वभाज्ञभूतभूलकभ्रभभञ्चा सञ्चारं भ्राभाषा मुख्या म्या स्थाप महिभाजनी वेदस्थववी विक्ष तिशिष्ठं भन्ने क्षा हिति सुद्रेश है

इ मुभ्ने क्र भार मी देश डिकियं एक्कोर्भिडिये मुनीम् भिथिष्ठ वजीम् अवहेभार भूरुभउँभे उसु भुजद मिथिविश्व वडी उभाग्रिभिविभ्वडी भुक्ड विविज्ञंड एउम्डिविज्ञं मिभिविध्

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भित्र विज्ञ नैयाउ। रज्ञान अधित ले नभेनणय विस्तृत्यणिक्षण्या क्रिरण्य भक्त इक्रिमरीरण इ भारियाउँ यद्भान्यरायश्च क ल ल छंत्रहेत्रहिभ्राउमें भभभ इभद्रका : इफिर्मा विश्व स्थ

स.

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गञ्जीगरंभभ ल चत्रत प्रद्रतः विद्र चंका भाजमंत्र भीवडं भीडें महरेडा मा गद्रिक्त के विष्टिक के किया मा विराज्यभित्रं म बीड्स्ड म विरा क्नेबर्धार्भिभावत्रन्थितं द्रि गणभूमकं विद्यम् भड्सकः भी

योडं दररिवड्मा वडमा ममीम किन्तुगंभुगगलभाइडं बीट्टाभार्न भभउ न जाना स्वापन पाउंक् का इंडिंट का गाना किक्सी मंग्रिष्टरुभेभक्लभ्रित्र उँ हथ् छ है भूमें अधारे क प्रभंभे : भूषिउ CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गुल्यनेक क्षण इंग्डेंग्ड्सभ इंग्डें। विद्यान्ते भक्तगु लगुउं भेभक्गा यते रज्ञक्रेभीउरभुभज्ञाभूष्यभन देशकाने हाण्डमा ग्रेमा के बादमार्ड इने उद्यायनवभी लगांडी ल केंबेड्स उभूषभक्षेत्र च गुंय हु र उ उ भ ग य ज्ञा

387 नः युर्वभंग्रेष्ठ्यस्थाभाभीद्वीण उग्रधानिड्डे गुड़ाविः " भङ्गीभ वित्रवेत्रभूत्रतेयश्गीगभूतभावा मभद्र चड्रभाषायभाष्ट्रानेख्नुउ **उद्यं नक्ती विदेश विकासि ल व**ह्री नयगःभगवीदभयज्ञभनविज्ञन्।

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धित्रभविश्वाभी उंभाइङ्ड्यूयः भाराउंभभुगैराम्बिभनवर्डे लेउर र:मन्यम्यम्यभग्नःमयम माल्डिनमा उडेर्भे उन्नेविभग्नर चरभड्डामडीभुगभाः लाउउइंभ छि भिरभी उभार में जैंडिन है भिरा

लिन्धं प्रान्य दिभाग्य विभाग गंभुम्बाभदनाश्राम्भा । । ११ वेड विभगमानि हिन्द्र नद्शे धरेन हु एवं अउथायभागी मेणिनिशिभङ्गाउँ क्रिक्डं ग्रमें में मानभभक्षा विभाग चेउर्ह्य यउमिति के भेग लिए इं

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जियो में प्रकास निक्रम में जिस भारमेश्रीमा द्रान्य झैंडरम भिराध्वमभुनं उ राय द्वेष् भिउभुरं भवितं ज्ञानिस्मा ॥॥ यभिरालभित्रितंभाषाय न उभ राष्ट्रीयहरंग मिश्र यंगीरा लेहने कं

मालिश्चित्रकेष्ट्रम्ब्राम् भा भ वक्ष अः हरू व ः भाषाय भनेल्यमभभगन्त्र चमभाभाग थक्काभाउँ हमा अवश्वा उउँ म म् न हमाउम्मभागभागविष्य इङ्ग् : एषामहण्डमण्यः च्राड

093

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इविलिइ च्छा है ने इस्केल विमन हरें " एगरित्रचण्डभाष्ट्रातित्रक ७ भू उभु उकिराभ: उग्र उत्तरमभिष्य इभागया भित्रीभुद्र उत्तर है । । । भवेनचाउयमभगाउँनभरभदेनभ ाष्ट्रभाषायाः किल्विमस्य दिउसील

हभागांदिउठविवयाल्यांच " ठम्इ:भेषाभाष्यभूभ्यानाय उद्देग याउमजरीध इक्षड्रेक्य उरुडिक् यक्षभुभक्षेत्रिभीतेत्रकः । । ।।। 5 हुद्वितं भगभग गर्में भाभा व वे ब्रह्म कं र इस्मिरीउव भेभित्र गर्भित्र इ

रयसहभाने सन्ताहिद्रभिराणभूद भिउवराने हुभलाः मिठभाने राज्ञान हायतं स्रिगलभादिउंदे भक्ति इल्डमा लक्षित्रम्म इल्लीम क्रमण लगाविज्ञभा दशुउद्याजः। भारतिक अधिक विश्व विष्य विष्य

उक्सम्ड भडिंब मस्पेक विचय भूरुभंडराइले विश्व उभुत्भीवंभग्नम राम्भड्मभङ्ग ल ल जिल्कु यक्षेत्र म उरुभुलग उ: मेबी कमं भ्राक्षिती धभनशे भरह चय्य हिनकत्त्र १भ इत्रक्षक्षय या बहुन धन्त्र गणा भन्न

903

छ उड्डायर मेर गर्जे यर में भर म उर्वण्यक्षय उर्वण्यक्षय भ च भागात्र में भागात्र प्रमाश्वर जीविश्वमुगं चभागंगिअर भण्डागमाभाभेभे चभाउङ्ग्राशुडी ल एथा वसा भरा भेवा गड़ राभित्र लभ

397 भम्यभा । चिल्लाभाउवच्याउग् इंग्रां विभग्नम् । यहाः । वालि नेमलियं मलियं मलियं देश्वे छगभविष्णभुजं बर्गितंत्रवरणितं बन्ध्यानीबंभे चड्युडिंगित्रभ एउम्पन्नी भूरेन्डबिर्भिर्म्हबिर् 000

दिसाद्य साद्य साद्य साद्य अवश गःयुद्श्वनकल्यः अन्यश्वनकल् उन्धानमञ्जूनकल्य प्रकृत्सन कलाउं च्रंगल्लनकलाउं कार्ल नकल्पा अन्द्रायंश्चनकल्पां इक्ष यह्नकल्डं भव्यह्नकल्डं

क्षेयक्षेत्रकल्पज भूग्रेय मगर भूर भडें प्रेर महब् इस्थ उ महभ रार्य भुष्ड समबायभुष्ड भिरुवभुष्ड इ उविभान कर उपयोगन समर भ्रान्त भ्रमेक्यभादा भन्नेवैष्ठमन यश इच्च च्छायश हायह ब

9 ..

न्यभुष्ठ हर्वन्थ्रभुर्यभुष्य भूर भउविश्वाल विभउवश्वाल ज्ञायर बार्यर गामिट्रेस । क्रेन्स्र दभ्ययं ब्रह्मद्यायमुन्दा भ्रम्प लभउच चर्मभिक्रण्य ज्वभंगेर उत्य दिस्ति क्या विकास निवस्ता निवस्त

य " छंसम्भविभभाइएं के विकास भूगेरिउ: द्भुउण्याचमाश्राण्यभग नःभीयउपभे ।।।।।वनेनभव ॥वद नः एक् बद्भारी भीय उप्ती उप्तार्थ रमा । देखिला वस्टिक देस से भी ।।।।। स्कर्महर्भक्ष गरीउन्हर गरिस्मिक

3.0

निर्विक्षणक्यानं भीउभ्रेग्यउभ्रे नडइइम्लभ हेक्स्प्रभग्भित उभागभं सम्भागिक सम्मान्य सम्मान्य लंडभागामा केंग्रेक इंड भिड़मेंब उपमं नीजकारंभगं वेमहकाजि प्रमुक्यमं विद्युज्ञंभित्रियभा उपरा

मञ्बिकक्रमित्रंड भञ्ज्यभू विजे वेहें देश में ब्री भवम के मह्र कंक्रांडी ॥०॥ छोउड्डाड्सड स्केरि अम्भिपद्धाः उरंडभगं वण्यीवी भुभने दर्ह इए युगे बी छं भग भुक भा भद्रमभाउभक्र उसक् दिए भ

A.

रेडिधिउभा रिक्डीवरमभनेदरवं "देशहरादेशमा ।।।। इं एयं भड़ राभार अउंशिलगर्डिक लगरी विश्व हरू । विद्यभग्रम इस्मा ल्यु इ विविक्त भ बङ्गाच्यामुचे यामभुजभाषामाव अंभील उर्डे कर्गल डिविध भाषा श्रील उयं उद्य हिहि: भाषा एक मार्थ इत्रीवरी क्रार्थिक विद्याति । भागवर्थीम बम्भेशक्रिकिस्र भूजी भाषिक्रमभूषी डिहि: " भाश्रिकिम् निर्मित्रियश्र रंविष्यभूगंधयभुभावनः । उउनि। उ

6.0 E

वित भर्मे ज्वीभगभगी वालिहन क्रिनीविति ग्रीन्था है बार न यह के विभारमेहेमचें रेग्रेडे एडे एडे एडे एडे उद । इत्रेक्शिश्च इवग्लेष्ट्रकाले नीरमः अम्बन्निभन्भा । उउधानम रभुडींधरादिर एवड हि: राइसीव

विभव्या । यश्चन्त्र महायु भन्नािकु: रह्वः चभन्नाउरेर दडा भानेविश्व मिडिवः श्रुप्ताराय वरी चउत्रदेशस्यः । । उउत्रः भ्रिया रियासभासभासभासक्षेत्राभास्त्री अधाकुरा । चयभूभीभातिगाइन CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राज्य विक्रमा भाग विक्रमा विक् डिस्यासीमानेयान्यः महेर्द्यान्य यडीकलकलिंड एउँ जा भयाभ डिथाभडिभा भूमिकि इस्पेहिस्स न्याभाभभाग । वाष्ट्रवाड्डी विज्नेकुउभे उर्गिकि उभाभन्ध

409 डी । भाभुङ् विजे जे विषय भागभ री: भगभग उन्नग्रम् ण्यम्य मार्थे द्वार सम्बद्धाः स्थापति । स्यापति । स्थापति । स्यापति । स्थापति । स्यापति । स्थापति । स्यापति । स्यापति । स्थापति । स्यापति । स्यापति । स्यापति । स्यापति । स्यापति । स्यापति । स्याप वस्य । । । चेनी मुद्रे के हुए । विविलगलगं विद्युगंगण्डे। सम्भद्धम् ज्ञाक्यं विविध्यालयुरं

विष्युं विष्यु इलगभित्रभित्र एउभेरे गुडमें व नुष्मा क्षित्र गुभु उदेशक लंड किक्टिया पा महिला पा मिट्टिया इक्रिडियम स्थान विश्व भी भाराग्याम् । विभागम्भाउम्

उठ स्मिष्णल इस्मा ठडेनभ हिभित्रियं विभानं मुद्द भारत्य प्रस्थ द्वयंभिमभ्द्रयेश्वरभाष्य । भैभभंद्रे द्यानस्य अस्ति स्वा उर्देन भरं नहः क्षीरंद्यभग्द्रहिर भिषिया रहेन भटे ए चनार्शिभूड

3.0

信。

उभेरक्षण्याभेरक्रभा ठउना इंड अड़े विल्ड निर्धित विमित क्रियमा गहेल्ब यण गडेर नुष् काडिलमन उडेनभरं " वेपना यश्यनहुउभुउभूरभाउः टउ नभरं " म्यू गुपर कर इप्ट उभर्भाड: चम्राभर्डियणम् इंभर्डेभ्रम्भिडः उडेन्भरं " म्यू पिश्वेरभेष्ठरू अवहंद्य भिनद्य भिभूरभितः ठउँ उभरे । भूगवर्ड हिमग्रुवीर्युः दिन्नित्रभिष् भिक्ति : मणनः भेभोत्र विद्यवराश्च

9.7

भग्ने मुख्या । स्मान्य । स्मान्य माने राजन माने माने समाने राजन उन्ने देनिक्नियक्तमन्त्रयं भारत डीअविनण्ड अग्रिमा । यभविनन भूग्रम्भूगम्यिभन्युर्भनिम्रम्य एभडेच्डभड्याडिं भंगग्रहीं

द्रक्तयाभि । यग्रहिन्द्रेगभिनः भुउ म्यक्रिम्भिनम्भितिः च्डन्स्थ भन्भा भिवन भेभग एन भिदं ठका या भि ॥॥॥॥भीनभःस्तर्य एड्सर्य गयभुष्ट भभक्रिण्य चभुरगुन्द मैरिविभउय भाषाविभउय यहाना

3.2

न्वरभूमायभादा ॥ भभ/उद्याभ्र वश्चान्य के वा कि वा विश्वास्त महलभक्षा द्वारा भागान मन्त्रभत्र मुद्देने: भाश्रात मह मरे श्रीयं श्री उसे उसे उस मानाड विस्त्र स्टिक्ट के विश्वास्त्र के विस्त्र के विस्तृ के विस्त्र के विस्तृ के वि

म्राम्भाम्भारा मंत्रमी । क्रिनी नाम गरंभित्रिधि अंग्रह मुरंभाम इल्इभाभाभा भ्राभुरे ७ वयमि नकुमनिभागमन्भभद्धाल्डभा॥॥ निमंबरीश्वद्धांत्रात्रमुठं भक्तभुदिश लग्छमनः भंक्रनुग्मरितः ॥०

किसंबडी भारय है उसंभू सुभू समय बा न्छानंभभक्दं छुएक्मभिदित्वर्ग रुयाकें उंभारभु उं हर रडी इक्र वर्ग मेरी भक्त रामित्र रामित्र रामित्र रामित्र र वडा । एड्र अर्थिक इस इं हा उर्र यहरूभाउ इन्धरभागयहन्भाग

मभीउँ । एभभुग्रेचित्रः क्षिम एडिविभी भाराभभभुनज्ञ दह्य अ भग्भउभः । इप्योचिहरः ममभुमी ववीउभः चमचभग्मचभगिवरिष्ठे ि:माडिश्रिश्रिश्र चंड भन्न कि इ.मज्यः भज्ञेमिठ्यस्त्रेभगयभा

900

भूवन उपा मंब्रु रापाविश्वमध्य हः मंत्रेष्ठभित्रभव्यक्षमञ्चर्यक्षमान क्षेत्रक्षां रज्ञवरुं भरवर निभंगक्रि ज्ययं रङ्ग्यम्भानाभभाउभि भिडेरइणर्भुभुरुओ दंशसे देगभ उत्भिद्रम् दिगाले चित्रं वर्भक्ग

र र नहर युर्व भूद भिउवम र रिभ दंबमभाउभा गलगमन्द्रम्योठवउ भविठिः सन् उपुरुक्त लगाउँ दुष्टा स भिद्यंभेभा भुविज्यम् छै : मन ५ दू भ्रम्भ न्या । मंद्रिक । मंद्रिक । मध्य । मंभ्रम नः भर विमध्य (त्राग्य :

利·

200

मबभाउश्रथयभश्रमंभः मंबेषदभा भूतर्वेष्ठभू "मंबेण्डमभूग्राचे नश्मनगुरुगीठवं उभुगिर्ठः मंत्रे मभीगडिंगेमंत्र महिः मंत्र डकानिभेड " मंडेपिक्रिडिंग्नीक न्सुमन्भिङ्ग बम् एक स्वाप्त मा

मचभुक्रंभुक्जिनिभ इमव्यक्ति महिका उक्प : ल मंत्र क्षा भी विशे अच्डाउमभउरिकं न मर्यन्त्रभ म व्याभगीवर्तिनेठव व मंबरणभग्य रिरमुलियुः लालाछ्ड्यांभेथक म्भुरूभभगलं मण्डेश्वराभाश्ये मह

703 A.

इक्षनदग्रहिषउउउंडस्थाः भग गभा मजुर्हक्भनभा लिमायुउँमा भंगणनेमकं क्रीकः काष्ट्रनक्षण मिट्राम्ट्रमहर्म्ड्रभग्रामाम उँड्रवभिंडग्रेंब पुरु मभागि है हिचन लभुमंभः मंत्रेन इन्हिन्तलाभः म

नश्चापारिविद्यालिड । सन्ध भेठवं उद्गाननः मंत्रेगुण्याणः सथ भाउपहाः मनः भुरुणिभाउपहन उमनः भूभ श्मभु अवाराः लमनः मद्भारा प्रतासम्बद्धाः भारत महबाउ मनःभवउष्यवयहबाउमानः

A:

EOR

नः भल्डे हर्ग उभू रहः मनः मा

भित्रसम्भः ॥॥॥विज्ञाहिक्स रुपंभकलल वज्र उड़िश्व के उपन रश्हेरश्रद्धार्भविविच गुलचुउँ श्र इनेड्रहरूमा नज्डेहिं। अग्लेश उभभागिभं या रच डेड एक भन्नभा नंभूमें अल्भाक्यु उंदिभक्र

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

JOE

लिकल्डभागाना मंत्रे ग्रेग वित्र प्र हर् उसेभरभुडीभद्र गिरु सभा हिभागः सभू गाउभागः संवित्र हुः भा जिया: मत्रव्या: " मनः भर्थभ्र येठव तमनमवतः मभ्भत्गायः म इटहर्भुडुउभुड्भु:मंबेहर्।इभि

उरेडवेंच " सर्व चरण एक भा भुमनेदिन्युः २मंभभूतः मन्नाभ वभावनग्रमवः अवः हव उद्योग भः ल जिमिष्ठानक्ष्यस्थितं अजिम् क्यभागंत्रबीयः माधान्त्रीयशः गिर्ड । उद्येय (क्ष्याभः ।

चित्रकारं शिक्षणया क्षिकरंभार एक्षान्यारहरू: इन्मस्यभ मगायभष्ट ययंभाउ सुशिहिस गातः । ८ डिएक ए नवयुरूषः ल रहमने म बेश्यक राज्यादि मर्बेह गानै अनं म बिउंग अराइएं इंग्डेअभ्भवंभारं

भग्मरलभड़ेभूभर्ड ॥०॥ ग्रम्बर् वीविदिशक्ताः ।। जैमंत्रे में वीविद्य य चंभेठय जिभीउय मंद्रीरिक्श्य जिनः " व्यक्तियुव उपित्रभत्र यसी भमने मडी ग्रम् भव्यत्रभगभाविकत्रयद 'विशिषणभङ्गमीः । क्रथमीविदि

भाउतः । यात्रभगीभेवार्गरेत्र इधियाभूग भने वनक, एभड़मउ ज्ञानिभाष्ट्रमा । गाँब हर्गागाव ५ दुश्चक्ष नायभगभ्रम्मभूक काः अभवागावस्य नाभे इड इं भी ह्याभनभागिय दुभा । नेउ

यक्र एक इंट वस्त उभे शुरुष भयविउम्बि उनगयभरयवि उपनगरिभउभुविगरिन्य दे नुः गरीहाष्ट्रमायजीभनरापेष्ट्रकारिः विचाचिर्विविविव लेडभडेगार्डन करंगी भी महिन्द्रियाः गाईभाग

300

निल्युमी लेड्डडेमिडरोरान्भान चित्रमार्डस्थर में मद्रास्थित एम जिक्यानियार्थे भारतिया । वर्डे अभिवर्ष से से भी देव से प्रति है है उंभगन उनसंभगाउँ हम् ५४भि विवयगं अवीगभा ।।।।। छेन्रना अ

वंस्त्रभरणभंभं भजा विक्रथभितं वित्रइशा भज्ञामाभानायण्डेयमार्थ भूर्भडेर्वववंडर्भि ॥०॥ क्रेन्क भड्मडक्मम्बीक्रक्म ल्याउन्सह गाँवेण उद्गा भीष्टरभ अस्पा उद्य भनयाग्य उवीरंसउपायभञ्जा ल

303

या सुगक्भाउयभूम मंभ या दिय क्लिक्स्मिर्मित्र अधित महा ० भिनीवानी भव्यक्या प्रवान भागमेश क्षेत्रमेश्वभाध्यम् इतिकिकित्रहेतः "याभ्रमक्रम्

विभूषभाग्डमवी उक्षेविक्द्रेड बि भिनीय निएं देउन ए जुड़ाभ देश्वरंबिद्याभभभित्रहार्थेश्व वंग्लंदवीश यंनगमाडिम्बलिश इ.७उभे उमें विद्विधारियों भ ज इ.ग्रॅंगराभाग उध्या इंडिंग न्यू

द्विभाज्ञी ल्या भगाय्यानाभड वह्माग्यभ्यंभिकी उम्मण्यं ण उपाण । उने रिय भी भाने में गाउभ डि: भन्छे हैनक वन्डा " भूरूपडि उभय उभू एउड एउ पर रे भुभन भुभानः भवद्वरहाद्वास्त्रम्

भियमिश्वपश्चिभित्र वर्ण । वित्र भःमज्ञाय यभगद्यग्यभुष्ठः क् नगर्णियउचे इध्रमरीराय उग्रव मन्य कायाभुराय यालभानुवर भूराय गागा ज्ञात्र वरु हुमा मुज्ञ हु ली अउभविष्ठः मजैस्राश्चद्भञ्जन

भेग्रःभीयरंभभ ॥ । । चत्रत्रभइ " उद्देश भ्रम्भाउमने मार भीय दें भीजिमहर्वेजभा।।।।। प्रमिन्स्रिय कयानिय । विमीज्ञाभ्यान्वभी इज्यंधांगरिष्ठ दिनिक किया

इलेड्रामा भगमा सुमेग मा ज्यु हेर्ड इत्रचंद्रमा ॥॥। विभिद्यगढेरि न्हें भवारा के विश्व उप्पेमार् मेश्च प्रकाबिलभनी ल भगावग्यभा रामेकि द्वित्रभानि क्रभाउंबमनं मनभर मुगा विग्र 939

नश्चम हत्त्व गाला भाग । उन्हरू स ग्राभा गामा इयमिड नवहास इउन्पर्याउथः भागे उसमी उद हस भ हतकर इसकित्र भ अंड यादिश्विष्युउसभेभभभगजीभन र थविद्वाभित्वाइत्वभ । राभाग

बारी भागारेश भागा मध्य अंतर वा विदिर्गमिति विद्युक्त उस न अभित्र वाधलंड्य वर्ण विश्व । इति । व भागित भ प्रहार देव के विषय भीवसीबोधक अगचा इसी गरूब इदांभभभाषा यञ्चादिष्टाश्वभया eee

भगवाद्मश्रीक्रविम्भवव्याक्रिकः 444 वज्ञास्त्र विकासमाधिक विकास । नम्हिर्वाष्ट्रमभग्रङ्गाम्यः । भड़ ने गणि कुभा या नंदि किंदेव रिभाग्नाम्बर्गात्र म्यान्य स्थान भवउँ । अर्थे ।

भाभाभा वस्त्र अस्ति है। कियभाविगारीडो इंभिड्रेम्थ्रभ इरागभेभेक्यक्वरल्याम् । एइन्क् ययस्व भारद्वी वि द्रकाराणभेगमिक्या चित्रभद्श किविमक्षरणम् इत्त्रेयसभाया च

CC-0 Digitized by Saravu Foundation Trust De

अम्या । यंब्सद्भर वस्मानि ह्याथाः चर्यभुभन्ति । उत्रा मुक्ता गामका मेर्डिक के वार्ष क्रियमहम्म ज्ञान्यद्यणमः भू है: रामारियम् भित्रहर विकरं मे इउल्लिहिराभः दिवःसंध्रम्यं इस्

गभाउउच भावविष्युद्ध मूल रामाद्रभाः भहब उठवरं इउच इद्वरम् : ॥॥॥ द्वेभ्येलल्ये उत्तर न्मकेलयभुगानेभूयेल्विक्च भ्रम् विस्पानिक ने विविध ब्रह्मका उद्गारा मध्ये मार्च स

भूगयाभाग्राम् " भद्राम् नम् क्यितिरंडे द्वारिक भारिक मानाः भवश्चाम्भारम्बारम् हिन्द्राउध्रभभूग्टा । गण्याञ्चा लभाउँ दराभ दें के विद्ववी राभ्यभे सबस्यमा छन्नगर्भ इक्र छन्न

भरते व उस् य विश्वितिक भागव भा । भश्चम्हाभित्र उत्मालन्य। नेमरेक दिनारिक र जिस्के न भिया दश्यम् इति इस इत्यम् जी नगण्या । चित्रज्ञभूरे दिउग् काले बहिर युरे र या या भिभन उन्न

234

क्रलभव्डे इंग व्यव वर्णा । उ विश्वयक्षणभद्देश्वयवस्भद्देश भभूगत्मा उभू मा उबय सुभू मु हिमामा । बद्भार्भ दिवा (अविषार राष्ट्रिक स्टार विषय है। भडभू मेंग्रेडिइए गरुरभा

भग्रे के विभाग्या उ । ये उ कदभन द्वग्रवया राभेजा र राभ शिव छमर नि इहिंदे बर्गिविहिश्च गैही रहा मंत्रचिमक्रिक्ष । चम्रे एक्ष दर्भडीरयहउंमडीयेनभी चुझ्येन भड्यालिया लबाडम्पाउउमारिया

उभन्ना इंड उरभाग गरा गणां दे कुर्भेरभुरक्उभ्रष्ट्उन्धापभाष्ट् बिरवहाँलीड ल दिरण्याँडेयर्फुल उउउछछिङ्ग्रहाराग्भा ल उर्गलिन च्यमंत्रे हिडिश्वमभिभद्विसभारा शिरमनभा । भिर्व म क्रांच म का

Pea

453 निर्देशकार्यकारम्य । जन प्राप्तर लभ्भ उप मयन जानि जल वलभाषी ।।।।।। उत्तर करला दगरयश्रद चर्चामहभूकिरण य गर्वाराध्या भिड्काराध्य इउय यलभावत्रभ्रायभाद्य।

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

227

गर्जा अध्यक्ति विक्षित विभाव वलः चराङ्गाउतिक्रभुभाः भीयउंभभ भ पत्रित प्रस्ति गाल धिउरक भारतार भीयउंभीयंडे संस्थात माना तिराहण स डिरोक म हत्रक्रिंगामाम लिह प्रच । क्लाइलयुई ठयर्भ गुर्र उश्च भुद्दिविहम्बदीरं उश्च भुरं मिडिसिल्डिस के उठका भारतभा द्वस्त्रमा । के थडा भी उभये मभा कि कल्पा वरुप्राप्यक्रिक भूके गित्र उभीमभिद्दश्रहें अहे द्वेरिश्ह

333

सलरहरूपालवस्माद्य रागेर क्षुरुमा भामेठी उड्डम्यानभाभ उक्लेशनार्डिं ।।।।।।।। उद्गेष्ट्र इडीस भेड़ बहली भूग भार्थहात्रध्या । १० कर र मेड्स भीकृष्ट्रभाग्य इस वम्म म उसे

हम । ययंत्रम्भितिः करहच्चि यस गरं यस डिक यम दियभा मानिश्विष्ठ मान्य मान मुक्त वार्व ग्रमारियेमंग्रीभागः । गाम्यभित्रिक् डिमईल्लाभ्रहभर्भा उद्भेष्ट्रः दि । यः महत्यवभदे दिव

क्षित्रगड मुझेन्यानं वशः एम वःकरहवउभगंभभयभें चहुर विह्नार्व । चुन्नेभभाष्यभागितिर दिमउभुग्रेशभा भहित्रवस्विग शुमा । भनः समपनिन्य भानाउ यक्ष हरा चरा है रह ह हरत है है मुभूर मभी उभुभगिभा ज्ञाभभी उभु भूजाना का भागवा चार्या अभिमान मार्थित । केमरापडी उभ्रहमाण्या गलाकि **हरशिक्रणग्रमिक्समें उ**स्क्रीम् िउभयक्नमंगराभ क्रेंडभेनिक रठमुउर्वभगीयं सम्बित्र अपनाभ

चभागान्या गार्वितराष्ट्रम् हुँगीभड़े उद्याप इही ने ग्रम प्रमाय एम उनक्राभड्यभाध्यक्षां अ अअप्त । चराभुम इभष्टभहर्य वंह्रभक्भ यष्ट्रंत्रभभ्रम् ब्रियभभग्रहणं ब्रह्मभाययाचा "

हबल हर द्वाय भनभाय भग से भग्य स न्ने : मध्यभ्रहस्रभाभ्यह्रभाभ्यह्र भाउ लह्य क्युरुभ देश गाई गियं धलभी उत्तरक्रियवजुनग्राहम मीयभण्भाउउ । जगभुक्गभुक्न भी वैधरें ने इरंग से नहसे ने भरें भरें CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वंडेडी दिड़ाडियाभागि उपक्रिय उउग्रा न मंग्रेम् विभीभित्रभाभम शिभागिविभीभिंड इंटे भिंड के भवि चित्र ल छेनुभः इउदे चित्रभुरूय भद्रभाइतिकाय भद्रगहभद्र य अञ्चयं अवगुदान्काय यसभा 462

नवरभ्रायनभः । नशिभुडभयुड रुकेउभवगुरुउकः ज्ञुरुकः भ रभवाभक उभीयउग्भभ । वनुन भड़ " इद्देन : नक्कर भीयउं भी उभेडवउभा १०११ के च्या या विश्व च्या विश्व च्या विश्व चित्र विश्व विष्व विश्व व

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

333

क्र ग्रमण कर्न हु अक् भित्र कि कुर्ग भड़िलभंगा जिन्दर भे कि वह स्त्राम रमाश्चलका गामाव्यक्रमान गर्वत्रभगभिक्क्ष्यांनेन्स इमी द्यक्रभक्षनस्भवत् भइभक्ष वभा मीमक्रभननज्ञ गठयवर राज्य

मणनेसम बेम्हाभभगणनेश्वल ०रंमेल्डिडियिउयेडो गणा चित्रहर महरगान्त्र अपन्य अपनि । रं चरुष्टिं अनुर्विष्ट्रविष्ट्रिया मिनः विमञ्चाभववाद्व उभाइ इ सुभावसम्बद्धाः ५ ५ देवैविभाभस् 233

श्चःभवउ उवर्गियानिः उद्गुर्ह य्वभिन्द्रमञ्ज्ञभगग्य । एभि चणीणगञ्चवज्ञवं भाराविधार्याः उमे भंग मणित्वरमा । ज्ञाना मार्थित । भ स्वित्रिभग्नेन्या हुवेगर्विज्ञाभ

यभा । प्रवच्चार्यम् । प्रवच्चार्य भारतः श्वत्र असूत्राचित्र राष्ट्राचाराय उच्चभी । युबन्नुवेश्यक्षिणक्षि भेभवीभाभाभ च्याउउउक्रवलीवि मेर्नाम् उभुगभा ।।।।।। व्यक्तान्त्र क वस्थान भारति गाले अविदे देशका दे

क्रिक्रक्र किथाना मुठक्रक्यु उ ग्रायां भारत च्या विकास कार्या वधमंगण्यहीभूष्णज्ञ व वज्रमाउध क्रांभक्लक्यदांभवलक्कन्यभ्।। इक्लांस्वर्धाणा द्वारा स्वर्ध

वाराभाभाभागायंवारां मित्रवर्ते विश्वासम्बर्धियोगमण्य निष्णे अभिभार उन्ने भवित्यापु भवस्मि ,यलभवक्षकरम्भाभाभाभाभाभाग रंगिरियम्भुप्याभुयम् यहन गरिवस्भिन्तिभवत्तेभवत्तेभरित

ree

निक्र भिवन लिश्ने शेविज् ग्रें वेज्ञेश इथविह्याउड्यभग्ध भरावि भुन्देन्य भूति । स्थारिक्स इउम्बद्धभद्दशद्दीउभुगभ भ बेक्ट उप्यम् अध्य विश्व विश्व व्यागर्भी रउपीडा " मजुम्ह इयिक्षयण्ड इ

निरिश्तमान्यान्यान्य श्रेर (अश्वभग्रभेश्वराभागीमश्रभग्रभा भीम । विध्यामण्ड इंड वर्ष मामाभाष्ट्यभूत्र " मययग द्यउच्धादा भेभायबन्धउच्धा

A.

500

भ्राष्ट्र एडभ्रम् ग्रामश्चारमभ्रम् उच्चिममाडिष्ट्रिंग्णभाडा रामकर

वर्णभिविद्यार एषवस्थ्य च्यायमिम महक्रायभा

नम्भारत् लगम्भारत्यग्रम् उच्छान्द्र लल किन्नेम्यू मण्य भिक्र ज्याय अवस्यारिक विष्ठ नणह जिम्रवरण जिमीयाजिम े उस ब्रथ्य स्थान व्यक्त व्यक्त हुन नि वस्ट ॥॥॥ वस्यान्भद्रभुष्ठ

चीलभूबराभुउः जउरभुंगभुजीन इभव्यः भीयउं भभ । चन्न । इ नः इक्ष्यं भारमं भीयउंभी क्रिंग्डर्डिया लालाकं चित्रहर्गहल चगश्रहचभारः । विकिथका भर्डक्षिकांसकार्भिमंद्रवित्रि

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

A.

B 23

फुलिकारिका। मिकार्डाइकिरि विभेडलिड जिंदि हैं भारतम् दुआ।।।।।विभवीयद्भयाभेड्रेनेग भक्रण नगर्धम हा गराभर डे भरायस्य महराभीर समद उडमागः सम्भाण्येषार्भेत्रधंभ स्थयतीः भिनाविष्यक्रियक्रियक् उर भन्ने महाराष्ट्री हो संस्थान है। चमार्डभवरंडभाभव्यक्रवे विवयमध्यानि इतियभाभ्य इत्र भाभः अस्त्रभाष्ट्री स्वित्त्रम् ः "

239

A.

नभोषामु ने युग्निव निमार इंग्चिड्चराव रूयवग्रमउनीय यभारित्र इभिक्षणभाष्ठ उत्तर्भ नम्भागनगरःकाभनगनिरमण्ड नुभउद्गुउन्निउ लिथ्भुज्य बलर्नी विणिडिजीरभणीरमयिडिस्भड्भा "

एभन्भभभित्रें उद्युपीउभुपत्र य द्रीभगम्डभण्डद्दभ्यक्रभ दिभर्दः । चगभुद्धनभगद्विन्दः भूरभभ्रदेननभिद्यभागः उठिक्र बाधनग्ः भूगमभञ्ज्ञतीमुर्भिष्माग भागा कि भ्रियव स्वत्रक वित्रवसी

क्रिक्त मः स्वरण तिर्वेश वराज्यारा मीवडीयार यहिय बडीश्रियमचनुभएउ नाइगडिय कीवडी सियमवे उस्भय डिकिम्स नकारी मुख्यायाहिन्यम्बर माउद्यम् भक्त विकास

मक्भानं विचयमान् उभ्यद्भव प्रनम्भाग मा अस्ति । स्वामिति । विष्ठवस्त्र इंग्डिस्टिस्ट । क्रक्रचिविषमभन्नित्र उभन्य भारतभारद्वभगदर्श विम्रम बन्ध्रभञ्चनभगण्ड भंभनण्यभन

ete

उंभभुक्भान विवयं प्रमुक्भ कम्म क्थाल ॥ । । युक्त भये उ विमे मम् यमभगपुर्भित कड्क्प्रदेशि ज्यमं उरुगार्य परिस्था अम्हरेशी अन्तरभुभन्त्रीभ उद्ये सुम्मू मुद्री भड्यभारश्यल इस्भविव

मःभविदयपाउँ विद्वार्थे वराष्ट्र क्रियं उठयं उठ्य उप रेक्स भ्राय है है उराज्यभयेउ भगलयेर विङ्ग्हयंउ विश्वविमभभमीभयाउँ उप्पत्तर म्यउ एउ भव विचय लगला हरा क्मयंउक्त्यानिडि उशुप्रेशिडिं E=B CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

युल्डिंगाग्यान्वेन निक्तापि भागां अअक्थानिवयेष्ठः मिर्देयिमेष्ट र विठीय दूर लेक विद्वेश मंडे क गरव हेर स्ट्राप्ट अयह गुर्स उड़ ज् वास्ट्रक उद्याभाशित में में या उभ्याष्ट्रवराष्ट्रा भागभूते

भम्ड मडभक्षी मी स्माउ कि सु यलठउ उथरउब्रुज्यूथ्यूश्चर्ड् भउइएउइज्ञ भभ छ उँ च उन्मभय हर्यश्रमान हिक्रहेत्राच गश्च अश्चेत्रच मिक्र जमारिय उये राज्यभम्ब भीउद्यानियय

यक्तान्त्रत्यम्य वर्षातः कलमें इराकिल में रितिश्व इः। भथर्किलीरुभारेकितिनिभीयरं भभ भवति हर्षे अस्त स्वास्त्र यउंभी उसिह विज्ञा लाला के ब्रुड भूगः भक्न ग्रेवभभाषिग्रः कक

निममक्य मार्ड इस्पेमम्ब्र अ इभाइवरङ्गिउराङ्गर्स के विद्याद ब्स्यम्बद्धम्याभ्रांत्रभः॥०॥०॥ निभित्रहर्मभाग्रमाय विकल्या स

DEF

H.

र अभीवडम् बासुष्ठ भार् गण्यही मिद्राः भूभाभेश्व उपि मर्भार सिम्रापाय । मधभाउम्हभा । छेराभेषातीभ उर्गिहमा श्रुवम श्रुवभीव हवा नः यहभाडभूडिउन एभभूमंनेठ

विष्यसम्बद्धाः । वर्षेष्यं उ भूउरले उत्तरिंग यथ्ट उत्तरिंग हिर चि रंगे चल्राभस्भाष्ट्रभाभेष्ठेव भरम् उत्रेक्षभभ । बांभेषाउम यः मयः मंभगः उभाष्ट्रभिद्धात्र वर्षे

DFY

भाउश्विकिस्मानः । मुभीवन गंभुभं उविग्राज्ञभाष्ट्रविम्रा भ ाया श्रेस्वारिय : ल यम्या नभाग भयमंडः भिमद्गयञ्चम बीवङ्गल उठम्यः उपभूज्ञ भूतभ्य अविभू थ । भेरंगयभग्रमयउभ्रंवाभग

भारः भ्रम्भित्रभ्रम्यभिक्भिभ्रम इस्रायमित्रियेग एउसकार्थ त्रमित्रक्म उत्रभक्तः भक्ति इध्रायभिक्भिभा इस्र उप्य विस्त्रमा । भस्रग्राभस्थित भाभ्याभागिषाः भभाजभव

भ• बं

CFR

द्भुउयः भभ्रयभिर्दे उत्पनः । यञ् भुगन्नगरिगन्नभग्रिनेभनः उ म्भद्रम्यालयवग्रद्धेउष् भडभूमाद्वाभड्यभभक्तमम रड़ा उन्भद्धु रुक्यं निस्न रु भयाभाभ । भूष्ट्रमञ्ज्यहम्युर

रीयाभुन्तमीयरी: भ्रियया:भृष्ट गराभामभाग्यामाभ । इक लभुष्ठ ज्ञाय र्याय नगुरुय द्राय क्भलाय मिछारिष्ठः भ प्रमहाशिमक्भुम्। वियाग्रीय गुर हः भुष्ट । चंग्रापिभं उद्भवर्षे।

3±1

H.

विश्वभवद्यपकः मधन्नवनयि डेभवासभीयउंभभ । प्रति प्र नः वास्त्रविद्यान्त्र भीयां भीउं महत्रमा गलगला के महत्रमान अज्ञा ॥ ।।।। विक्र इश्राह्म । क इथरः अग्येक धरधरेन भ्रम

रम जनभीगरा भभण्यहभीजय उ चर्मा राम राम राम मारा विवालिविक न्य विवध्य अवस्त्र की इथानेककर ज्ञार्डवर्धमञ्जू उब्द्वमार्ग्यभूमाज्य दक्षा नज्ञानी इति एउए भूगों है र बं चुल

9=3

H.

भारण पाउद्गड्भक्मइभाक्भ दिनेक्डियानेन्स् अभागानिक्ड अभित्र नव ये दिन्द ने व ए या भिन्न ग अनुभेषियर भनेभार जी रूम । क इथ्पंड : भश्रभंड्र अक्रिक्ड इतिवर्भये नमानेवर्ध भवशिरहार्शम्बन्न

उथाउभुनः भउयभाक्यां । भव भडीनमगीइवडमेभश्रभांदेठवड उरिकाभ किर्धुभड़क्ष्यभाने पश्च रिम्डिप्डेन्यूरिश । मुनंबर मुनं नर: मन्द्रभं उत्तर्भा मन्दर र र ए उं मुत्र भूष्टिय स्वाभी

गविभवां मधाया हिता इत् थय:उन्नेंभभभभाष्ठ्रभा । नवा मीश्वरगढ्यभीड्यमभिद्र य बाराभुद्याभभियषारः भुद्रनाभ भि । उर्भी इ विग्रह । उर्भ उयस्य अन्तःभयभुगिन्द्रभग्ग

भुउरंभभाभा न चर्नः दलाविष् भनुक्रभेष्ठउद्धीरामाचिव विवह मनभूमाडिभवनः भयितः मनभी गमनभभाभग । भवेट्सक यभुष्य चर्चाइभगउक्य मिक्रल रउन्य रैराउँचितिक्वयभि BA.

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

H.

मक्रानाय रायहक्रानिहै। उराव्धामय रंमान्तीभर्धाम ज्बेडार ब्याय भारतिए व्य गय भरूराध्याध्याय भभभूज इथानिहः भुष्टा ॥लाइमकामीनि माज्ञिभगड्यः मानकः मयः जभा

उनापियगुभी के इमः भीयउंभ भ प्रज्ञभभभुम् इथानः भीयं भीउंभठरउंभा ।।।।। वंश्वमभन इवउंभज्ञा ॥ ।।। विश्व भागीय क्रमंदिनाई काराडुमाभग्रयउभूमा (वाउभा भूमिठिउंदाएकभू कुक्रि

युज्य.

OYE

क्लियनं विस्वभंत्रभाषा ।।।।। द्व श्रिपु उन्न हैं जैनवर्ग के दिशीय दि श्रीहरी राजा विद्यानिक स्वा अयं इति उंच दिश्व अभू उराजी भव भूव आ ज्ञानिविधगंजारीउंभनि कुर्वः भगगग्रदक्षन्भाति । स्य

ए इवर लश्चित्र वा श्चार्य श्चार्य श्चार उउचित्र उठाउभाग्य प्रमाण्य भारताभागभागिया । उस्यो भिड्ड वन ए मिडिं भू ये विवी हैं। भ मर्गिवरं मभः इतिबंध्रेध्रम ले ब्रह्मभविद्वानमंभभविद्वान्थ

च । उउनिविस्तर वर्षे मिर्ग इ विलेग्ने उन्में भग्न भग्न । उन्ह वेउउगचेन मिने उउन्न उरिक्न अंभर्ड ल उउट्येभन्डमम् च्याभ किविजयंद्य उंगिहराभग्ने ग जम्बिम्प्रमेष्ठ नेयभन् ग्रुष्टे बर

505

लिभेंड् चदभा लेउउँ उपेचउन्भ भुमभुयभुमीउँ ये उद्युष्ण मण्डव डा र्गिविठ्य मियभावभागभन् महमाचितिह्यु उमेदवभा ल ज या राभा की निष्यी । व स्वाप्त । व स्व उचेरणभाउचे याचेनिक्रवाभेया

चभाभाग्रहार ने स्वीध्द्रमा यक्का लाउउपाष्ट्र उत्तरभाष्ट्रीतिहर एगप्रिक्रीगण चर्मभीवन्छ नीमाली उद्यान नी स्टाउन जी उर भागाभवेमैव उद्दः भुष्य भवि है वडिकाय किंच चकाय गई

जह भवम्बर्ग्यः ज्ञज्ञेबग्रहः "गक्रमें बडिंड: लगाल अधिवी इंगाउरियं भभभु इव उपनिम च भरायमिडिम् चित्रकाः भीयांग भ । चर्च उद्गेतः भभभूमेव उष्टः नणपर्मा अवग्रहः भीयाः

TYE

508

क्मीहर्गियाणा महास्वरिष् भारतेगडिककाइलीगडिस विगायहभा न चिराडी हामायडी धनश्रत्यक्रितिः विश्वाचितिय विद्यारिही युक्ष मुश्चा रही उः छेडिभागणउउभः । विनभ

भारभञ्जासभज्ञास्य श्री स्थित्य भडेडमः " भारे चड्यश्रवयि इयाभनिक दिया जैनवभाउवयः " विग्रुभंभविक् उतिभन्ने विभ

किलः विद्युरभिव्यक्तितः । या वयायोडेबोक्यक्यस्त्रभन्ने च

PPP

A.

ष्ट्राच्य । उथमार्थिम उभड्डेड्डभार उभरल्या उय ल उभड्रमण्ड क्रंग्यानी मुक् दिउग्रियः महिंभुभनिम्युषी " चर्गार्थि जंग्रामि जग्रामि णभिः विस्मानिस्डित

विश्वभन्तस्व उउउभः ल यहेगः। (रचाममंभयज्ञभनवित्रव ममी रिस्त्वस् । उडे उभभभभि : " र श्री भूभ डेल नहीं भव हुउ निवस ती भा ठर्राग्यंडी इस्रिव मुस्पा दिनम्भाः । भवमतीभेष्टभत्रीयु

१५३

क उमाइभामित्रीभा भूभंत्रे देशि वंगरी अर्डभागभमी भिंद । ग इंभार कलगहे उलगहें ग क्षिण्डे भिवाडे भावह भिवा है भवें इंडिड अवें इंगरे मने इः ग्रागिपउपिभाषा । ठर्डाठ

गवडीक्षु उरम्कानीयभावडी॥ भर्मना भिवराष्ट्रीय उराष्ट्रा भी याँ भभ । चर्नेन चर्नेन भगराक्ष भड्यः भीयज्ञेभी इ भ गामा ए उगर्रभ्य व्यवस्थात्र ।। भन्

A.

इ.उ. प्रिम्य यउभ रूप भ उभ प्र हर डिसिन्द्रिन्न वर्गे रुयर उभार नम्मा यस र रे क्र नम्बिह्मयुष्यभाग्यभाग भूर वर भिन्न संदेश सन् गेरियडियरियर्यड स्ट्यड यव

रुपउद्येश्वरुपउँ उद्ध्यभुद्ध चक्रिडिक प्रचेम ग्राप्ट पैमंदि भाष्ट उ भग्रमअउभभ्रम् इर्डाभ्रम् न एड उभावतर वभवेरयउग्रेषेरय उ वदाचरयउमाग्यय देशन रयउभस्यम् सम्भाक्त भञ्जया

EPE

भविष्ट्री भवेष्ट हैं तात्र हैं र स्थान क्विम उभारण्याभगभगिगा हैं उउभा इप्राचित्र इभा नेर्य डे गाला। उसा इडमा इंडिंग मेरि मेर्ग इंडियापवउड्गाभिक्ट विर्वेश मंबेडभडिष्ठ डोभ छ उचिः पूर्व भम

विमाउ भूभमु निमाउया वेबम। उभक्रियभूभभक्त उउद्मित्र भरपउउभा उर्देशका विदेशका बाह्यसम्य भाक्ति राभमग्रम् इभउउच्ध्यायवर्ष्ट्रेक उभ्मद्मान वित्रभूभये हरू भये इंड उपल्ड उ

भन्द्रात्रम्मित्रम् भगवेत्रहारहा एमिछि। भमव्यम्ड्रिग्रम्भुद्र उद्यक्तिर नुष्ट ग्रयहण्य उभाविभाक्ष उभाइहः प्रियमयागभाष्यप्र गाँ स्था व जा कर्य स क्या स कर र उयाग्वंबम । वभक्षयभुष्ठग्र क्रय बर्घाट मार्स देशज्य मि मिराय वर् उट: भुक् ।। वभ उस उषागुम्बद्धाम् मनग्रंभुका देशवः सिमिरक्विषद् उ:भीयउंभभ व न्नभइभावन कंद्रभन सद्देनः

म्.

520

वभाग्यायः भृत्राज्यः भीयां भी यउभि : ॥॥॥५ित्रम् उभाग अश्रहमिर्डिन्डमा ॥ हरू भी ॥ इसि अद्योगंत्रवयुड्यज्ञात्रभण्डः। मुठभागामामामामामामाकलुत्र । स्थापः

521

मी: भरभुडी लक्ती ह विश्वक्य श रमवरः भूरपारः इक्र क्लम प्रवडः इक्रविध्रभत्याप्रवडः मं उच्चे में स्वारः भारताः राज्या दिन गया: इता इधकः बर्णः यथ भूमभः चित्रचु उम्मयः भिद्रगण्ये

Secondarion Trust, Delhi and eGangotri

बक्: बन्नेयुव: भक्षरा: नेर्डन: मितिन दूरः भटः भन्धः मगुरः भ यवः गिवित्रः भडभू राभविष्ठे नकी भारतज्ञायाः हरेग्वः मच्य वः नंद्रेत्वः भन्नभाउत्वः उग्रेत्वः ठीभेमेंब: भक्रमेंब: रंसर्वेमेंब:रंब

रेज्यः भियः भगामियः भगमियः उभभडिंडेडरः भवडीभडिंडःभ रमेश्वरः विशयकः एकमतः ज श्रिभिद्गनः गरुत्रः नंभुमरः क लगरु: दरश्व: विकल्बन: चणु रवः विश्वमः विश्वज्ञमतः बल्लकः

999

भडिउभङ्गलमः इंडीभः भदः भभुष्तुः । तक्त्रः पत्रतः तीलवः मेश्यातः तामायेभागः रूप्योतः भूरुभिद्राचित्रः भदाच्रःभद उप्याभागितः चभा क्या मान द्वी एइ गरिली उस भवडी यित्र

ली मीमारिकारगवडी चीमारग ह स्राभदगक्षीह स्रीयुनाह ही क्ट बेंप्यीठ भिक्ठ भक्ट वि इस्ट । गरह र कामक । इस्ती म री ठइकानी भद्रकानी मित्रालक नी भिन्नकी: विजनकी: चन्

392

नकीः भक्तकाः भक्राइभ्रथ्य री भडभूरभठरात्री मैलप्री र क्रमणी मणुभाइती जाभाषी भूज भारी करियारी कालारी भड़ मित्री भित्रिणही पष्ट्रायउन्त्य डः चठयइगैम्बीठवाती म्भइ

रीठगवडी भवम इ.स्र डिडी एडर मुर्गिभितः चन्नम्बरहैरदः अकुः भगिथि। वस्तुः अभाभिति । चित्रकेशिभाजिमाजिसः अन्त भित्रः भने ॥ में उमये सुभक्षक नः। किल्लाले । चन्त्रकार । व

528

विवहा । यनभित्र । सभीउद्या । विविध्र । व्यामा । नगभ्रक्तम । चंग्र ए । इक्क्मीन । ध्रिकी है: ।। ठक्र ठगवडी इन्नु उर कली मभव डी भन्न ना मियर श्रीय हैं र हुए भीय

529

उभ्रभ । सभाज्ञ । चाउँच चहुँचः चुण्यां गुरुणियं वर्णगर् भंभ उम्हारियडी जुभगरिया च्राण एक्य ५५५३ी भाभाउत्र भूरभित्रमत्र्यारे गलभाउरण्डा न इकेंद्र इक्ट्रके चन्डामार्थे एकम

4.

मगुरु: ब्रह्म जुम: युव: चत्रतः द विः नकीः कथनः मिष्टुग्यः भ हमस्थिमङ्ग्रुच्छित्रवरः इङ् इःभाउतः गोद्रञ्चभाउतः निन्य शुभाउरः इतामाइगालस्यागा वडः जुडम्बडः योभीम्वडः रेडी

व्यवज्ञः क्रमान्यवज्ञः क्रव्याव जवरः केंद्रजैवरः केंद्रवैज्वरः भग्नेवरः केंद्रुवःभ्रम्वरः चापः न्ध्र इंदर न्ध्र स्वरः यरः उभयरः भ दग्यरी भाषिरी भरभुडी अवे दग्रकः चर्चिरभुग्डकः मिन्

9

वंजनः च्रेचंचिक्तः भ क्रिकरणाः वण्यहकरानी उउरेम कथामः रंमण्डिठीभग्रथः गुद्रेउरका छः भग्रलेड एक वरः भर्गा गर्भेश्वाः देनक्ययः बदक्ययः मजगरंगः भष्तः भष्याः भरा

दरः भवभगरः भ्रत्यः इभुभी य उंभी उभी उ । ए उ उ व य पुरुषी उं उद्यम्भा मभागुभा ॥ त्या व्या व्या व्या विषयभरुक्ति मुक्लभी। वियह भयं उर्वण्डाभिति चित्रचैत्रवण्डा भन्तप्रभवरुगाण्येत्रभणकाड ल भाग्यभववउद्भेरेट्ययंद्रउभउयञ्च

A. A.

क्भानेनिचम द्राक्तभयउग्नभि श्वाभाष्ट्री वैस्वा वा भाषा अभिव क्रगण्येज्ञेभगविड । भारतभन्भ दिक्रितिभंबद्गंभितिचम भंबद्गे वा मना इस्प्रमा उप उप विकास स्थान भग्नाडे "भग्राभेग्रञ्भवरुष

पडिद्वेर द्याय वश्वभार भारती निचम इच्छः क्ष्में इड्लियडे किछिवित्रते उद्यभुगिर्वेशकान्त्रभ भंग्यम्बरुगण्येत्रभणका भिर्माभ वारुभार्यमुद्धि ॥लाभ्यं म्बार्म् रेमस्क्रिक्षा प्रमान्त्र के किया है असे उ

203

To.

536

शिभाभगवाडिमरूप्रम्पंदि भ रुभाउनिभाष्ट्रा भभ्र उभन नउ भभभुणकुर उम्रु उभु यभभ बीण:भ्रष्ण इभेष्ठें भभववं वर्द भूरुभाउ भभ्यस्मिश्चय भूष मड भे मुज्ञमें बहु: भ्रम्भयण्यक्रण

क्रिडीयरायारअंग इडीययानज्ञ ले में उद्यामिस ने भाव श्रीभाष के ममुक्तिमार्मकारं भन्धाभिक् फ़ इस्राम्सत्रभाभग स्वय मधिक भयममध्यी । भय सभाभग्भभ्या (१) यस के प्रति

र प्यक्त अध्येती द्यक्त भभ मियात्रयात्रया मियातेष्ठाति। भूगडर एभर्य दहभर्य क इभर्य भेभभर्य भ भुष्ट्य भगर्य भगर्य भगर्य थिक में हवस सुरुध्या मास्त्रे

हैठवर्ने उड़ेवरुभ्द डीर्रे बीद्यदि क्रिःभवीदा प्रवेश च्यम् हे सक्ष चरमञ्जा इत्राचित्र अरुक्षिक ।।।।।। विषयित्री। यह उपराष्ट्र इस्मा ॥ विशेषु वरुगस्यं चित्र भूमित्रभूभि

五年

37.

द्रयाश्चर्यः यक्षध्रीभाग् उउरकी उरा भारति वश्वास्थाय उ भा । जिमकायमेउ उद्य प्रभी उराहितिरेहाहि भूभाराहाहि विमामादि याद्यामित्रः भिड्युगिभुगीयितिः इधउंग्येषि।

वीभुष्ड नगडिधक्रकिक्क लंभग्रह भी ।।ला ला किसमग्रेज्यभंभ उक्तमा उक्तमा उक्तमा अस्य । सम्बद्धा भिक्छ कुभिगण्त्रं मडइभभा । युद मीराउरेम् ७ भक्कायापे उराहित हाराहारीयाम्याउट स्थान्द्राह्म उभा 270

गुदाः । उग्रमभागिका इनीलभगड्डि: उउँ लयुक्षवेम ब्रह्मशिक्सविहः श्रिउः पश्चि अक्रियुर्वभागवसभगाउतः सव चार्ण उबस्था उत्रांनेकविकेश्वभाकिक । इ.क

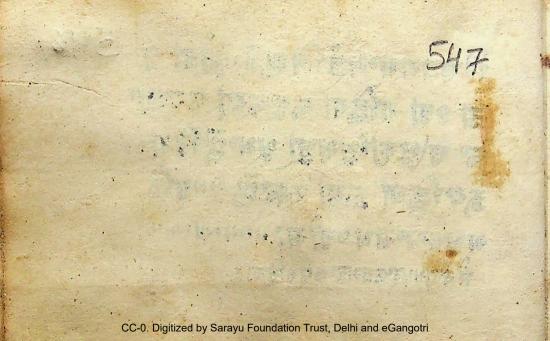
विश्व इंग्यार उत्रगलये की यु उन्ना भग वमामिकाउयज्ञभागभागति एग्द्रभागकः भडीज्ञानमञ् राध्यान महिल्ली महिल्ला स्थाप इडिंग्सम्मयम् थिउरेग्येक्ट उभा मान्त्रिया।।।।।।।।वज्ञभुभक्त

北

293

वः भर्यम् रम्भम् भूग्णग्राकी यानि रम्भूमंगठयंनक्वीर म चिठिविभक्त मार्थिक रक्तालिक

546 क्षेत्रवमधाभई निएउ ग्लेग १ ना श्रा गडिना दरदल दल्भ ज मध्यक्षियम् भ्रमछित्रा इल्डिया ज्या इक्छ ।।। ५६ ने वय्भभश्य जनभन ७ दग हिया 🗴



केन्भगगगणणगाकें हैं यभाग भविष्मण्डलभष्टवडी उरम्यण भारभिरमनभिविष्ठः क्यर बाइनक जाएन बाई में लेक में दिरण्ययभ्य उमक्षमञ् ः॥॥॥ विमानकारेड्णगमयने भन्ने न

み・

हेर्युने विद्याणांगगनभद्रमंभ अव्हें चरुर्भ लक्षीक उंद्रभ लनयनं येगिक द्वानगर्धे वद्यवि भूडवडयडरंभचलकेकनायभा।। कि विद्वेष्ट भिष्टि मनन्यग नं कलदर्गमणियुं मीलीइधं।

अवने भिल्मक्रमद जिल्लंभ विउप्सभा द्वेष्ट ब्रह्मस्थल गमभमन पीडिंक मयम् है डि क्रभंभभ्य जिनक्रभन्म प्र भंभे नभाभा ।।।।। विस्तु ।पी रहभ प्रार्वउप्रान्थ्यानगरम्याः इ

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

4.

A.

उच्चा इध्रा उक्समभन विश्व बरुष्ट्रिः इच्छाभवभन्नग्बन वस गंभयगञ्चा निर्देगाज्ञ न भित्रहःक्रियग्राम्भेमरः भर् नः॥ला छेश्रज्ञारेनवश्लल भड्डभंभाइभंभं इद्रकारानक

निमंग्रे: मेहिन इरिन मभा दशु इष्टंकनककलमं चर्डियाहिश्र हं वज्ञविश्लेकनक्रमभक् रण्यय इ रूकाः गणाणा क्षेत्रम् राम यत्रवाहर्षेश्वराहर्षे इम्मन्यभाक्षात्र विज्ञागयणः

년·

भाउः । भद्रभूमीयं विश्वं विश्व इंशिज्ञभक्षवं विज्ञनग्यलंग्वभ क्रवेधन्छे उभभो ॥ ।।।। धनधमेग अममभ नगरान्यान्यस्था ।।।।।। विभादभूमीयः अन्यस्यद्भू मा भादभूभाग भड़िशंबिद्यं उस्तर

.हिडिश्च फाम समाग्री । भूमधार्थ रंभचेष्ट्रइंयञ्चरहुमा उउन्भउ इश्मानेयमज्ञराडिंग्ड्डि । एउ वानभूभदिभाउँ यू या मुध्य भागः भामभाषा अधिक स्थापन उतिथि । रिथाप्त प्रसिद्ध न व

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

A.

N.

भागम्बाराहर इंडोविश्वेष्टा इरभइभनन्यन्त्रि । उभा विगन्तरगरीवगरिन्नियभूतमः भर्दे चितियु उ: भन्ना द्वाभ विभागः ल यहुर्विल्डिक्षण्य क्याध्रमडवड क्रांचे प्रभाग

एंग्रीक्र एयः मरज्ञिः । उंग्रह अदिभिंभुः कं यमध्य उभग्र उ उनम्काचयालन्यान्यस्य । उमार्ह्स चरुर भन्ने रंगम मप्टमा भन्ने अञ्चल नियान ग्एम्थ्रम्य । उभाग्यस्य

A.

इर रमधाभावित्र करो शिक्त कि उरमा इस उमा मर्ग उ ल उभागमुणम्यउयक्रमें खग्राः ग्रंबेदलक्ष्याम् भाष्त्र चर्वयः " यह्नध्र म्युः इडियनभक्त्यना भाषा

使用玩数42些处22hre133 इ । ब्राइलिश्रापभाभीइण्डा क्षड्राः श्रुवस्थ्यह्यः भट्ट मुद्रेष्ठरयउ । महभाभनभिरु उञ्चक्ष अस्य अपनित्र म्याम्भणक्यारयः । न

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

A.

H.

र इभी मंत्री में मी प्रेरी भागव उउ पहुंड्शिदिमः मेइण्डम लिकभकल्यना । अभुभुभ चित्रविभिभाभभागः इः म्बार्य इक्ष उक्ष उक्ष प्रमुख्य प्रमुख भमुभा । उस्भि । यस्त्रनय

मभाग्रभना उदमकंभिद्रभान भगउग्रथचेभाग्रभित्रकः॥। द्रशिवनमंग्रमभ्यभूग । च मचडह्रभभुज्ञभो " विभड A. N. भूमीस्पेनमनग्ग्यलभूनधः

चत्रभूतत्रश्रद्धभी " केथ्रद्धमण नमन्त्राग्याम्य " "॥भर्म इनित्रमभूठं निल्मगाभ उभुग क्रियां एउड्युक्रम्थ्र हिन्यनं उड़लभड्डभणभा नफ्डएएउम्ह महभिमं मंझू ग्रम्होनभ हुन

क्षिक्रभगगुरूमिनगणं बच्च चित्रं। देविक्रभी ।। ला विख्यविक्रक्षक वर् भानकरभर्वद्वगद्धिकं याव इश्विधाणक्यामानम ग्रमिक क्रमधाभा यावसीलियणिकण ठाउवर्ययागिक रामिक भवेषि

み・

भूभवंगिरज्यम्भवभूज्ये रहे ला के का क्ष्मा कि अभाग्रे के भागान ने कमलेकाल महामक्राम्भरेक्ट गंभनेदगंगजनभा केश्रुकादिउव क्रभेग्रहरूममिविष्यं उर्ह् बन्दरभ्रष्ट्रांहिकरवणिश्य

565 विभा " व्याद्या कित्री धंगेयग्राज्ञगंडेथठी ठीभज्ञदश्रकी रभागित्रंभेनाष्ट्रइनभीनकः है भन्न अवन्य भन्न तिलारिक विभी मुनंमे गंड्रेग्डभिक्षाइभण्यभ्रउ मः भग्यद्भनः कत्रकः ॥॥॥॥॥॥

म.

y.

विभवस्मीयः भूमभः भद्रभूका अदभूभाजी भक्षिभचें उर्धे राष्ट उधुक्रमाञ्जनभा । भनभगवेर भनेयक्रंयम्बद्या । उराभाउ इस्मान्यम्बन्धिरहित । ए उप्तानभ्रमदिभाउँ दृषं स्थान्यः

पंत्रभुभवण्डापनि हिभाग्रभुग्ध उतिथि । श्रिभण्डवुउम्द्रमथः भागम् प्रवास्त्रः उउद्गाम्बन् भक्रमन्त्रमन्यिक ल उँउविरा कुर्य उति गर्भे स्थि भर उचितिएउ:भझफुभिभंषेभुरः ल

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

4.

3.

यहमधलद्विभाग्ने मार्थिभाउन उ वभंडचशभीय एंग्रीय एयः मर इति: ग उंग्रंशिदिधिभे तेपुन धेराउभग्रः उनग्रमण्याभाउभा श्रुवयम्य । उभाग्रहस्मिन उभाग्रंथियग्रहाभा भन्नेशंत्र

इर्क्यश्चारश्चारश्चाय ० उभा इद्धराष्ट्र उरम्भाभाविलाल न करांभिलिलिंग्उभा हरू अभा मर्ग्ड । उभागमु नर्ग्डम मकमेठयभाउः गाँबद्रभाष्ट्रिये भाउभाद्भग्राच्याः । यद्भ

अ.

धंद्रमयः कितन्यम् भाष दिशमारी है राष्ट्र कर रहे उपार्या रहे उ । राष्ट्रज्ञातामभीस्ट्राम इ:ब्राः क्राउपश्यद्भाः भट्ट म हिन्याउ । महभागनभेयउन्न ग्रेट्रियदः नभक्षयम् भूभाम्

57-1 ाषामधिगर्यं । नाष्ट्राचभीमंत्र विमंगीद्देश्यमगड्ड भट्टेडिश क्रिम:मुझ्युष्टालक्भक्ल्यनाःभ प्रभुभची ग्यभिभभभभिगः इ उ: मरायङ्खं उत्रांश चत्रयुक भंभग्रभा । ब्राग्डमउंभनभभड़ा

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स.

उभागम्बर्कंडभभःभग्भः । भवा किर्मित्र हे हैं से स्वापित के स विवसहसम्भ । जनभाभाष्ट्रभ मार्ग्डाउड्डा अविङ्गुमिस् भुः उभविकित्यः भाउसमितिन्छः थडा मयरायविद्य । यहार्य



573 क्षुभयम् उम्म भारियम् लि भूषभा राभना उदराक्षादिभानभागे व यहभव्माराभित्र । त उद्गी नहःभग्धाः श्विद्धाराष्ट्रिम् राजमाभवत्रक्षा उन्न इति श्रिम गर्भमिति उद्यस्थ्य स्थान्य नभग्ने ला।

विनक्तीसभारभंभाः हिड्दनियः यी भीउवभुषितग्भयगीमेव इनम् ग्यह उहमयः भउनभू लहारी कं भारित्रेक्येरिशकलगुल्पिरिकारि कारीं भागाने ता कार्यान : प्रमार्थाः भुगभवराथाः प्रकानग्रीमे ॥।।॥

कंश्रहें अस्य मान्य महामान हरूगद्धें कभे:भेभक्रवण्णु चिनी जिथा निमारी मार्ग निमानी नक्षित्रहभणिक ठजा बक्षा भ्य मं लकु चर्च इश्रष्ट्र में श्रेष्ठ वर्षे सी वाभू में वंशिक्षा ।।।।।। छिप्रहभ्रवना

A.

म्यलभंद्य उत्रक्ष्यलभी ॥०॥० क्रिय्याउच्चराउगर वचार्यभ नेनकणिक्यउँ उभ्योनियोग द्या गीर भारत है। से स्वार के निय विका । बेगार्भेडेथ्रेथ्भरेड भागिष्ठवरुं उभभाभुभागे उमेव

विति इपिड स्मिति नहः भार विक्र उपराय " यम बहु चुउथ उचेम्बानंश्रीहरः अवेचिम नहराजियाय हुनमंग्रहे म्भनय जिस्का भ च ग्रेयम इत्रहेडा यश्वंत्रक्र छ । वहा । वहा व

4.

भ्रत्रमी । मीम्रडलक्मीम्रडभर्ट चंद्रगरी थाच्चित्रक्ष साम्या विजेयांडमा । एसंभियिभाण भुभा एका लभ चले के भए का ल उत्तराधिश्वाप्रश्व धर्यन्त्र भः उपवस्र उद्गार भग्र

रुपितः भन्निमधार्मित्रिक इउ: भगभगांग कालाक जाभ क्रामाद्राम्याभावमः । वन भाभाभागाउउवः धरिवद्धरः भ उथ:भइष्णं उठ्डं मच उति में भ विशः " नैनभन्नि उद्यान्भेष्ट

.भ.

H.

पशिल्युक नउस्त्रेत्रक्षन्यभुत्रभ भद्याः । उभक्षित्रिति । अन्मज्ञधारम् विक्यूनेन भी हम अनीभाभनभाष्टियुर्ध याग्ड विक्रम् उत्सेहबडि भ दरस्थरसंग्री उथंभीवस्था उउम्भित्रयाउउउ

भाभक्त नरुषः । अभक्त स्वामि भंग्रीमर्या महारहालिका विश्वभूभिभंडेबमी । भ्रद्यमुभभंग ण्डापम्भव्ययनी क्रिव्ह्य विवीमाजीक्षभवभुः " उद्योशि " वश्यकाः गविद्याभारियक्य

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अ॰

लश्चभगउउण्यू उश्चरश्चावमग्रभ अिड उम्र अम्य भग्न भगाना विक्भुगी उनकेन ना एड नक्रम अनका अठं नभाग्याभा किक गडलिबी छेक रेक इलभी भवार द विमन्नेत्र दिराण इन्हें मभन्त्वनी

गिभभीभित्रविष्ट्रिडिकिक्ष्यडेंगेभान ग्रहामिः॥लगा क्रीक्रंब्राश्यमा व भाभाउभाषः मंद्रभारिश्राधिं इत्रं दाभुनायनेभिरागंडेदेयहबील दण्डा चयां डी भरेंड बले डाल ननी भागाययभिक्र एवंएवधिक्र

भ• त्र.

कि भिड्डयः भण्याद्रभण्याहकः " किश्री उद्माने भित्रे वर्ष्ट्रकी रियम्भागाम्भागामित्राष्ट्रग हक्तभवाउग्यू इउथ एउः भाउत्क त्रभीडा भगगग्यधिरीरुभडेभ क्यामिकायद्विभाषियाभ । यः

भूगाँउनिभिध उस्राग्र पाउ विस्थ लगंडेरङ्ग रंमयचश्रीइथमञ्जू थमः क्स्री " याउल्पम्यनमण्य अविम्रियाभाउ भूभिषयभूग्वाः यश्चाराभाउयभूभाइः इस् ल यन्द्रिमग्रण्थिवी रुक्य यनभूभि

A.

किउंग्रज्य ये च उनिक्र विभाग व रीयः क्मे " युप्म हाराष्ट्रियी उश्रहान्यगागंत्रेयभीरत्भान् ग्रिजिविडड:अरापि क्से" यश्चितियंगिर्यभित्रभभग्रं छ अ,उभगभन्तः क्रिनः गश्रभक्ति

मः भक्त स्वीक्स । इंचेड यस्ड जीविस्थायनहं राणना भागवारि शिभा उउँ यव वंशनियव उउ श्री के: कर्म । उस्थि। । चनः भूराज्ञन यं उपर्भाउन उपरा उभ्रमन्थ भागः भगद्रगण्डित्राह्यभागिभाग

4.

इड्रेफ्ल ग्राएय: स्ट्राइड्राइड्राइड्राइड्र क्रमण्डिमर लक्षतं उद्दल् उस न्य रिश्च महीभगित भुरु में राभय नम्हिन अन्नेन्निभवित्र उप्त क्षक्रमनकिः॥लगानगम्

काश्वाहरू इस्टूडिया ॥॥॥ इश्वेषंठवहक्नीकृशा यभिष्व प्रभावतिमारिभचंभाग्यः भेराञ्च विङ: अरथ । अउड्रैमें मध्डे इबि इन्तर्वेन भारत इहुए भड़ा ही। रिल्थानिति दिस्तु दुस्ति व

4.

प्रभाग उध्रिक्तभडा । भंडर वृत्ति उन्भेषिण उन्नाभाषिक सङ्ग्रापि विद्या यहम्बान्याउभानमान्ध जीयणभन्द्रिय व भगीरहानि थरीडलिकचरिडभचाद्रिमेरि मञ्ज भूरुपाउ: भूषभर्ठ उपुः

नःइत्नभ्यभविषम ल थरिङ्काश्री विनी विउडिभड एउए पिलिक च शिक्षमः भारेभुः ठउभुउद्विष्ठ इंशिएड उम्बन्ध उम्बन्ध डा " भगभग्राडभद्रुडिभूग्रिश इश्रम्थ्या भित्रम्णभियिभ

त्र.

भगा । उत्पेश । यभाग्य उत्तर जिश्विरंड यन्त्रविष्ण क्रमन्त्रविम् भूरुभितः भूर याभेवियानं भी रिल्झेंडीचिशगडिंशचेड्मी ॥ । ।। प्राथित स्टिन्स स्था । प वनक्रीभुड्गा "।। विभक्तव्य

वगरी में यु ज्ञापिक प्रमुख्या थ रीभा पश्रक्षाहण इस्ति अ बहं दिलमरं भडाधमारिषञ् उंनकीगणगउंत्रभः । क्र युगनगं दी उं भरू इ श्रेम ग रं

भ. भ.

जित्रभामगर अप्राप्त महामहा जन्मभा जिसस्यिमियार्थाः माभगडगुरुशं जिममिश (अथनिक विद्वेडी देशक डी भाग गंगज्ञाननंक व्यक्षणाक रंगिक्र इंग्लेलंथरं ठगवडीक्रियण्गे

थाभी बक्र इन इन्निकं भूगभन महं नकी उभरभगउउं भरया शिठहा मलमाना केलकी थड़ा भनभाविभनकरिउ एं यन्।भूज यउन्भी गशीमनंशिक्षण ज्ञान भन्भागम् मान्ध्री प्रतीया यांनी

मिन्नले हुं : भुग्णिर अए : भुग अउद्भारती अध्यान की भूड मुनियभाउठवर्गडल्ड्यूड भू ॥ ।।।।।।।।। गंजिंबी मुजु कुरिक गवलंभष्ठवङ्ग (३ वेड) मे ज्यमिका किंग्रेमों के ग्रेम करें।

क्ट्रणक्रेशिकाशिशाली सुन भट्टाभणां भगद्दार्वाभि बर्गिकरुष्चित्रजीभा गाला। उड्ड द्रहेकिए विक्रिए द्रध्या भिए द्वे भग्नेह्नरभाग्रभभ्ये भुभक् मण्डयंम क्णंबाभेः मुठक्राउले

当。

धिइंडीविश्ववद्धं भक्तभू उपरिक उधमंश्रित्रलक्षी उभाशाला केंदिर एक के कर मी कर नवी मी गलकी भे में युभावस् है र मजद इंदिभाञ्च यगाउँ जी प्रभुरापा श्रिष्ठ वेशक्ष मा स्थान के विश्व के विश

मीथरः भर्याले ल गणा के दिनश्र वर्ष्ट्रामी भवत्वरण्डम् त्या मर्डिरपंची नकी एउउँ प्रभा बद । उंभच्यदस्यवैग्निका भन्भगाभिनीभा यशुंष्ठिउ छ। वित्रयंगभन्भभनभगन्त्रभा "

म•

वस्थवंग्यसं द्राप्त भ्राप्त भिमित्रीभा नियत्त्रतीभूभक्त्यम् ग्राचीक्षत्रमा । क्रम् 多7公子中小小子公司其 भुग्डच्यडीओ भद्रसिङ्गे वलंगिरंड पड़ चित्र्यमा ।

गर् प्रभागमभाष्ट्रन जी नेक प्रवश्यां भूषा उप क निर्भाग लेश्रा भारती मा गुडारीहा भी भी हिर्देश स्प हड पंभेषिएंड बनभाडिश्वर मपिनः उभुहनभिउपभाष

さら

उम्बर्भायाउगयास्वरहानाकी " उचे उभाग्या की श्रिमाना राभड भारतंत्रीभाराष्ट्रिभिकी विंगिहिंगग्रंजिंग महिंपाश भन्न छ द्वा भनकी उपया भुड़। भा वर्डाउभभशिक्षमचारि

क्राचिष्ठा । गत्रक्षंत्रगण्डं नि ह्यमुद्धरीधिलीओ रेम्रोभवकुर नं उपिदेशह यिष्यभी ल भनभा इभभा इ डिइगम्प इभमी भार प इतंरुपभंत्रभायमी:मयङंयमः क्रामनभ्रष्ठ्यायभभवक्राभः

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ल॰

A.

मियं इप्सयम ज्ञान भण्डरं भन्न भणि नीभा " छथ:भूब अधियानि मिल उदभनिग है निमर्मेशीभग्डमं भियं राभएभज्ञल " चरुभ्रप्रतिलीभे श्रीभिद्रानंभक्षभानिनीओ अदे। दिरप्रयोनकी एउक्र भभावड

महो भन्न विल्ली यां भवकं देशभा रिल जीओ मजुंग्डिर येथील की एउ बरोभभावद । उंभद्यवद्यार्थ नकीभर्भगाभिरीमा यभाष्ट्रर एं भूकुउंगारियां से विज्ञयं भूक्षान दभा " यत्रत्रंभभाषिमित्रिथण

स.

विक्रवश्वः वियः भचा प्रभाभिष विज्ञ उद्भागगाड ० क्रामनभूरः भूजाः भभुतिगभयाभभि च्यारि धगान्त्रभाद्रभगदेशक्षर । एउव गः भनी दिभागर्यभेष क्रुणाय च विद्याउभाष्ट्रनभविद्यास्त्र क्रुड्डिसः - उ

रिश चझण्यभिद्यंदेर्हेर्हेर्हेर्हेर्हेर् वगश्भितंत्रमं : बीदिश्रभिश्चित उँ वैद्यादिन चंडाभाइविद्याद्या उण्डरिय उक्तिया ।। ।।। विकल्य री केंग्रांकरभद्गणनमण्डीभण्डेक

मः

मंग्डेडवभा भेग्बरुद्धमणमभाष्टि भमणभागज्ञवश्राचित भागभाभ लंभी से उंदेश हे न ये नंभ कुण स कं के लियाला कंथीयधारा कल्लेल अग्यामंत्र भाभा चनग्रवसरंग्रंबी भिन्नकी न भाभुद्रभाग गार्चिनाना क्र इति भिद्

60.9

णक्षिनभंडेणीरजंरिक्षां रजु क्न्यविष्ठियं ज्ञानरं मानिक्रे मान्त्रीमा भन्नक्षेत्रज्ञभभ्रावर उंभविह्डीश्राभाउं इल्लेखिल नमन्रयगरं ए यह राभाश्वक्रोला विषय सम्मायण येक्जा भा

अ.

नकः भन्डन्सन्जन्सद्भश्र अभः अमी धराकां ने दिर एक्स अ उप्रध्रम्भी नवभी श्रिष्ठ वस्त्र भीमजरी उद्यम्बर्गीय ग्रेमा उप भेरतसेरायस्थानिक्रमा उर्दे दिनश्चन अङ्ग इंगाविम उपि

अभा । उच्च चार्याथा उत्राथा ग्रहा भारतम्प्रयभी भचाभाभगुष्ठ चिदिन लिभा मभादिजः । सन्भ देशिराध्यपित्राम्बलग्रह इ नंभध्यस्म भक्तं भन्धियमा । भभूष्य प्रविश्वराम

स.

भग्रम नक्तीमभूभ्याभूषउप भाभित्रभंभाग । चग्रेयरंभि यित्रधंभभेडंल्ड्रचिभर्डेच यानव्याभाष्यानगंदित स्राभ्य हबिडियेविहाडि " यहँमगण्यम न्यवसीवीभरभुडी उद्गेषश्रह

बग्र उत्रवन्त्रभाष्ट्रयम् । वडकुक् भित्रियमामा भगति स्वातं श्री स्थितं मभरंहउडी । ये विक्रिय माय जित्र छे भर्ते वेष्ठ उपे उसी सभा यभागव्यविक यश्री यी यभागः । यम्बयम्भयण दिरशेम जन्ती

म.

क्यभुभन्भुभन्गः उद्यन्त्रप्रभ मउमाग्यायापुष्ठामिद्याभ डा । ५७ उन्जार्भ प्रभावभाव गर्व व प्रयागियागिष्ठः यानाथ इन्नगं मुक्य मार्डिंग भड़िंग ह गाय । इस्थि भ्रियंभा कु म मिवंभ

भियंगणभ्याज्ञ भियंविम्प्रंग भी भाषा के दिन मान माना ल ला। निनक्तीभन्नभनगउक्षिं भदमीउं उन्ह भट्य भुक्र मयन्ति धन्न ह्मियले नर्भे अभिश्वमक् लाङ्घिउद्यादिन दिन दिन M. A.

यहलयं ने भिदंठित अवभागा। निभाषाज्यप्रियम् इंभाषानिहैं: भूगमा अहन है द्रभुग्मा द्राम ज्ञानिनाभिष्ठभारंभमा ड अक्रूबरमानभभूरण्युगा ठीडीमण नंदरें काउंकाठउपारिक्राउन

क्षक्र मंग्रेस्भन्भा । विविधिक्र न्भित्र के कि हैं कि कि कि कि कि कि कि कि मलीभन्जा दीभाल है उप ने पूर्व कागडीउ राष्ट्र उपक्र वा मजावित्र याश्रीभड्यक्व दीउभाग्रयाश्रमा उयक्रणदीउ चलहेउर्विभवाग

म.

वज्ञ यह्नमभूह्मवज्ञिविधारम विज्ञभुद्धियं इम्भगदीर इइ मलनयञ्चित्री उन्ययी यभीभ डीमान्ड निकामार्थी उभामार्थी बन्दली हब डि इंग्रु असे भाग भान ठउ भन्नकाभी भन्ने वा कि तथा

मेग्रस्थाभवनस्थान्य उर्ग उमें कर गण ये ने भग वित्र भेभा **एउथा कि वृत्य भाग कुल न या उ** क्रमां सुभाविक एक मान्ति उ गंडिभानं युक्तिग्राहीया इस्लिया एउद्यान यह भारत है किया हा

वि यक्षमान्यमण स्वितंभष्ठविभा भानिभागदी इया अया बी साभ द बयण्यायञ्चार्थण्या नम्रावायहरू ।।। छभुज्ञ दुर्रे व्याउँ मिरिभमिकल नहुउंग्फ्रः विश्वः वाष्ट्रंक्लक भाने भिभायकन भुभुकं मेड्ड

त्रीओ चपीने उद्यक्ति महरु रिवा ग्रष्टमभामें क्यभीहित्रक्यिक इवननिभंडं भण्डनीकिन्धियां भागो विवर्ते नकी धरमिवभयी सक्र राधुन राष्ट्रं उत्तेत्रभंकत्वक्रभनंभचकुचे क्षाना की स्थारं के उक्क नमें।

देशपरं, प्रगन्था कं मित्रे भक्त क्लन्त्री विश्वकारा भेराभी ॥लग क्रियक्तिक क्षेत्रक भग्मम्ब इन भ्रभद्वर चिमन्त्रभूननाभभान। हेउ ये इ बुद्धा भेभा भेषा था यि प्रम क्षिंचे वैद्यान भंभेभभ उभु जे भ

मुद्रभभीषभूभुउग्भि मुन्गिन् अ <u> इवउण्यप्रमाभभभभुग्वरुग्यय</u> नेभगवि अ उपनिसंभभीष्य धिन यउभुग्यकिवयर उभुग्यकि विदेश्याण्याक्षण्या वक एमचैउजुःक्रलेयकुभेश्रभा



ल्याका अवस्था अ उन्डल्ग्यडभगभडी हुन स्रीभा लहेउयभू इङ्गीवञ्चाभये । त्रा कार्याच्या कर मार्थेश्वर उभुडी बामें वैधा बाम भू दिगो छ। क्रियान कि स्ट्रान्स के स्ट्रान

किरण रज्ञभगलहु इं मी इंस भूतिरं स्वरूभ कु ए ने इइ या ल हु उभी भागमभागामा द्वाराजन मेडिम उडियों एयें इंड वर्नेक रक्षणभरंमी भुक्तरी स्वरुभी ।।।। क्रिवचाराधाभागीन इंद्रिअपा हुव

मः

इद्युउँ यह इस्र वण्याम्बंधा भ्री कॅरीड भगभुडी इत्रभ्र गीभान है उथ अए भिक्न अभिक्त में यूरम उपा उंकारी हु उ यभाष्य राभभितं भित्र का अधिय इंग्युडी वामेरे चंग्काममयित १।।।।विजनचार

भाभउनक्ष्यभाज्ञ मध्य यह उध्रीयामभवैधार्भीक्रीक्रिडि भवि **३०५नम् इभागतं उयपेगप्र** इरापमाभाषा द्वार राज्याम प्रवडयाभगभृष्टि हम् डि भारिका एउभव्याए उषेध्राणीय द्वार

भ•

भविङ्गियः भूभविङ्गङ्गेवरुः गार्यचेभमावित भागभागित्र चित्रभवित्रभागेबाग्यभगाइराभ मामियं भाभी उस्मियं उन्ह इक्रविडियवैवभीम्बभू भेडेव भने श्रियभ्यूष्थयित ।। लागिरविष

क्रम्य भर भ्रम्भ क्रम्य उपम् हैवन लभाउद्देश अने सम्मित्र में का मिल रवस्यभगार्वत्रभभविगरः भ यण्डिशिक्षितियणिक्रार्छिगेष विश्वप्रमध्य : उद्यग्री निश्च दश्य उउया भ्रमांका दिशियाँ

इस्क्रलभद्य अनुयाम्बी । या गण इंड इर चया या भर्गे सम्भ धनधभुभायो उद्गयामी गाउउ सहला लाक्षकार्यभगम् : भवक्रक्रांभवभा । विदिकंभवग मक्षा भागामिक कर्म समामाभिष्ठाः॥

भू उर्वेगभद्रकागयह इंभोन्छ। माउं भवकमभरेक्ष्रियंशिवस्था न्यमिन्भा एकक्योरमण्यभभ उग्रस्थलाष्ट्रलीः धेरमचलित्। भज्जभग्रजभविष्युचे: भज्ज लगडेल्भाउक्रभड़ें। यो मधे भ

£.

वरून्धभित्र इं य वश्चान ठ उगित भो व्हेक्यारमाश्राक्रेम् इत्राभाव लंग्लभा भवाकाभावनां भेडिया कं विस्तर्भे के हिल्ह के विस्तर के नभूष्णयांभेभदादंनः स्पर्धेभे उषण्यभवक्लाधनण्यनभी धर

भेरक्रदास्य स्थेवर य न उत्त्वाः भाष हिष्किभूगुउरूभू भुजे उर्धे मध्या ठम्रविम्रश्चित्रः अवेशस्ट्रिश्निलाः भगः भुष्यभूभिमंभ्रज्ञं स्प्यितिहभ उद्भितः भवद्गत्मावस्य में वस्त्र पष्टित अयमवभक्कामण्ड्य लढ

नमनः उभाद्यभगराभित्रवि क्रियनमञ्जूष्ठि मियंभग्राउपार्ध अभिवंदेगीयभवग चिल्यानि भेष्यानियार्थियाः मिर्देगमिवर्ग भाराधाः भुषा यहकभावभाषितं उभ

धेरिभारवः इरवापभवाद्यकृ द्विधियर्भे स्थानिय इंल्युपिष्टभउदिउः उस्याउ भद्रक्रगडिच्चः भरमभ्यम्भा व क्भ इभभ मन ग्रंचन की विवत्त भा भूतिवर्गस्याज्ञासयर्गेगणन

3.

E.

भाइत् भुद्धाः मीभुक्तं भुविद्यांग छुयंनकी विवत्ताभा प्रश्निक भरेकाभियवाकाभंडिराभुग र भः भूतिवयंभभगमञ्जूष्यज्ञभ विवन्त्रां मी अज्ञ अज्ञान कर्म

रंदिनिभी भागः भाष्ट्रमिकिए मी अंक्षिडं भर्छ उज्ञेत्र भी ब्रवन भा चय्छं मेरदत्त्र भं अत्राप्य संभावता रवनकाम्बन्धारिया भुभुउषाणाः मीभुन् उयुद्धांच ज्ञक्षिउभचक्भमभी ज्याडी

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गुः

गंड वाभाभभाभव मं भूकी विडभ वियंग्रीयभंगिरिंभू जभगवन लडक वर्षेत्रयंस्पर्वज्ञ उथ नकी विरम्धि इंडियर्मिय लेडिंगिनी नेरे एभः मी भन्ते

चपुर्देभयहभ्रद्भिक्तिच्छेन रः भन्न इस्कृयानकी तरं उभूभ विश्ववि यसयुर्वे प्रभक्त ने इन यान्यं उपार्थने नायि उड्डाना नकी विश्वक्रग्रायम औडा अनं प्रिविच्यां क्रम्याभाष्यु उंड

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

T.

या नक्षित्रभराभित्रभयावद्वन ममुद्रि विवारंग्लम् देशरम् नकी भभा मुड भक्रानाभविच्य नंकिटिंड अभभागाँउ। सुक्राण नःभगाभेदिज्ञ इस्मिय्यम भभ्य क्षेत्र वी बर यं य वा बद के भि

उत्तरम्भूमस्या है : मीरालया : धरभावठक्री अकाभिवाभी दिन णन्उम्र भर्तस्मिउद्यर्भभवि इंभेभग्रइः गंध्यविनम्मक्ति भाषभूमयम्बिक्षान्या अने यहा बिक्रेभ्रिक्रम् हगवद्भकी

1.

भरमुद्धगर्गमणगः नक्तीकृत्रे ६५७ भदाराइः भीयउंक्मवः भगा। वननभन्भाण्य क देशन वहने: विष्ठः भनक्तिकः भवपापद्राः भचभिद्विमः भरेत्रज्ञभुत्रभः भ क्लिनिञ्चलक्लिज्यः मीठगरा

ज्ञास्यः भद्रदलः भ्रद्भः विव न्यः भरः भन्यः च्युः भग्यः 'गिविकः भद्रभू राज्ञ नक्तीभद्रिउ नग्यणः भक्तनिकभयः भच %: भवेष्रे र्रिंगमणी भवेश जी डिविज्ञें पविभिडभुरुखः

T.

माजुद्दा यभित्रयभः नियः भ गथाभभद्यः मीठगरं न्या युउन्गगयलः श्रीयुरंभीरंभेठ ब्रमा गणाणाजित्र मम्मन लक्ती अर्जे मभर र एक अन्य र भाग बुह्या । इर्मा ।।। बुह्मा ।।

क्राणा एक रहेर स्ट्राहर चेमवंभुगक्लमभेभकरें ३ ने इं पद्मभनंगवरम् हयसभम् आ महरुपाइ वाड्या प्रायः गिद्धिरमभनठङ्गदर्गनभाभि । क्षेत्र हेर्ड में दिन के जिस्से हेर्ड थाइ

म॰

वज्रकभो गङ्गगरंगमङ्गंभवण्ड राम्ब्रियडभा तीलगीरंगमाड इंत्रायंद्रिधवी उत्त्रा राज्य "मेडिगीयमवर्ष्ट्रभठयभूमभा क भारतम्भङ्गभारक्तम् किक्श कुलंडियम्बर्धित

ाणभेंडे उक्चिम्भा च्याउँ उ अंडहम्भागार दर गणिला। किड्सिंड भराभी ने किड्डिंग भ भविद्या क्रियुव्यः भभगयुक्ति राभुरवाभुउभा विद्यमार्थेड चंद्रसम्बन्ध्यभा भवद्यभा

नभीमानंनरं है विमुज्याभा ए वर्षा कार्य के विष्ण कार्य रहेडा भाइज्लयभङ्ग्रेगपारिभा मरणगउभा सम्मर्थड्सगरेगः भीरिउंठवनजुर्ने: चुरुविउभन्। श्रुप्तेश्रिक्च स्ट्राइक्षिक्षः चराठ

गभिरम्धेगडणक्रमहम्रः उ उ विश्व भू स्व में स्था मुझे म ह भक्भा गल के हुभक्य रूभ देश्रा विंगियभाश्री अच्यक्षित वर्ग ग्रहम्मीयभाभागाति ३ दरमंध्रभद्ग ग्रेगियमग्रमग्रम

H.

मिरमञ्जाभवाद्रजीलक ७५ मभु 650 इ । भी चुक्र वह इहर यः भग उभः मुज्यम् विक्रमभिक्तः क्रान् वत्र नलभित्र अनेक्ष्या यापमी भू भभर द्वा दहरीयांचा गठ बीलंगभगलं मधनरूभा भड

भाम विज्ञभाम विस्कृषे भड़ा मंबीमवभावादयाश्रद्धभा चित्र बाडया भुड़ प्रवशी सुरंभा चडी भ डिं रोषरुभन्भनुभः कुन्गारुग लड्चिडमा भीयउंग्यलभान्ध विष्णा सम सम्बद्धान

रू: जन्मग्राभाष्ठिया गनि भध्यमंग्रेव प्रभेष भ्रिक्त आ । विउद्गमण्यवित्रहभदा वण्यणीभारत उनिन मुः भूमे मया डा ३ मडनित्य ग्रें व ज्ञम भनेठवा मचीयभू भ्रह्म ने

उक्क मेर्छी नइमेर्डा हिंह ध्यः मयत्रिविषयाः त्रभस्म क रोड्भाउन्हर भाजागयहाँ प्रमिथ्रं पर्डेड भटानाई 4. महरक्षमा रूगस्त्र मुश्च भ• ब्रहाराडी यरभष्टा महिम्ब

उ मन्मिक् भवभाभक्य ज मन्भइपण्डमंद्रेमितिय गः वश्रमीनद्भमश्रम्भाग एति: बेडबेल्य: भक्षरणत डि: भुजुपानवये अन्यापिष्टाः भगभूमधः भवम्बङ प्रशिव

उ गरभायाभित्रक्यां मउन नभग्वितियेगः भक्तमञ्ख यभुनद्रेयवङ एकगाश्चित्रः डिभुमनभूठ: डिभु: भट्टाय: भभुष्तम् इः इल्ग्याङ भरमञ्जी टिं : समस्पाणक्या दिस

ず:

विनियंगः भाष्या न्ययुग्नभाष कपुरागिरा भेष्य संस्था रागिर प्रकार इभज्ञरभजभुभाइधिउभी च वंद्रक्थणनवाभुक्याभवंम करुदलभा चर्तन्यस्य द्रभडभन्मजीनायुगं भेनः भ

उध्वर्गत्मग्राग्राण्या ज्ञाप्रदा चेक्नाभाष्ट्रितिरंगमाञ्चमक नभूज्रध्रयभाषान नाभानक न उद्देश ने या ने बीराभ ना या भ नभा उठ्यद्ध जरहरू निवस राशिभमागक कड़ानमुक्रण

म॰

द्रभेभितियोउँ र ग्रेभद्रमेथरभ ।।। 658 छेन्भः भिराया छेन्भस्त्र भर्वेगक्रहाभुउउउभः । उउउ उधवन्भः " याउँ नद्रमियाउ उरधारपामकामिनी उयान **भृज्ञभग्रभग्रातिमज्ञि**म

कमीडि " याभिष्ठितिम उठ 659 मुहिर्डभूव मिक्फिरिइउ द्रमभाईभी: भूमध्याजी भिवन्यमभण्डणीतिमण्डुण्य मभभ यमनभ्यचिभ्राम यक्तेभुभनाष्म् अडा " वष्ट्रवेग

म॰

यिक असम्बर्भ व्यक्ति वर्ष ज्ञभच्यभवाम्य । गाँड जामी: भ्रम्भव । चभ्रम्भ चुनल उउनकः अभङ्गलः यम भनक्षा विद्यास्त्र भिन्न महभारिकां भर्ड । मुभायवभ

चित्रीनगीयिनिद्धिः । उत्रेत्र ६६। द्विभाषा मुन्देनभगदादः ।। उउनेविमुकुरानिभर्गामुग्रीका यादिनः नभन्भतीनग्रीवाय भरभूकायभीकृषे । चंषेयच सभर, १८३० १४ ३ भार

ग्वन्भुभ्वयगृहोह्भा "या मुज्द्रभुष्ट्रभवः भगग्रहग्रवय विध्वतः कथात्र चे विमल्या कान्ड ल स क्षेत्र सर्वे इंडिंग्ड जिस्मान्धितिस्य भक्तान्ध विल्वन ने प्रमुख्य के किन्स्या क

नंपित्रं वभरवयकं मक्त स्वेद ५ ६७०

तं राजिराले उभरभभरे भामभ

भव चकुर भारिभद्ग वि: याउँ दे

विद्यीकृष्ट्रभन्धन्तु बङ्गा वा । भ उयाभागित्र प्रभागक्ति भागित्र

4.

कल पार्डणर्ने द्विस्मारा 664 जिविस्र : " संविय ५ प्रिस्त उन्निक्षिति एडिउभा नमंभिड चयुग्यानाउउग्यणभूर ० ५ठा रुभउउउभेग्इछउरेग्वर प वडहण्डसंभद्रभाग्यम् ।

निमीदमलु रंभायमिंद र: भूभ 665 न्ठव याउएष्ट्रः मिवडभामिवं तक्रवज्यनः भिवामरद्यापाउव उयात्रिशकारीक्स ह विमान भक्तभनभं मिगरभुक्त भाष्ट्रव

666 भठयमं मिक्यां यदा अभी जगं भाममभाक्षेत्रभाकमित्रं भार भेकाभका रामनद्भाय रेध किक्शिल है भावडी में नभाशि है।। विनंभे दिर एक इस कर दिन मभड्यन्थे ल न्येश्र महिन्ति

930

क्ष्याः भमुनम्भउयन्भ लन्भः 667 किथ्युक्रन यिश्रमिश्र अधीन भ्यउपनिभे ल नभनत्रमण्यक्रिय नवाराध्ययम्भ ल नभेड्रिक मांग्रेथवीडिन भक्षानाभ्य उर्वेनेशे ल नभेरतभुद्रहरूगउभ्दर्यन्थे ल

रंभेनकूयण्डजयित्रक्र इण्थ उच्चेश ल नभभा उपण्डाय वनण्यप्रयन्भे ~ नभेरे दि उच्यश्च य काल भ्य य य उ भे न उभेभर्रे लंबर किर्य क क्राच्यावर्भ ~ वंभक्रव

668-

यस्तिवशुक्रयोग्भगीन्भव 660 यन्भे " " नभजर्याग्य उर्हे उपायभङ्ग उपउपउप । भः इझे बीउ यण वडिध डी उप्भा गर्भ " र्भभडभारणयिश्यि उष्णितीराभउयर्भे । र

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

म॰

M.

भेतिभक्तित्वकत्र रूप स्तारम् उग्राम्भ ल र्भवक्षरभाविक्षर श्वाप्य उच्चे न भेरी मार यथिमरायाग्छन भडयन्भे " न्भिनिषशिल अधिभाउउभुग लभाउचनभेल नंभेशकायिष्ठ

क्रिणंभंड्र अझडंग्भडच्चिम १६। रंभाभभाई रहा द्वार । भूठ रा नंभडयन्भे " नभारतीयिल विविमगण्य जन्म प्रानंभे उस् न भे " " नभडम्बई ग्राः बहु

मुंबनंभे लन्भनुउन्गन्हः भूडि 612 ज्यान्ड्रह्मदेन्भे " नभन्यम् इंभड्डवर्ग । रमिविश्व न्ड मंबन्धे । नभशिष्ठ हैं ग

वक्रम्बर्भ ल तथः भरुष्टः भ 673 क्रियां इस्त्रे विश्व के स्थानिक विश्व भाउड्यारेन्स "नभनुडारिने हिविविष्ठ सुवेज्ञे ~ नभीजगण हिं प्रडीहन्न विशेष न र्भक्ष हिराउधिक सूर्वनमें ल न्भगल

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

4.

674 इगलधाउड्झवनभे न नभःठ ब्रिटेड्सपाउटसर्वरभे " र्म विज्ञप्रहिविद्यज्ञप्रहार्व रूभ भःभन्ष्यः भन्ने न्या भगविष्ट्यज्ञविष्ट्स्येन्स एन्स भड्डे हरू हम्बेर्भ " रंभयुव"

हम्भीन्डम्बन्भ ल नभःम इ 675 हः भद्गडी इह मुंबन्भ ल नभभ कहिरवकारहम्भ न नभः इल्लंहः क्राय्ड्य वेश्रेभ भव भःभक्तिष्ठद्विभग्रह्मवन्भ ल नभः मुनिष्टिभगण्य हज्ञ वेन भे ल

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

5.

31.

नभः म्रहः म्रथाउद्यार न्या चित्रंभठवायमनक्यम । तभः मच्यमभन्तभड्यम " नंभनी नगीवायममिडकद्भयम । द भड़्प्रक्रमण्यमक्भित्रवम एव अभादभू जागमाउगान्म ।

र्भिर्मितिमायमिभिविद्या 67न यम ए उभेभीकृष्णसम्बाह्मभड म नंभद्रभुग्यम्यभन्भमा नंभेग्राट्डेंगरघीयसम ल नंभे बाज्यमभवाज्यम ल नभगु यमभूषभायम । उभन्निक

मास्पिरायम । तथः मीरायम मीर्भायम । नगर्मायम इयम । नभन्त्यमनीध्य मा नेभेट्ट प्राथमक्तिप्राय म भ उभः अचल्यमण्यस्य म ल नंभेशशभागम्भ गन्छय

म नभावकारमाज्यम १५० नभः भेष्ट्रायम् डिभद्यम " नभन्तम्णयमास्यायम् ।।। विन्भवित्तिनगक्वमिन्म "न भविद्रालमवड्यित्रम । नभः स 4. गयमायुक्तित्रम ल तभःसूद्रः N.

यमपुरमनायमं " नभयाश्रयम क्रियम " उभाउचर्यमपर् यम " नभः महायमानभराय म । नभः मुक्यमभु उम्रायम । नंभवरायमक रायम ले नभे इड इण्यमण्डनरायम " नभण्ड

रमभूग्रेष्ट्रयम ॰ नंभीनधित्रन मध्रिभड्म " उभर्गक्षिषरमण्य वित्रम " नभः भुष्युग्यम भुउग वनम " न नभः भारायमथ्य यम " नभइ ह्यमनी भुग्यम " नंभनाष्ट्रायमहमजायम " नभः

म

ज्ञांच्यमभाभाग्यम " नभः ज भुग्यमान्द्रयम " नभन्ययमा वद्यम " र्भेभक्षामिक् इयम " नभेबीयु यमण्ड भु य म न नेभवण्डायमरेषुयम "न अवाश्वष्ट्यमबाश्चायम " र

भस्भायमनज्ञायम । उभभुष्भा यमान्ययम । उथः महारमभ म्भउयम " नभ उगुण्यमठीभा यम रंभदज्यदरीयभग रंभ गुरणयमडाँरणयम । नंश्रेश क्रिड्डिक्सिंह " नअभुग्रण्य "

91.

नभन्नभुरुगभयहरूम " नभःम द्भागमयस्य मानाम्भः भिवायमिवउगयम । नभःकि भिनुष्यमम्बर्ध्यम् " रभड विद्यमभूभष्टायम । नभःभ निभुन्मक्पंद्रिन्म " उभेगेषु

यमग्रह्णम । नभभन्य यमग द्याम ल उभः भद्यमञ्जूष म ल नभःभूडरण्यमे दरण्य म । नभश्री हा यम ज ल यम । नभः देश्यममध्यम । नभः £. भिक्ष्टायमभुक्षाद्यम । उभ N.

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इस्ट्रायमिनिस्यम " नभक्ष ह्यायक्ष्यम् । नभः मुद् यमदारायम । नमनिभुगंम नश्यम " नभः भंगश्यमन क्रम्यम ५ नभः अद्यागम् यम ५ उभः भक्त यमभक्ताम

यम । उभन्निय उमभूषिय उ म । नंभिरित्रमात्रात्रभात्र म न नभन्तिए एय स्थित य म " चेन्सेबिद्धिक है में बाने हमयह नंभविभिन्न है नंभवि कीलकें रामपारियं उद्वार राम

चर्मभएउँ मिन्त्रीनंनिदेउ च अंग्रू स्वामं अने भाग माभा युगं भार्डमारोग्डा किन्नाभभ डा उथानक्य उवसक्य किन्न यदीगयभूठगभद्रभडी: यदा नःमभभित्रभग्नम् उध्यत्रियभ

भ्रंग्भम्भित्र ज्ञानिक वार्ड न ज्ञीया उ उ मिया विद्या द हुं भ भी भिरामउभुरुधार्णेउयान्थ कृत्मीयम । यशिलमञ्चाहिडिः यानजभारत्भश्चात्रकार्यः नविभुगभभवष्ठभुत्रवंभीकः

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भक्षयउनयायभाग । भीकृष्ठ अभिवडअभिवेत्रभुभन्ग्ठव भ गमयम चयुणविणय विश्वभाग उम्राधिन के निर्वस्थिक। विक्थिने दिउन अस्व ५ ठग वः यासुभदभुद्रउपेद्याभिति

उत्तर्वा । भर्मा ग्रम् किड्डयभुवराई: उपभाभीमा 'नेठगरः भगणी नण्यापारुक ल कंचभहुउभद्रभूर भियन रूच विद्या उभाभद्रभूग्येल उव्य उपिउस्थि " यिश्च इरुवैड

भ. भ.

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विक्रिक्मिया उधा । यतीन। गीरामित्र कितं न क्रिया कि उरः उधा । येतीनग्रीकःमि क्श्रम्याम्यः जभागाः उपं । चवन्त्रमिधिक्राग्नीनग्रीविविष्ट

693 विभाइष्यिनंडिलन्या उर्था " चकुउन्भिणिभडंचे विमिष्णभः क्पितः उभा यथवीनंभविर मयानिक अध्याप्त यह यः उधा येडी ज्ञालभूमरित्र क्रायंत्रीतिधारित णः उभा याग्यवत्रेवक्रयांभेवाः

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मः

Nº

क्रिमनश्विष्ठश्चित्र उधा विन्मा नशुन्द्रहें चितिने चंपन्याभिष वः उद्देशमभूगी समस्ति एकम भूडीमीयमंडमीमीयमंग उँडेन्मे यश उनेधमणा उमेरिय य मुनेइश्चि उस्थालक्षरणि ।

विज्ञानुभुगर्ह यम् जिल्ला य धंगुडिभधवः उद्यमिति लडिल भि केन्स्य सम्बद्ध विधिष्ट चधाभवशिधवः उद्यमिति । निमष्ट्रपीर्यार्यम् स्वास्थ चर्नभइभावन कार्डमेन चर्चनेः

भः

हगहत्रो चण्यः भन्धः भन्न रः क्रमाधः वर्त्रभक्षः इत्रकः क्रिन्सः विम्रान्धः भ्रद्रम्यः ब)हबादनः भदामबः उद्दर्भः वक्रज्यः विम्रज्यः मुउन्ज्याः भागमाः भीयज्ञं भीज्ञेमहर्वे उत्भाव

वित्रमग्रायभागः । विद्यमन क्रमम्बर्धः भेड्डवः अः मक्ष इभाग्यभीमण्डमहाद्वारभञ्जे, मण्यः " छ्रण्यितिष्टं भड्मं अर्ण्ड शिशिरिंड मण्डममुख्डेंभेरङ्गक्ले

मः

क्षानारा भारत है । अस्ति स्थाप भवभा पद्मभी उभभ उपरिश्वभ गाल्या अविकार विश्वार्थ विश्व डें निष्णिल ठयड रंभ प्रव इंडिन्डमा " वंडमान क्रिया इंग्रडमॅक्थित ने मयती गयभ

हरभड्भडी: यदानु:मभभाद थज्ञ । अस्ति हे भू से स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्य वन् । उसे " अक्ने ने के उर्वे भय भूगिक्त यही गय र भभाषि यभ उ यस्त्रयेत्रभंत्रेगचल्पिउण्डम्स भउवम्बर्णाधिष्ठ । वशुभ

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

D. o

उभगाउँ प्रवयक्षया क्रायकी रभु उ वनक्रभीकः अभागविदिधेषभा क्रमगरिम्बीगद्धज्वभडेड वि: । इके वियं न द्रेय श्रभाग नेभा दुद्धिभवमनिक्यभे उपन सर्इंड्के बिक्तारिक्रमार भारत

भभाग्वानीभड़ न विवेदग्रभड़न संक्रारिड़ इंग्रिंग अभारिक याभड़ डम्बिइडिचर्कराराने मजवज्ञक्रियम्ब्रेडियंभडो ०९ मिर्मिर्भित्र भुगुउवमः अप्मिर् मीयमङ्यवचन्त्रभा राभुगमन् च

भोडभाईक्रणतंभानेडक्रायउनया यगरान । भागामार्गरेगरेग अज्ञ उर्व प्रमु रक्षा कं भा हिंभी ज्यसम्बर्भ वसर्वसा । भारेभन उभउभाजे वह कंभाज प्रजा उभउ भण्ने उद्या भण्ने व गी: धिउर

भुउभाउरंभातः श्रियभूति करी विधः । भग्नभुक्रन्यभानुन्य भानेगेष्रभाने प्रमुष्रीशिषः बीर गानिम्हराभित्रवर्गदिष्धत्रभा मभिराद्याभड़ ल उर्घमुस्भाद स्थाएक रंगभुष्य उग्ने मंडें भ

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अभग्रह कर दिउँ भग दिश्क य उ अधारवयभव एउँ बाली भड़ ल अर उग्यथ्य अवध्यक्ष यञ्चीरथ्य भम्ये उन्ने अम्प्रेनिक दिन्यायात्रः मज्यस्तिहदः " चुवमभानंब मभा नवस्वःमाण

उन्दर्भ इभन उन्ने अनि म्लाभारडाभामिडिभाइः धीव रीभुउद्ये: " " केन्ड्राण्ड्रहम् इक्रानभूत एए भण्डलभू स नः श्रक्तिहोत्रभाषः अध्यत्रभाभ क्रियः माण्यं उन्नथं अरुर ज्ञाभ

和'

गर्ने यभभित्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्र भाले भागांत्रवह्मात्रः भूनयभ विउयार्ड गर्वः कालगृहा ॥॥॥॥ इभग्रेन प्रभागे भेड़ प्रमान नरंभामां संबंधित हैं भिमद्गयश्चे अधारिक उः भाभि इ

इज्लाम्यान विष्याच्या १ भूष्या विडीयभ्रयज्ञ । विडीयभूडी ग्रंम्यजं " इडीयाम् । ज्ञेष यने "माउर्भेष्टभन्नयन " गरिभाम्बित्ते में बार्टित स्त्रीति । मन्मया । भर्भाष्म् अस्य

刊· U·

जे । बर्मिश्वस्त्रम्म यं । व वभगमभाष्यम् । यक्षः ममभाष रक्रमाभ्याभ्रमा । उउरहर छ।उरभराचे प्रवासम्ब प्रवास नक्षण यहभयमंद्राहिभाग

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क्त्रभभा इंड वयंश्रभभडये गयी। लभा केंद्रहर:मु:मुन्द्र कें मा उत्तेष्ठाम कीभग राष्ट्रामरी हरूम बमराम मण्डलाका मार् रक मभीकमा नःइडिम्ननिर्ग उर्रेड स्वयंविषयी स्वस्टि

अश्च यभा द्वियंगवयं विश्वभ भर्य । ।।। क्षेत्रक्रियाम र्राज्यारकार मीध्रारुयम्बद्धार जुलद्भुभा पद्मभनं मिकल् ठरले डिन्ड वर्षभग्रामेवभड़िम वयम्ब्रिक्सभा ॥ ।। ।। इंडिक्सम्बर्

भोरुउभारियाउँ भन्नभडी कुउभ डीरंभराभा प्रडिविडाभायाङ भाविभुष्तंभानिदिशिभुंतिभंगभा माम्याः लेखन्यस्थान्यस्था लिकाभित्र इंडेग्रेड यमड भ्रापिष्ठवः भारतकाथम् भडव

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

म॰

712 जीभिविष्यमभावम् । इज्य इभ्राणयाउयाम् उठवड्उयः न अस्वित्र स्थादभाषाभागाः । अस्वित्र स्थाद्याः । अस्वित्र स्थाद्याः स्थाद्याः । अस्वित्र स्थाद्याः । अस्वत्र स्थाद्याः । अस्य स्थाद्याः । अस्वत्र स्थाद्याः । अस्वत्र स्थाद्याः । अस्वत्र स्याः । अस्वत्र स्थाद्याः । अस्वत्य स्थाद्याः । अस्वत्र स्थाद्याः । अस्वत्र स्थाद्याः । अस्वत्र स्याः । अस्वत्र स्थाद्याः । अस्वत्य स्थाद्याः । अस्वत्य स्थाद्याः । डीबनारीबस्पदंतिकायउन्भः" भाषानिज्यभाग्य यानिम के भिज

त्रभः इमेर्यभन्। मभूत्रीमीन यउनभः । चर्रेड्स्डियागाय । शिक्षण्यम् ग्राज्यभाष्ट्रया थः चंद्रगङ्गिकिमण्ड्डीमीन यउन्भः । चश्रानाक्षोद्धन्भ दभुक्तिल्यास्त्रं मच्छुग्राभा

उत्राउत्राभाभभगभभि । ठरार मित्रभग्रहकांमग्राधमः व्विवि इभुड्राभुगर्भड्रहण्यगारा भणीमारीयः " डबाय द्वाराधिवी नभड्मनेनरः भिन्निमान्ड राभड़कार्यः भिर्मान्य लाजा ।भा

ने िकं भर्मे च सुक्ति में उर्मे इक इठयाय प्रमञ्जूषेष्ठभाउत्रभर्षे 'चे ियं उतिनाय उदंग महाला भिकीचाँउ । येतः भन्नामार्थि भ युद्धं देश भूषम् बीरिकः नुभः भाषान्यः भूषः निम्मः भूषः निम्मः भूषः निम्मः नुभः निम्मः

वा ठवायमसायंगठाष्ट्रभक्न वभः लल के भी वेय भुग विदे न ठल्नक्नमंनिद्रभक्मभुग्निः क्षेत्रका इभामागूडगामित्रमं बुड्गरुष्ठवादः ज्ञाभप्रभभूरु शितिमाप्रइल्भभ्रभ्रग्रान्थनं।

वमावक्त्रामिकवर्गिक हिनिद्गेनभाभि लला न्यक्येर्क यमभगमञ्चलमभीक्रभू गाउँ भ इएएभानानं मकु लंभाने भुड्या भारति । हक्स्यानं । काश्रकि वह्यानाम । । राल्डाना । धमधा

लेन । ग्रभागंत । किपानं । वितिदिउनं ए ठवानं न प वभउउग्नेन "वैद्यानेन " वि बुड्वधः ज्ञालाविभिष्यंभाव भिष्वनेरीक्भा ।। विश्वकृत्या गगंगहाली गंभान्य देशांक नि । इवर्यन्यने महाभीनं । का भकिर्वेद्योगं । रलंगगं । भ मधारं । ग्राभारं । क्थिलारं । चितिदिउन्नं " उज्जनं " चव भउडीरं " बैड्डीनंनकुलीरं भार्तभूडलभारति । श्रेष्ट्रह्यः

युः विश्वियविभिष्नतं भाविभिष्नतं रीक्भो लल्कियाभग्राग्वरा भन्यक्षयं उम्मिण्यं गुरुवम् महिंसभेश सम्में मिन्न महुन भ उन ल गणभीने ग्रेंड एउर महत्त्व गंभग्भङ्गाउण्बडा मग्भयक्षेत्र

नक्रभभेषा उरुभूभामिक भम इ । रमान्जामुभ्रभ्ययंगन्ते ग्रम्ड ग्रम्य चन्नुवर्द्धार्य किरध्यमन्य इदिभक्तभाग इ उद्या अधिकी भाग गर्भा भी केश्विभए। भूरुभाडेनण्ड्रानेभा

मः

भूलारिडीभडरा । उस्पेभ । व मंत्रे वर्षे ये वसुय प्रधानिये व वस्प विष् येगद्विष्णुक्व गाविष्म उ भेरतर्यत्भे वस्यवः " ४१उम उन्हास्त्राच्चः भगत्य द्व द्व द्व द्व द्व विज्ञां का अपना स्थापन

भमिरभुषा नज्ञ म्याभिष्ठि उच्चमण्यभद्यमा ठभीठर्डि भाभाभातिनेभागरयम् भवय हर्गिर्डल्पयल्डिं । चुरायविये न इं क दे ये प्रवश्नी स गभा उर्वभन्नाहरूरभी उभाक्ष्य

हिर्धितः नउइअक्रिया हैलभारिकः सद्भन्ति । चणीरमधांधमं विभनंबिरणं उर् क्रियण्डियुगाभगभी विश्वपरंश्व मिरभंक भेराभमें देउ से दम नर्

म्यल्पिश्चित्रम्याणः भ्रथ्युड्य महरह परइभाः यम्रविद्यम् मुच्डार्थभकल्य ज ज्राज्यां कार्याः भाग्येगुन्डल्यः नकुञ्च चर्णियां अवस्थाः भ्रम्युड् यभव्यलभाउम् उप्रदेशक्र

2.

गलभानं मधीडुं मन्तिराधु भुउत्र चडा इफ़्राउँ नक्रभी उं यम नंभिति किंग उन्थितिर्गं उन्नकः प्रट जिल्लामाञ्चरः यद्विभाषाधितीय रूल इन्नेठगडिभाउव: भचाज

अपिरदृष्ट डिल्पाभीभग्र हरें डो भ गुरुभवणपेंड उरुरेइ प्रभेड लभे ग्रम्भू का मृग न में यभ कु उन्हें न उमेपविरेष्टमग्रहंगकामनिड्नः भवभन्न द्विष्टश्लभव कु उर्दे उरे उरे उरे िकामीनिग्दइग्रिक्डीक्र

यः हम्भागीतिम्यल उइवमयन गडः यशकिएमडमञ् गर्वच्चरः निर्देश्पीरनकुण्ड बाउभाउवः द्र द्र द्र अष्टर्भा शिएउनिभविद्याल यश्रव हमः हम्हर्क् हमरेड रिलंड हैं है

इक्रियः चगेरिकिश्वक ई किशर इ जिस्मित राष्ट्र अगल इन : ध कि:भागेडलेलहा भूडमेंहग्य उस्लिए भुज्यातिलाओं भीमाने पम्डीमब्भिष्टक्रवग्राम् इः । भठाम्बः । चर्त्रभत्रहम्बर्

730 वि बहुर : हगरा का दार्ग द व चितः भूमभः भेड्डेल्डः राभग्वः उद्धः वक्रज्यः विम्रज्यः चभ रवडलः इश्वकः वित्र इः मउन इच्चरः ठक्यतः भारतः भीय उंग्भीउमहर्ज्या द्र द्र द्र द्र द

विषयभाग्रामा विश्विषाद्वेदिय निद्धांत्रिश्रांत्र इंकंडिक्युकि उं श्रिणनंश्विनंश्विन्त्रमानंश्वि भुश्चित्रम्बन्भा ह्याडीउगाडिर्ड महिंदिरिक्षितिस्थिति । भिश्चिममभिडिहरू ये उद्

उंगज्यस्यक्षित्रः । भरूत्रच नर्गनिभिष्णिश्चन्यद्वेण्द्रण्यञ्च नेनराक्ष्ण उभिद्रेललयउउइ६व युग्ना अप्राचित्र में भाष्युं भुभातिभाद्रिहिचमी भेग्रेश्वण युग् एर्रुगल्य मंभाष्ट्रभण्यक

मचुब्रगन्भुडिडिडणहरभुः । यह भाउँपरिमीयगं वन रसे द्राभिष्टं चप राजभारः मेश्येम्रम्भाज्या यत्रभाक् मेष्टविज्यवानाभी ए विल विह्यः अविगर्वीगभ्यान्याः भद्रभागज्यः महिनीं महिधर्भंद

क्षित्राम्यंत्रवभाविष्ठं । । । क्राइइरभड्भूरभुगभ्यं क्रायुक् प्रहं भिन्नगड्याद्यभावता उद्धानमा भ्रम्भामापक्षभागिन भठयाण्ड्रेक्थण्लेखरं जुलंमण्यवंस गण्यभिमस्हिठत्य दिम्बभा ।। ।।।।

A. .

736 ग्रेडियमिवयं क्या प्रमास भूभाभनुंभाभा एभभर्जमन्त्रीर यमेभिकुभाषायभनभेविययभा भन क्रिंड लिस हमगा हम ने मंच बीर वेड्रेशक्ष्यं ने ब्राम्य । त्री

धन्उंग्येत्रधिकाकिलयस्प्रेगार्भ भः मब्बराजाभिक्षाजीनां व्या रंभगडे यत्रभष्टे । एक्स्ट्रबिस्ट्रिक लश्राह्म चित्र रंग महोत्र प्रमान भा भक्तभनभाष्ठ्य नश्चा वार्ति में में न्या ने कार्य ने विकास कार्य के निकास कार्य के सभारे ने रेस्त ने स्था के ति त्र व से रूप यां नभाकंतीर उउर ठवड्मान विकासकार्वाका ।। । विमस्किति विलगरेशिउभाषे भक्ष या गरिं भूज्भमभुगन्न अद्वलभद्दाल दिशंचप्रदेश क्रीमुर्गल कुर्म

उउनेदरामित्रभिक्षानं काराविस् विभेद्रनेथस्थिति अड्डाइयंक बये ल महाधिम विद्यादिम भहाधि म एडियाम भडेम उपमण्ड रंगन्न रागन्न भरत प्रतिभगन भिउम्र अभिउम्र भरुगण्य उम्र भरु

H.

740 अयवज्ञ यमभञ्च याञ्च वियाञ्च विग्रिय च्डिल्झ भडिल्झ भर् लिस श्रेमेलस्त्रीभेडस उर्ग्निभ ह्य गणांगिक्स एउट्याक्स र बलभन् जाभः भडिभन् जाभ । उच्छिड्यम् अभिज्ञभने च्या भर

रंभभगंड यस्त्रचित्रकेर्येन विम भगंडियर'ने यह देसैवी विमेभगंडिन बर्गेन ठरवेदिभंग यम्भानं मेंबीस विमीभावधीझाववझावेठवड भ भ छेत्रभंत्र निधन्यभाकनमं इति च्रह्मप्रस्थ ग्रहानहुउक्शभण्चभूर

गण्यमभूगइहलाभा गङ्गालिउग हद्यरभाने महार्जभाने भूठं की रा मज्ञ भनुमनिच्च डि छि छ छ पर रागं क्रियामारिकारम्ब्रम् भूभवद्यम भू तक्रिक्स याउन्नम प्रभाउन्नम मीउन्नम राज्यान मुभ भामभ मेक्स्र म्यम्भ **रम्बल्ड्डिंग्ड्ड** कुरियाण्याः के चुया विश्वभारेष्यमे प्रभावत Part 2. M. उक्तियः इभेवण्या दिमकाउन ।। मुदिः॥ ed by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दिस्म ए दिस्म भूसम भू भू भू सम्बा रम्भ अप्रम्भ सम्भ मिडाइम चणी उत्तम क्षत्रम भग्नम मश्री म इत्रभ मक्षम्भ वलक्षम् कल्मम भद्रम्भ " उर्गम्भ उत्रम्भ मग मम वद्यमा द्वारिक्स अपित्रमा ।।

25.200 एएगमा, एष्ट्रमा चिपडंमम भ इड्रेभ क्रभन्ज्ञम भन्नम ,श्रव्रभ भू भाषाम् भिद्रभाष्ट्रम् विसम्मभ भू विभागम बद्धामभ इथुंगम व राष्ट्रम राश्चिम । भड़मभ मरागम

लगम्रम एउट्टम मीइमम्भ भम्म भ वमग्रम हिधम्भे अङ्ग्रम थ्र उद्भा सड्माम ल्पनिश्चमाभा विउंगम विद्यम् इंगम ठिवेष्ट्र मुग भगमा भगमाज्ञ एउम्रभ। म॰

म् भारित्राक्षिः क्यां प्रत्ये हाई है वर्ष दे हैं के क्यां में क्यां में क्यां हैं के क्यां में में क्यां में में में क्यां में क्यां में में क्यां में में क्यां में में में क्य हगन्नभद्दाबल्युंभ हद्युंभ म्यन्नभ वश्चम्य यश्चम्य यश्चम्य यश्चम्य म भच्चम याउच्चम भरिव्रम हउप्रम वि वस्य भदस्य अस्य अस्य भीगद

भ नायम्भ एउंगभ्भाउंगभ यद्भमभ गडरिश्हेंह, मुभयम् लीक उग्रमीय युउंगरी। ग्रह उभः ब्रहः व्या निष्ठं सभा रुपे सभी भगे सभी भगे सभी भा विकास के किया है। विकास के समान कि मुग भभीदिम्भ रुचिम्भेर शिम्म क

748

इंसम्ज्यिकं मम् रियम्भ ग्यम् भ भर्भ मधीत्रमा ध विक्रमा अरुप्रमा अरुउराङ्गम ज्यस्त्रभिक्षित्रम्भ उद्गम श्रम्भ मीय्यम्भ यक्षम्भ भाषाम् भ र लाच्च रीकारच्चेम् द्वामा अवस्मित्र शियदावज्ञम गेयभाज्ञभथभगञ्जभ थन

7-49 वर्षावश्चाम् भारिकामभ निर्व हैं वर्षे ब्रमापलाञ्चमः। नक्यमं भारिक्यमं विन यञ्चम भवउञ्चम शिक्डम्म बन्ध्रयञ्चम । होडे दिरएंगर उपन्ने भीभन्ने स्थान स्थान च निद्यमपूर्म, धिम्नम इभन्नम वीक्यम म क्रमण्यस्म उध्यम् प्रमान्त्रभ उध्यम् ग्राधाम्य अनव प्रश्निम विदेशम विदेश

अ.

750 न्न इडाइमइडिज्ञम वध्रमस्थित्रम रहे क्याम्य मित्रम्य अन्तर्भ त्यम् ४ ८ म र विकर्ष भ गिरेश्वम न्यू मिर्ग्यभ एक्स्म भेभन्न अ ८ डेरी अविव से १ देश में अवस्था मान से विश्व में हों भ एड्रमभ अधारमभ एड्सम बाहम्पडि ग्रभ एड्डिंस भिड्डिंस एड्डिंस बर्ण्सभ

751

(उड्डाभ राउरमभ एड्डाभ इज्रामभ एड्ड म्रभ भगउम्रभ एउम्रभ विज्ञित्वस्त्र ए उद्यम थीवबीयभ उद्युम, उरिक्मभ उर्मित्र होस्र देशक संभाष्त्रभ देश म्म नम् इर्ल्यम अनुमुख किमम्भे ए SAN NOW THAN ITEMS TO SOLVE TO STANK TO

मं •

刘。

्रिभिडिन्नम् रिम्प्डन्नम् उद्भन्नम् रिम् रायबञ्चे मेर्वितास्त्र मित्रवस्त भ विश्वश्राञ्चल उद्ग्रम् भजीमन चुण्य ल्लाम कालक विश्व स्वाभ विश्व च्यम्भ विद्यायाम् वेस्य स्थाप्त भन्द्रजी यञ्चम भाषी द्रेयञ्चम भाषेउञ्चम भारभेउञ्च

म भा श्रीवउन्नम द्रियाण ग्रमम द्रियाण ग्रमम् भःभग्यमर न मभगम् । प्रहासम् रायहानियम देवार् भः किंग्स् केल्लमञ्चर अउइ उज्ले अउइ ज्ञार प्र म के म भ्राम्मम , म्रमण्यम धीविरीमभ कि CC-0. Digitized by Saray Doundation and Delhi and Gangotri

754 विज्ञम विविज्ञम छन्नम मज्ञीरहलय ः किम्ब्रुभ यहानकल्पडे बरंग उम्र भेरम एए विश्व यभ यहानकार्य । गराञ्चम बद्दाञ्चम वर्षा ियविक्रमं दियरी ममं कि हवा द्वामं कि शाह के के एडीमम भड़ित्रम भड़ारीमम दिस् हैं।

म्रम इरहाम्य उद्ग्राम उद्ग्रीयम भ म्रुक्त प्रमुप्तीमम् उद्यागम् बमागम् ,त्रज्ञम वित्रञ्जे र धठन्न विद्यम है। भद्र क्ष्रम उभ्रम्भ उभ्रम दिया सि लिए उमें मम्भ मउभूमभ क्रियम क्रियम प्रकार इर्शिमझमें । । वयण्झभ्रम्म विद्याराधि TEES ? बडा यहाँ ने

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मं-

रस राजाउम्बन्ध भगेने अगन युमंत्र हम् ने नहें हें हो के वर्त सुभितः ल भूरभित्रिशिष्टिय जिस्से या उपित य भान उत्तर बहुर भरन्तर विभरण ,युद्श्चित्रकल्यं भनियश्चित्रकल्यं भूले यह्रीतकत्यं मज्यह्रीतकत्यं मुइंप

स्निक्तां वाग्रस्तिक्तां भारायस्थ नकलां रक्षण्यक्षित्रकलां थानुयक्षित्र कल्पडं छ्रियह्रिवक्लडं दज्ञ भाभन्न भेभम् यदाम् राज्यवाम् भूग्रेगचग म भ्रम्भ इः भ्रम् मुक्त नुभा उपमुभाव द्व दा । वार्ष्थात्रभवरिष्ठभए।।।विश्वन

म.

758 इअमंड विश्वज्ञी विश्व विश्व या या भाभ राः विज्ञभग्रवणचवभगगभित्रविज्ञभ अञ्चिलकामाना । जमकाम् स कालभावकाल भागभाभाभिक्तम मार्थिकाभ गव्यः कल्भाविद्यार्वे सन्भागापुर बाउ । काल्य च इभ्रम् बर्गड मार्च काल्य

वाहिकावचयारि वास्मितिभगवेन इमिडिविच्चाचमाराभिडिक्वययभी ल बार्भेरभुग्दरभूष्टें उत्राहित्या कल्यान राएश्रिप्रभवत्रम्भित्रभवा जमन्दर्भा न अभाग्यान्त्रि भग्भेग्धाविद्यंभभागम् श्रुद्धित्रभणिहिः



भेदंशलभूनभूगः " भयःभविद्यभ् याज्यमीभूभविमिह्निम् भयेणःभय भरीचेरिमभाउभरुभा श्रं स स स स ए दिसभवद्वभे इहरगमा अ। वर्षभाभा नई ११ ११ १। १३ नई के इस्टिन : भर्गर यित्रं यह विमानिभ सद उ हे यह विश्व

भूगितभयभिवं यसयंविष्ठभँउउ। श्राष्ठ उर्वर्गर र सलयभाउभण व उर्वर च उ इं मैडहंमद्भांउध्याउयमीयलंडेउठ भग्मयाद्व ॥ल॥ला केंभ्री भानक्रिशहित रभरें में इंग्इंड इंग्ड्रें इंग्ड्रेंग इंग्ड्रेंग अग्रहकण्या ।।।। विभागनइक्षरि

भेरे.

5.

चर्म इन्ना नंशीती लंब उपाः व उब इपा ब्रह्मावड्स रिक्षाबुद्ध सम्मान् हाजवानम्बद्यभागविष्ट्रस्त्रहरम उ उभेत्रकारीयात्रीभन्ने भगउच्छा यात्मयं अयाभागे इसेमाध्यं अभमें भंग वाउँ येनंग्रह्म समय भन्न इन्वनभी

हबिउउभाषाध्याद्वभड़ी इज्जबन्नसन् कि जना शिर्य एक भिर्वेष स्क्रवन्त्रभ ध्रक्रवन्त्रभग्रम्भयणकि ॥०॥केष्ट्रायि इंगडमंदिभक्रभुक् धण्वड भूग्लन् वं नीनाजे विश्वश्रीष्ट पाउम् उठ उर्वेष्ट

भेक.

भूगदेगणन्भा विज्ञमं विज्ञवं भुउभ अत्राल्यायंद्धभरीडं येगीमंयेगगर्थे श्रुटिक्गितिनेहम्हांमण्डभिभाग ध्ये उन्ध्रमित्र था उन्भाग या नार है मा विहाम् धरांगरीभीमा दान्यदर यः परिष्डियल्डब्रह्मभभूपरिग

क्षेट्रभग्रमभण्ड स्रुक्त इंब इंब उत्वाचित्रभेषा बर्ग भूभाण चित्र राभाइ।उभाउंभेभड़ि भाइरिक्रि म्मारुभाग्याभागादिह उर्द्रसम्भड

かる

रीधे रीमी उंग्रधीत भूगी नंग्रधीते भूगी मी नुभ्द्रक्र सर्ने नार पुत्र जी मेरेन स्वार ठर्जे द प्रउपाय उरीबहर्भाग्मभद्रि भन्गमभ भिग्नीष्ठात्रक्षण मन्निग्रिक्षण्यम् उद् धराभाभी इधरामगाम् क्रेड्भमाडि भित्रवभयक्रवङित्रगमेशुभीतममंदिर

मानुभरागठवां भनुग्रवराग्र्वेवश्र विश्व ॥ ॥ जीव्य अउमित्र वृत्ति विश्व भे र्शिष्ट्रधप्रद्वित भाभाभाष्ट्रमन्थ सकाभनित्रम् इभवश्याक्रण्य अन्तवर भमवर्षेथा भूगमवर्षेवडा भ्यम् विज्ञ वर्षे इसभवज्ञ नजभाभान केंद्र निवच्य हुद्धा के

डिनंद्रियिगीयभाउन्यस्य सम्बद्ध विभित्र सर्वाचित्र मञ्चापिरणाउँ क भ्राजंगी की एश्वरिं इस्रिश्वर उभर्भ भाईराक नैवेन्द्रहराउनगभयंनिहर्मीट डा । । कु इहुउ येग विजीय उपयेगड भुग्नमंभवेश्वयं मना ग्रेतिलेश ग्रहाराभनं माभयभ्रहिषेत्रम् यभने विहाउक प्रयाग्न भन्न स्था भभवराक्षण्यभग्रयाश्चरभग्न प्रवारणिक्रीयप्रवयाँ यमक्भनिक्

....

4.

जारीवरागड यहभयावीउयावे लिडि म म भयमिन प्रमाययाग्याम् अयाः यथः भयित्रभयभेग्भुभयभ्यंभित्र ग्रिभ

यि विग्रंड भूग्जाभन्ताय उरम्भक् भागित्वभाउ शहा अधिभागमञ्भ इ: न न जिमीक यार गाभिति है: भन्न उभारमहर्थ बन्द्रग्रहान् उम्हित् अर्थरमस्याबर्धर करदाः य य निमीम्यादिगन्त्र अष्टा विभूगनी मी किउम्पिम्पिया दिए दिए स्मिक्षेत्रि भत्रश्रीजीकिङ्शुहरूण्डव्यंबद्दरः भवद्गिविगान्त्रगत्ममान्त्री गमगङ्गी ग्रीक उथा र माम गरिवणिया भारत भाभवद्गम्यद्गिव उथा द्वाममभा

भी

बद्भाशान्त्रभाभा चन्नभाभमभंबद्भा जर्रे अवस्रिकारिकारिकार्थित " क्रिक्रक्रक्रक में हिंदिक कि कि कि ग्वास्त्र नग्गर्गड्ड इसलस्यावरी इनक्शनकोः एडर्रमण्डेदिन् विनभद्षा उत्था राष्ट्र

सी.

क्रिक्निम् क्रिक्निम् क्रिक र ।।।।भाभनीकिउप्र हरेभ बद्धरसंबद्धरिकार्ष्ट्रायाम् मेर्डिश केरी किउ भी मेरिक शहरी भ वभवीनठनमुभाष्वीभाष्यज्ञा यहीड्येश नज्ञ से जान भाग्ये।

प्रवाह में इप्यमानिष्ट सुनिशा भयक्रिगडीकुम भडेंबैंडेकुकोडभगञ्च प्रेष्ट्रीर उभाश्चामभाभहरा विकिनीरं इंग्रमभाभाग्यवद्गरभाव गिवेषात्र अश्राहराङ्ग्तीश्चर चप्रमुक्भवैत्र क्षित्र उठ वे विकास

भः

वगक्तां मृष्ट्रभभागगगारयरभगभा क्रायि किरोबैसेबाजारयर स्पर्देश्य अन्यन्तरं भाभानाय । । विस्तु रेम निभिउभेरामारियं अलेड्निभ्र मनेक्शनभाग्रा भी प्रथम इक्न माज्ञ बग्हण है में बीड़े हु सभा उस्र

भाष्याभि । । हार्यियादभाष्ट्राभ यं या या पे य उ अभूग्ले भाष है का हा भश्चिम्।यउगर भूग्णेयागिर्डियम् मुपायउ भेर ले र ब उर भ उर मुखाउ

भी.

निग्रहाडि यह्नयक्षीयं भन्नगर्याडे म्यंगभाम् अग्राम्ययः यक्षीय वुवरभग्ने हा भारतिम् वेत्रभाउ विक चंडे हमयभिक्ट्रे उभागभिक् हिनयभरोमभुवाद उभामन्ध के हमयभद्वेमिनिगण्यहर्देग मधि

रहमेगडे परिगायितमहै । । अंद इनिगमनगडमभानं ने हैं विभाजी न्य भडभीतिम्रकायिकारमञ्जः चूकां कु उच्चा भेग इरे विवास याउ भड्भभुभगाभभडभुभुभ उमभी अंडमुमियु उड़ी में ले

क्षांत्रेय एउमग्रदमभुइन यत्रमीयज्ञेभाजित्रष्टं यात्र्राष्ट्रमच्चे: धक्रहशाउँ विषय उर्वेश भागे भाभे नग्रधक ग्रावसिक्ति ग्रावस्य नड उपनंकाभरण चर्थान्तक भाउन्ने नर्वे ज्ञायक्षित्रहरू इ

च्यान्य या विभवाव उउ उपेका न उ स्उनित्यभभम् सुनेनभमभयहस उन्दियक्रदेश उन्देनमभयाउ र नम्भेग्रं पर हिंगान न मुभवयम् उध निर्देश निर्देश में वित्र निर्देश न उष भन्भग्रभञ्चात्वनक्रभवयम्

मी:

उ एउएवर्ग मच्या या उस भगवंग इस्राध्याष्ट्रम् भ्राप्त भ्राप्त महभवयभ्य उद्दर्भग्रह अकुरुउ वरड्डावन्ड्रीत्रवयण्ड गरीयकः भजितिवास्तितिनेवाज्ञभयभिद्याया भगक्रीनलकरुँद्री यञ्च राज्या

यान्यार्थलं नर्जियमार्थे न बाग्छ भिर्वित् ज्ञीत्रवर्ण ज्ञाल। इथ ह्रनुष्ठ इस्य मित्र स्व नभक्ष विविवचयण्ड उउरश्चमक्श्याग भिष्ठका उद्याद्विष्ट्रीय विम्ह्यादिका याभेद किममंद्रभाउगक्षायण्डे।।

भस्य मित्र विका । भस्य उपित मीयर यद्यार्ड्ड एउ: भुत्र भूर वंश प्रधाउदि रागर्यप्रभाउ भयलभा नेजियाग्रहाम्या यद्यानियं दिविकगार्य ने व ने माथ । । । इति भव्यां स्वयं स्ययं स्वयं स्ययं स्वयं स्ययं स्वयं अमर्ग के महित कि सम्मान स्टेस के स्टिस स करं युमक्षम्हनुएईडि भंगिनिक्य याउँ । अभवन भन्न मन् भन भःभमुगम्भाउ उम्राज्ञभाद्याज्ञ उभाश्य याभानं माय प्रया विषय भुगु अरिरेक्थनं लेकं भरे उर्वे पैव

から

उर उरामि निहमानीयायाउभाउ 8 इ.यामभेरेलभेमणभीह उद्यादेत इवउष्ट चराञ्चाद्व उपम्यू एउदि । उडिमीक्याभाइं नइश्कलभा मा। वज्रकामा ।। वज्र वज्र विभक्त मरन्य

अवज्ञ इसमये द्रभन अञ्च श्री विकास इंड अर्थेल्डन अक्षाक्त अस्रभाग भारतीय भाक्ष्यता यतायहर्य भ भिद्र भभागगर गिरीविडिल्गर भउम्बद्ध द्वम्ब उद्याभाग द्व वामभागत संभेगां भाभभागभाष्ट्र

व्रक्भयभिति मक्यभ उज्यालेश श्विभित्र भभाश्य इति ५ इधिवा य अदम्बिन मुरावियाग्रे हु भिड़ं भेरेड्यमिडि भेर्ड्यमेश्रंक लम ब्रुवल वर्ष भाश्य यहात्रभा ग्रहचैरानेश्वंभागीभन्दा वित्र उ

राष्ट्रभाष्ट्राः । वित्रभुक्षभभूभिन उभेंद्र अभिक्राअध्भवभवः इ रीयेहाउण्याउपास्त्र म्याउपासं वि माउभाष्ट्रभा । भष्रयाद्विष्ठिय मकगई मङ्ग्रेष दिश्वा । नगढिमइ भेव पर भनचे छुड़ भारिस

7

्डवन्गिउसः " एभरवंभष्टयंभध उभुभागम् भागवात्रमः भागभा विचित्र विचित् निभा भ क्रममध्यभाष्ट्रयभाग्रभश ववंद्यम्य विकार विद्या विद्या विकार इ इधिकविक् भर्भभगण हु स्थ उडा

7-93

भक्षे अभिभन्भ विस्तृ है वान्स जानिदिउपमानि बद्दबश्चेणिशभु म्ब विद्विष्ट्यप्रव्यक्ष्याना मुमिकिस्पिक्किकिम्बिस्क्वीच क्रिथिक्जिनिक्नी विस्थुभुश्रम क्रमारं मिला क्रमेर किला मिला कर्म

नः

भा ० एडइबी इयरंभद्धवरम्भ भागिदिउधमर्वः मीद्वःक्रीरद्वज्ञ गांवेच्ध्र विविभागां विविधानाः ल भाउपिउराभेउ चुन्हरू गीर ग्रुभन भाभेडिएका भागीहरूनेहरभानि। विज्ञानभेत्र उपम्याकभीय: "य

ज्ञान के विकास के जिल्ला के निर्मा हिराल्डीयुडः मुभीमङ्केष्ट्राज्याभ भम् विम्युर्धिक विष्णु । विस् भार अधिक के के प्रकार के प्रकार के अधिक स्थाप रग्नाथयं अइयइँ वेच सम्भाष्ट्रिय मुंबिरंबयमविम्भिन्भा । । । नुमं

मारविष्ठ द्वाराय वचित्र वंभारिष्ठ भाउम् चप्रम्योभष्यांभष्डभ भुमज्यिक्षीउम्रज्यः " भूष्ट्रभं मिथ्उर हुम्मन् उतिवन्दर्भेर वर्षेत्रीभाषा वर्षेत्रवर्ष विमज्ञांभभुगर्भ कुग मुक्तादिउ

भा । भक्तरमञ्चारियामाने उनिम बाउभ्र इवनानिक्या उध्नाम् भुउँ इशिक्र र भाग में बन्सी दुउँ भन् हि: " भरेशिय अभ्योतिकाकी उन उत्तर्यमयज्ञर्यक्ति अद्ध्यम्

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

न्

कि.

विविद्या । भाकप्रतंभभ्रमभाकते क्ले भिक्त अग्रेय प्रेय प्रेय प्रेय प्रेय उधारिम ज्ञानिक विदियानिक स्थानिक स्थान इर्लेड्विड्रिय्ड्किट्लिड्ड् धियभाजी भुगमभूभ च हा प्रदार माथनविमेउमद्दः कवीद्रभैठभाउ

भामिक्उयभावित्र ग्राम्थिउ भड़ा । महर्मेरेलभुराग्रुखरेला म्बइंविइडीगेनमभुडो भक्छी मोहंशिर कर्प रागा मुश्च हे जिल्ल युवचाः " च्यूप्रेग्णियः युव अन्वरमभराग्यरेण क्वीयभाग

इएडम्बगद्यंभनबुँउम्विभूर्उ भा । यमवाप्रभी उभागमन हरें भ गर्छभे जन्मज्ञः उड्डागम् बुभ्रभजानियगनयुज्ञानलभ्रवदिन ॥ इस्थाल भाषाया भागा वेश में भित्रभूम् इ उच्चरहिष्युनं भूष्ठ इ

मन्द्रमिकगाकमीडि " प्रश्रम रुप्रभाउभुरुग भनिभिषं विग्रहारि मानि त्रेश्वमन्थ्यम्भाग मीर्योक्भर विवस । यश्मित्र क्रा यमभूभरु विभन्नभूष उमाणि वि

व

इधिउरवर्म । यङ्गायहम्विगाय इमादिउइप्रकार्यद्विगउत्तर यञ्चलगङ्गारु दिउपमयु ५ उ कि स्वराज्य । मयह मर् शिमाद्र सक्मक्रमक्रम्

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भा वाक् उक्के विभग्न प्रध्या की

मिभडमभुरामीः । त्याउपभाइ विष्टुश्रुरुपर्य स्व स्व स्थान्य स्थान गण्यस्थाभगाभुभुन्द्रभुद्रभद्रा निविज्ञभिद्ध । । उथक्यभू व **बार्यम्बार्यक्रम्यार्य्यस्य स्ट्राम्य** मुम्रेमचेशविडाभणियं ने ठी है अपम्थ

नः

804 इधभूष्यभा । दिह्यां प्रीवश्चभङ्गी बभ्रें वह भिन्न जीभन्भाष्ट्र गाउँ। इ द्यान्यस्य स्याप्तान्य स्थान्य भेण्ठगण्य । गण्यभीममनबद्देशिभंड अग्रनेरिह्याले माउवार भाजा ग्रमभिक्ष माजा भिभाषिभाषे भ

यित्रिधयिकिः " मयभमङ्गय नगार **डीयोज्याभागित्रभाग्यम्भज्या**यात्र उ भागि। इहिन्दिसक्य महिन् हर्नीभाउरिक्षेण्डा " नम्सूय उरगा उत्मीव मेलगड्ड वंभग्रड थ शु नभा स्पैत्रभाउभुगरित्रभ

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

写.

इंभडेराभयिर " " स्थम्द्रियाभ विधान भाग मार्था मिलिस र उसे भाभग्रीमीभाविष्टमीचभार प्रवरीविष्ठ ड्यन्थनः ल यांगक्यन्भ मभ्रत्म यांग्रम्मिक्गी नुउभा । भभाउद न्भावीउभाउरक्षम्भिन्धिक

बम । द्वारिक विकास नियम् भाउरभीववीभडीयभा उउर्वयञ्च ४ "दित्रिश्चर द्राधिय इदियगाइभागार्थ ल श्रमाभरंथ विद्यारी सुनिय रडवनभूनाहिः भक्ताभराबाध्यम् भूरेंड श्रीमाभिक्यमेरभंड्रभ ल उर्थंड

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मु •

do.

क्रियेन वर्गे विद्य वर्ग प्रदार कर नश् निः च्यंभेभयञ्चन अभेरे चक्रायं क्रम्प्रभेष्ट्रभ ॥ लाभभुण्चग्रह्म नभागें जिल्ले अस् विश्वासिमा विश्वस ि उमीडेडिम उभाउँ विभिन्न उमी क्रियोग्डवित्रित्र । निवर्त

भियविषयभागिति एभाने हुभन्भा मर्भि यसभगम्बस्थरहर्भात इमिम्ब्रिकामश्राः ल न्याद्वर रिभ्रणयाग्री वीडिभ्रहेम्ड न भ्रमितः उमयुज्धिमी जारे यज्ञ रहि इ.इतिमिइ।रडभा " दमेनकरेशर

वः

महभडिभडिभेडेक्पनिविचिनिनः यभावप्रिकामकिश्वप्रदेश क्रिक्स एमभभाभर्डे " सदक्सार्ड गवडी दिष्ट्रया संबव ये कगव उभुभ चित्रसभा विवयां नियम् इभ मक्भामानी लाल गोनी द्विभाष्यभ किलानिउद्याहकभगी विभगीभागे उ ध्या चक्ष्णंगीनवध्यीनक्रवधीश दशकारभाष्ट्रभन ए उभाषाभ म्मिथ्रहीकाम्म रिया है से सिया है से सिया है से सिया है सिया ह म्राभः उउ:मारुकार अवस्थान वित्र नक्षयत्रभभगगम्भ वित्र

वज्ञभगाज्यवं न जन्मां भी विभ भगववीराभुगिवयम् लिभ्रवभाजा भना ० इयह मिन्द । छ विभन् उ भेरहरेवभेडारकारभाभा विज्ञानेक मिक्रम्मा दिशु स्पेर्क्स्य मन उपभा ल मङ्गिक् क्रिशिउण्परा

निउनिविच्युक्रणयभाषिकाः । ग जरीभिनिदिउ निरुषि उरीयंश ग्रभवश्यकाति । एउँ भित्रवर्ग भशिभाक्तरविदिष्ट स्थम हिरान स ना एकंभिद्धभावक्रणंबिम्ब्रियुष भंभारियामाङ्गः ।।।।। इन्निव

नः

814 यानेदरायस्थाल संभवभागारित्य हउनि उच्चचाइसगरमाउधारित ज्ञाउन्याविरीइक्ड " इप्सम्य यम् अक्डी भिग्रष्टा विकाउ कि उ उभिम्ने इंम्य उन्तम इंदिय अध वित्रमलगमलाभः । यस्थात्रम्य

भंगकुर्निक्यभश्चिमक्रिक्टिले ब रङ्ण्यभविष्टः भग्रहः भरभुदि ३ भिद्रणाउवकः । यद्धन्यद्धभयत् उत्तर भारियमा लिया है अने उद्यक्षित्राह्म द्वार अग्रेय इप्रचेश ष्टःभित्रवरः । भभात्रमञ्जूमक

भन्नेड्यगंदिः इभियत्रद्यार विविद्या । । विद्युप हंगयभंग इन्यम् इंग्रम् नुभा महीभंडे यश्चि हिसुद्य वं भर अंडे भवमें लेडियों में में डिट अव अभर्रः॥लाला छेक्यभंद्वेरभंग

र स्थाय हे ये त Et on मगभुभामा उड्ड क्रम्ममभन स्थित ग्रेय गणा क्रियम्बरःभ वयभःभनीनुगः भभाश्यभन् उः भाग भिन्नः क्याभडी जुडागडाभाग्जेनी व नुभाव भाग्यम्या ।। THE REAL PROPERTY.

उ ज्ञां अवस्था विकार किया है है द्रभग्भाग्भाभ । जुउस्थि हुभादितः भनेकयाभिभर है कि इद्रेश भेथा इस्सम्भागाः उठा ने बेर्स भने दिया जिस । इ.इ.

(अश्मर्यः मंस्राभः सम्राय निभ्रह्जेभचित्रः चम्भज्भाजे दर्डे भट्ये ब्रेडिंड के स्टेडिंड के स् चंडियभडमिडिइएउए: भेरो इ ि अन् १म् ४ भन् । भन्ने १६ ने जे अः । उभयक्षदेशिक्ष्यणभनिदिन्न

इव न ज्ञान्वभन उ: भ्रणभी हुंभ मक्सभगग्र दिवह वदहग् अविभन्नविभा विश्वभू में इरनभव गभे: ~ ङ्रीमक्ड्यू छिरेस्भग **ल्याभावव्रह्यक्रमा**

भ । वजीबाईभरउँ अंडियन भेन्द भन्डविमनकुषाना चड्मेडणभन्व विश्वयुद्धः भगाष्यभञ्जक्षरवध्युर हः ल मन्उभार्यभावन्ति ने क्षेत्रभित्रवर्गवर्गः त्रस्यभाने नमजनसंद्रयानिकविधानुशादिध

五 三 三

TO SERVICE STATE OF THE STATE O क्षित मए मुख्यां व्याप्त भागिमा चुड्ड १ ग्रंभ लकि नंदियाने यानियुविभद्र प्रमीमामा ५० । १५ मिक्य में ते विक्रा ने या नियु वा भन्न प्रमान के विक्रा के विक्र क मार्वक प्रमानाः मुद्रमहामा अस्ति मार्थित स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स Section Trust, Delhi and eGangetri

एक्सिडिभडिभारेयभाग चन्छः च बारभेरण तः अञ्चल्या अञ्चल रुष्या अध्ययम्य निर्मा ब्रह्मम्डममद्वः भ्याः उन्भाषी । मु भाषायः भन्नानिम्डान्नियाउरान व्यक्ति । स्वत्य स्य स्वत्य स्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्

E.

310

(STAPER) वश्च इस नक मा मुद्र भा मुद्र भ मेण एथावडीभर्डिवस्भद्धभाइक िलारिउरवेचन्ना । एथर:संभ ्रिके भगउ ९ यसी सम्मद्धभग्रधकारे : कर् लिन्स्य । अस्ति । अस्

कगिभेरी उम्रायद्वारे विजीयालग री । केंचडंनज्ञिनभित्रमध्य भामिद्रेम्डविज्ञमेर्वः चुड्रीभङ्गव मंछेड विड्र इति इत्योचडभेषि नेक " चड्मेमंभादनभविष्ठ है उद्याभ्डभभं काभा बहुमण्याभ

न्.

H.

इविलड्यिम् उभभावयाभाग्य भन्डे ल चंद्रगञ्जीभद्रभनीवभन्नेभा की उभी भवभाविद्याना उभा प्रवाद्यात्रः भाराज्ञितात्र व्यवस् यडी " भयाभे भवभिष्ठें विविध्या यः भूतिर्धियां माल्ड्न भी ववत

वेभन्यम्यनिम् विम् इस्टिवन् म्भि " चड्मेर्थ्याभमंदम्भिष् चुज्रविकरअभावषिकः यहभयेउन भग्रहालभिउउक्कालउभाधउभ्रमण आ " चंद्रमञ्यण गरं ने भित्रक्षित्र धमावेदर्य चड्डार्यभभम्

N.

न्भ इंड्रम्भ विनी चित्रम " च दंश्विभिडरभश्रु अग्र मंगित्रभू नुःभभन् उउथि। जन्निक मु र अरे वर्ण न न मा भारत क्रिभ । चढ्मवराउडवभ्वशः अभाजाङ्गाङ्गानिवद्या भेगिता।

थराग्राथ विष्ठ उच्चडीभडिताभे वक्ष गणावक किनेमायुउभनि रुहं समञ्ज्ञाणभज्ञ दंगाइ रूभा रज्ञभूरभगिरवीद्वनिम्न उंमैनभंडी वरमंभराभुद्रभा ।। उर्देश

इंबनलभाग्रेअउच्भाग्उंमचेम्रिः दिकामद रवन्द्र गाउँ भवः भ्रमः नव विमुभाने मंद्रभनिष्य ५३ न उ इमिर्ड नगउ भव उ उ य कु उ में ब ख इड्ड्मिश्वः वयन्त्रना भच्य उनःभिउगः अभ्रम्भागा उउपवर्षम्

इंडरकारः मधन्त्रमः ॰ नमसंभ कारिए नेकार यिन दिस्स विभी भी भुग्नेभाष रष्ट्रका । बाहुक्र उ भमभित्रभगद्य विमेयदर्भनिदं उमीअदि रचन्डन' " एउंडाईब इड्डेममीभाउंक एउनगणभाषिरक

N.

उउसे रमज्जन ल सर्वेड रेडिस विविभाउ क्रिक्स सम्बद्ध ना उन्निभंड्य में लेशाभंड उपमि विःभिनः धोषिनीभुउद्यः ॥ ॥ न यभीभग ।। उत्भाग्रवरुं उथभायन जीवरमनीक्यडलेश्रंभा इतं

इसीमराव्यम्बर्धम्बर्धे अर्थे नभः " चयहंभगयान्द्र चभाक् शिहिराउँ चना निवस अञ्चल अञ्चल उक्रमानिय नी हरा ने का या ने या यमंग्रः । विमानिने इतरा राष्ट्र व स्भावताराम्यान्यान्यान्यान्या

五。

A.

चिह्नुसमाम्या एउन्न सम्देनिक विराउउउम्भा । भाउनामिरंभठ भारति स्वाति स्व भनः भद्यविद्यालिवियानाभा निवेश्वर्यम्भन्त्रदेशन्त्रम्भन्

अफ़्युउन्ध्रयभुः आहेयभे गागणप्रभ । यङ्ग्यमिनिस्म उन् निरम्बर्गानिधभाषभद्यः म उभुक्तं उठ्डेभयं भिज्ञभिमभूभ वभरणगण्भ ल महीक्यभरणय उम्ब भुं विमुद्धां भमं वेदम नि भांत्रभद्ध

मस्त्रहरूलज्वरामभाग्यम् ७36 है। पर्णानी भा भेडी करिए हि कारिनीवडीगीनाभग्रह्य गा सहनभः भेज्ञ । अः अ स्टार्व विश्व दुवन म्स्रेनक्रभंभभगारियंडेनिमङ 雪明3 विवयः भनभन्नमित्रकालि

832 मुन्देवभिन्ने क्रिक्टियः लगल किष्म अयं ध्रम्भ अभाग्य भाग्य करे क्रियः भरःभग्वकमीतिव ग्रिके ्राह्म । उपयक्षेत्रविश्वनः च विस्तित उउभ उग्रेस्य भव अ. श्रूरभारतंश्रिष्ठ ल उंदिमञ्

उउम्डभूगम्बूभाउमुग मगिवद्य यंवक्व " मीग्रुउभुगमग्रेभड्ड्र कुशर् विमयुउस्वेदियः चिविषय भभ द्रार्थि भेग उन्यय भागण न चमरमा दश्मिवी भेरे मग्रा । भूरे चयुरंभेच्ये । भीधवंभंभरभुउ:

भुज्यविस्मान्ड: हमीभदिभूक्ष धभा " यड्रभरभुद्रभ्यभय्भंडेण उम्रउ:इहिन्थिउ हर । फिल्रुभार बायभंगे डाम्मारं मन्त्री भणी उ भा महीभंडे बोझ् विश्व यर्ड भग्भंडे भवमस्द्रवीभि " " यश्चउभ्धि

が、

इउ इंभ यश्वउभमं या उभन्य शर्उपविभाउ विश्व भंभाभु वं अवम्युड्बीभि ॥०॥भयेष्ठवांउच िहाउभा जलभु अशिषयी गिम उभा भीरभुज्लीरण्यः पिरह वभागभइडेठइनेभारा । गार्थेड

भविद्याग्य अधिविद्या उपानिहरू याश्रिमश्रभम्डम् भारतिमार्या । यादिनी भुउन्मायन यांभाभाशित मुज्ञामाल रम गम्भरंभयभाभवभागः भ रवडीरिस्मेस्रितिह " भूराभाउस

11.

हम्यग्रमानि विच्न विद्यास्थियं वि मानः वक्तीहबनीमभानेंगासभाग्रभा भेगवयं भूलया अभक्तभ ल यहाः॥ ए दयाञ्चाद दिवयाञ्चाद दावि गुरु द्यात्र में है भट्ट में में में भग्मा ।।।।। विकाश्रियंकाकी मारि

643 केजभिद्ययग्रभगः किभिन्नभभन् मर्शकेशियानभड्यां भ सदाव क्क्मश्विमरुभग्मयउभाः चित्र दिगम्हिमल इभिग्वधनंभड्ड । क विग्नभी इचिगिर कि श्रिम भी है। **८५यः कश्चिमभी देनिध्नक**

A.

श्रिमभीहमिर्न । हिरभीड्विप (देरचरभी श्रुड्यः चिराभी हिल किलग्रिश्मिदिमिद्रला । थाउ (भरूभाभर्गेभ)विद्याभर्माभयर इवन्ध्रमार्वः धन्नाभर्ग्यप्रः म इभ्राउ: भक्ताभक्ता भागह भा

वित्रभक्तः भगभव्य विद्ययक्षभा इ: इवन्ध्रमिका भभभाक्त्यों प्र चम्भूरं उद्यक्त यं वा माः भागेष्ट्रभ ल मभूमभू ल्या स्वापन्य विस्तु न भभश्चकः " श्रुठगक्रभीनक्रि भः विभानक्शश्रुक्वयाभण्डभिर्भि

गहणभाद्रस्थि । गहण्डेभदम उर: भम्भभूभारणवंड चेथवं उंग्रें प्रमार्म्य के निवासी के निवासी किया है। क्रिभगक्रिभन्थयभी छलीव ह रांचे " यचुंभाविल माच्या श्रिया भी जभभी है यह भंग्ड स्न कर्मा

भित्रगिरिंधरावणीजी चर्चच्यु" ज्राभन्भस्य य उन्हें निर्ध्य न्याश्रमध्यारं मीं वर्डभन्ति व पश्चभुग्त एवंयक्षमज्जीका दलिभित्रेबद्धित चगडंठग्रेभीत्र किल्लुलिंडिणिक मध्यभूग

N. 1.

यज्ञीनभीयवभाउत्रभन्नभन्ज उ ज इंग्यमदम् ग न अभग्यग्राग्यि चश्रुद्रज्ञा । भाउम्मर्डिभ्डम इंग्रंगित्रधारितः भ्रभागभीदित भिउगर्भाष्ठभंडभयः।।।।।मि राह्ने " चंभिद्रमु " एडियुए वे

क्षेत्रदर्भेड्या भडेलस अक्नियंभेड्रेथ्युउकि विभाग र इ. ४३ थ्रा के देश गर्श में की हि ति निर्देशनियं इस्भन्ने प्रभानभा रूपेडा क्याच्ठित्रम्भाइतिच्छ

1.

भवाभुयाज नदमङ्गितिज्ञाबा ग्रीहराडिस क्या उत्तर क्या उत्तर विकास इस्मारहारमाभा म्राभार भ्रमभग्र उस्किमकः एउव्यश् एउसे महंब्रह्मभंभित्रं भिभाग विष्ठाउँमध्या उभागभाग्या भि

इड:भूभिभन्नित्रभूयं उन्मार्थ। नि गुउउन्नगादंगम् नुउभरभरा हमेडा ॥ उत्रिज्ञभविज्ञह भंग्य प्रमास एउउक महस्य वर्भ उग्राम्भ यनंतिम इक्षणंगलभीत्रञ्ज अ भरामरभ डिभभ्यमङ्केयं रयाभ

उज्ञानस्पात्री स्डव्यभग्डेउभव भागः भुभगुउँ चत्रयेवसक्भाउगिक भइतिनितिन भिवद्यणभवाभेतिभग विभूत्रभंगयः गांभभुद्रगभगन्थभ उच्चित्रकक्रमा भद्रभुक्रेच्च्यम उठ्डेषराभाः भगराक्रभभशान्छ

उन्जानियाउँ अवश्वरापक उन्नवार गः भज्ञानिम्बद्धि भभगुभष्ठग्रमं रुउर्मभुषेक्उ: भचर्मार्डगभन भवडी ज्वाग्डरभा स्टब्सभएड उ इभेक् भावना जनभा ।। स्पर्ध उतिहेय इनजराज्य एउड्डिउ: भव्रक्रभक्तार

Ţ.

विवयपुरु उपभित्रभागी।।।।भाभायान पुलिरी " मर्रेनभई देशन सद्देन मभ क्भ मचसी एइमिली उराभाव डी यकिली मारिक्डग्डग्डरी मार्ग्यडः अद्यास्त्रीठ रहुनाठ ठीइ ठ र वापरी . मियाह भद्वाह विउश्रह गरहरगः

एभगठ इवन्यदे भरीयरी नर्य री ठठकाली भड़काली महिलका नी भिन्न की : विउलकी : चनल की: भक्तकी: भड़ाइभुग्यू भद्भुत्रभठकारी मेलभूडी इक्रमा री मण्यारी क्रमणी सुरभाष्ट्रीक

रियित्री कालाइी भक्तारी भिडि गर्भ चढड़रीविरोडकारी क्रेंभड़री भवसङ्ग्रिति भराभगग्नश्च भवा उग्रभयी महत्त्री वण्युवीभरभुजी भावक्षत्रभूगण भगभाउमितः भव भी० येरी भवभद्री येरी भवभित्रिय

री भवराम् मेरी भवरामी भग्न एकविक्रविली भिडिश्च भगम् उभी भिष्धिरथारित्री प्रभूनिगत्रक मित्री मन्द्रभन्दर ज्ञेनील भक्षतिभक्ष क्विली लगाइइडिक्विली अण्ड क्रमज्ञान्त्र मुरुम्भः मुश्

CC-0. Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

द.

भ भाषुण भगाउँ भाषामा भ गभगदय भविभयारे: भारत इक्रमीउम्महब्रामामान्य उद्या भी गालगाला विकास सम्मान हुन कर कितिया स्वाचन स्व गर्भ में इस विनियेग :।।।।।। विया विभाग यः भूष

भरुद्रवेद्द्रभ्यगंभर भन्ने बढ्डा भदंमडेणभारिभभग मडेंडे चुभुण भारिभद्भे । उर्देश्वः चणम् उद् उवय्याभभाषागगरुउ भूषावरी भूभगडीदिनित्रीरदन् । उउ प्रमुख वश्री अर्गित्र में स्वास्त्र के स्वास्त के स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र के स

धणीवित्रिभाउरभंद्वेत्त्वीमभइव रभं भिविधाडीरिउउमाम् उपभानः चन इँबियमर्ग्य हैं बेवभडिश्व गिरुष् यश्चिलभवयद्भवराउधम्भा म्रा वंडीभभवडी अलयडी धंरिक्सभा ड विदिशवण्यभी समा निरम् उप

र्यम्ययभभक्षत्रम्भः भाभज्यः विभूगोउग्रउहिभग्रम् दभीवमाउन उम्मान्ययीतं गार्थग्रम् सहरहे य नंभविध्वीनभाषा वर्षे विद्याभारिष्टाः से उपवर्गभार्भः व भगगभगगुरद्दि द्विउन्नाभः याभुन

862 उभुगद्भागभावविज्ञः भुम्पनः उ मुग्क विनग्ग उभग्रे भष्टभमी विवय मद्यापयिभागमगी:द्रभुच्मग चर्यक्र अन्यतिभग्भी वर्षे वर्ष निष्ठा उन्भवभाग विस्था भाग विष्ठा भन्भग्रहिमीभ्रायमभयितिष्ठिः

भक्ष्य भुउउ मार्थे भक्षिति र भक्षाउधम्हभक्षम् । क्या महत्रम्यभवस्य स्थान वड डमचभाभगान्डमम्भूभावड वमः वयभउत्री वम्त्रिव उद्युक्त युक्तीयभव्यभन्त्रभिष्ठे डिधन्थः

यःदिनिरीद्यम्दल मक्साइमि नीम्रयाः बाडम्पाउभ्रभुग्नभ एउंड्यः यज्ञग्रथमायान्या डांभुगव्डः बोडम्हाइभुभुज्ञ भक्षेत्रंदभः यांभगगानीबराणभु गर्द्ध या भी विचेत्र मारिय उपम

भव याम्बनिक्तिवियाः भविष्ट उन्सरणमणीभारय है।।ल।।ला। भड्भुणविष्ठी ॥।।।। चत्रभइंद्रभ न या भारत महनः मिष्टा निर्म हैं भेभक्षभीक निकरण के कुष्ट्री मुठयतिकारणज्ञं भद्राभिगणः र

मिथ्रभङ्गः भीयउन्भीउ सामाम 866 विमवज्ञामा अग्राज्ञामा । विमान नेनक्य भारीभयेजभायं मेनिलय भग्मनं भन्नभ्रम्भुमः ज्ञाप विक्सुन्रभग्रम् इयाग्रपंभागः

राभ्येण अइषात्रिलयञ्जू रचित्र ॥ उरमी उरव ने अभुर गरें ने भिन्न भिन्न क्रवः भभद्गिति उप्पाध्यत् चविद्रं इद्राउँ उउए ग्रेमिकविद्याभ एडियराभागिकविश्वविड छ्छ

प्रवह्मां यममी हा लभडभाय स्विमंडमण मिड्डिंग एभएंडिं नग्रम्येकविष्ट्वित उपर्रेगक्षभ एड इसे उधे यह ब इस कि से उस क्रयाद्वे प्रतिक्त्रभम् दि लाला कि इम्द्रवैज्ञ भ एभ ये व उरम उर

मंद्रम दिरण्याष्ट्रिडिचका च क्षिगड्रमारं स्काभयजार्देश तः भूरहङ्गरायगिति उभाभा स्वरः भ्रह्मकार्येत्र भ्रव् सुन्वमं उभाक्त प्राप्ति क्रम्

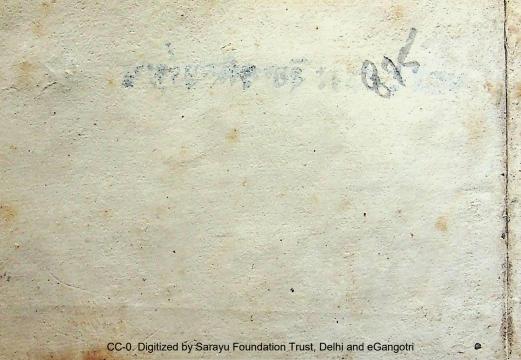
型.

मीन्भन्र लड्डया धभाष्ट्य भिडियेशकाउँ : भिज्ञा इक्यार्थ बार्में यबाद्यालड बेंगेमें ठवंडिये विजेरिंड: भिक्कियम्डैराष्ट्रं एउँ दि इत्याद्यात्रभती जीका भूगितिकी किउएउँ:भम्पिएंडेडि भेवइरेमी

किंडिंठविंड भेरहरमेराइंभजींडे भगंभी किंडेठवडि चैवैभाभःभव इरः अवहरमेरण्डा ने भारत गरी जी कें उठवं डिइंग्समभाभः भव इरः भवद्रगर्येशङ्गत्रभती । भक्त भीकींउठवाउभञ्च्या संबद्धाः

भेषद्भाः विकास नेभूती व उभू इउन्भे अभमीय नश्चियभूभय ने भद्दभी उ क्षाम् उत्तर द्वेश्कलभूत्रेय रण्डरण्डश्भिनंदिमश्र भेष्ट्रध युग्डेडबुउँद्रुडया द्याभडेडभ मशुभीहमरातः भक्त्य। उभिवर

भग्रहें भग्रहार विग्निक्षियं क्ष्रिप



6×6

रिकार में मह

क्रिक्रीहरू

म्रीक अपन

मीगांग र





